Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Samdarya prabha

सौन्दर्य-प्रभा

S

(रहस्यपूर्ण उपन्यास)

लेखक—

कमलाप्रसाद राय शर्मा, बी० ए०

प्रकाशक—

हिन्दी-पुस्तकालय Hindi prakash

सोराकुँआ, बनारस

Benaras

1

प्रथम बार } सन् १९४० ई० { मूल्य १।), सजिल्द १॥)

1940

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Samdarya prabha

सौन्दर्य-प्रभा

S

(रहस्यपूर्ण उपन्यास)

लेखक—

कमलाप्रसाद राय शर्मा, बी० ए०

प्रकाशक—

हिन्दी-पुस्तकालय Hindi prakash

सोराकुँआ, बनारस

Benaras

प्रथम बार } सन् १९४० ई० { मूल्य १॥), सजिल्द १॥।)

1940

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Acc: 12242
Rs 1-12-0

प्रकाशक
शंकरसिंह
अध्यक्ष, हिन्दी पुस्तकालय
सोराकुआँ, बनारस

मुद्रक
ना० रा० सोमण
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस
जतनबड़, बनारस

S... ...p Singh
Library,
Srinagar.

(९३—१९४०)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका

जगत् स्रष्टा की सृष्टि लीला में अच्छाई-बुराई दोनों का मिश्रण ही विचित्रता है। सहज बुद्धि के मानव इस सृष्टि वैचित्र्य को समझ नहीं सकते। विषमता, पार्थक्य, ऊँच नीच, उत्तम अधम, दिन रात, सुख दुःख, जन्म मरण, धनवान गरीब, सज्जन दुर्जन आदि कहाँ तक कहा जाय सब भेदभाव अनन्त काल से विद्यमान हैं।

मानव चरित्र का विशद रूपसे चित्रण करना ही कुशल उपन्यास लेखक की विशेषता है। जो लोग समझते हैं कि उपन्यासों में केवल उत्तम चरित्रों का ही समावेश हो उनका कथन कहाँ तक सच है, इसका निर्णय विज्ञ पाठक ही कर सकते हैं। यदि अन्धकार न रहे तो प्रकाश का क्या मूल्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रह जायगा ? दुर्जन न रहे तो सज्जनों की सज्जनता का कहाँ तक आदर हो सकेगा ?

पाप और पुण्य ये दो शब्द संसार के सभी धर्ममत के समर्थक ग्रन्थों में मिलते हैं। परन्तु पाप से डरना या पाप को ही घृणित समझना विज्ञता है। पापियों पर दया का भाव रख कर उनके सुधार का यत्न करना चाहिये। यद्यपि पाप का अस्वित्व अल्पाधिक परिमाण में सर्वदा रहेगा। विधाता के इस नियम का लङ्घन नहीं किया जा सकता। स्वामी विवेकानन्द जी कहा करते थे कि पाप को घृणा करो, पापियों को नहीं। इस उपदेश का महत्व हर एक व्यक्ति को समझ लेना चाहिये।

इन्हीं सब विचारोंका हृदयङ्गम करके मैंने इस उपन्यास को लिखा है। आशा है साहित्य-प्रेमियों या मनोविनोद चाहने वालों को इसमें कुछ न कुछ आनन्द अवश्य होगा। सबसे मुख्य बात इस पुस्तक में यह दिखलायी गयी है कि घोर दुराचारी भी किसी समय परम सदाचारी हो सकता है। वाल्मीकि का बाल्यजीवन कैसा निन्दनीय था, यह बात शिक्षित समाज को विदित है। इस एक ही प्राचीन उदाहरण से मेरे इस प्रकार के चरित्रचित्रण की स्वाभाविकता उपलब्ध हो सकती है।

दूसरी बात इस पुस्तक में यह ध्यान देने योग्य है कि पात्रों में मुसलमान भी विद्यमान हैं और उनके चरित्र इसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशेष अङ्ग हैं। इस विकट समय में साम्प्रदायिक एकता की जितनी आवश्यकता है उतनी किसी समय न थी। भारत के मुसलमान भारतीय हैं और सदियों से हिन्दुओं के साथ रहते रहते उनके हृदय भी हिन्दुओं के हृदय के निकटतर हो गये हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के प्रेम से भारत का उद्धार शीघ्र सम्भव हो सकेगा। राजनीति और धर्ममत का मिश्रण न होना चाहिये। विभिन्न मतों के माननेवाले एक साथ प्रेमपूर्वक रहकर राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं।

इस पुस्तक का आधार भारतका मध्ययुगीय इतिहास है। खिलजी वंश के नरपतियों के राजत्वकाल के सामाजिक चित्र की कुछ झलक पाठकों को इसमें अवश्य मिलेगी। मुझे आशा है कि पाठकों को इसमें मनोविनोद की सामग्री के साथ साहित्यिक रस भी जहाँ तहाँ जरूर मिलेगा।

काशी
१४–३–३९

कमलाप्रसाद राय शर्मा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सौन्दर्य-प्रभा

See page 130
130

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहला परिच्छेद

तीर्थ-यात्री

खीष्टीय चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में दुर्दान्त पराक्रान्त अलाउद्दीन खिलजी अपने चचा तथा ससुर अपरिमित स्नेहपरायण जलालउद्दीन खिलजी की निर्मम हत्या के बाद दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ था। उसके राजत्वकाल के पहले ही प्रायः समस्त आर्यावर्त में यवनों का प्रबल प्रतापादित्य चमकने लगा था। उस समय भारत में ऐश्वर्य की कमी न थी। यहाँ की प्रभूत धनराशि बार-बार विदेशी आततायियों द्वारा लुण्ठित होकर विदेशों में भेजी जाने पर भी यह देश कुबेर का कोषागार था। उन दिनों रेल-पथ का निर्माण न होने के कारण और स्टीमर, जहाज आदि आधुनिक जलयानों के न होने से, देशी व्यापार की दशा सुव्यवस्थित या सन्तोषजनक न थी। राज्यव्यवस्था ठीक न होने के कारण जहाँ-तहाँ डाकुओं के दल घूमा करते थे। यात्रियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और भ्रमणशील धनवान व्यापारियों को लूटना ही उनकी जीविका का अवलम्ब था। कहा जाता है कि दुर्बल चित्त सम्राट् जलाल-उद्दीन अपराधियों बदमाशों और डाकुओं को कठोर दण्ड न देकर बंगाल की राजधानी गौड़ या लक्ष्मणावती में निर्वासित कर देता था। ऐसे डाकू अपने परम्परागत स्वभाव के कारण सर्वत्र विचरण करते हुए उपद्रव मचाते रहते थे। धीरे-धीरे बंगाल में इनकी संख्या अत्यन्त बढ़ गयी। ये खास करके गंगा और आर्यावर्त की अन्य प्रसिद्ध नदियों में घूम-घूम कर व्यापारियों या तीर्थ-यात्रियों का सर्वस्व अपहरण कर लेते थे।

ऐसे ही समय में यात्रियों से भरी एक नाव गंगा नदी की विमलधारा से होकर पश्चिम की तरफ जा रही थी। नाव छायी हुई थी; बहुत बड़ी न होने पर छोटी भी नहीं कही जा सकती। सोने, खाने, पीने और सब प्रकार के जरूरी सामान नाव में भरे पड़े थे। यात्रियों में एक वृद्ध, एक बाईस वर्ष का युवक और एक चतुर्दश वर्षीया परम सुन्दरी बालिका थी। इनके अतिरिक्त तीन मल्लाह, चार अन्य तीर्थ-यात्री और दो नवयुवक भी थे। ये लोग किसी व्यापार या कारोबार के लिए नहीं बल्कि तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे थे।

वसन्त ऋतु की रात्रि में स्वच्छ चाँदनी खिली हुई थी। एक पहर रात बीत चली थी। हवा के प्रबल झकोरे से तटवर्ती बालुका कण उड़ते हुए नजर आ रहे थे। सभी आरोही चुप थे। मल्लाह बड़ी सावधानी से नाव चला रहे थे।

नाव धीरे-धीरे चली जा रही थी। सहसा वृद्ध ने कहा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहला परिच्छेद

"देखो बच्चा, अब तो बाबा विश्वनाथजी की कृपा से हमारा रास्ता निर्विघ्न कट गया। आशा है हम सब सकुशल काशी पहुँच जायँगे। आज से पचीस वर्ष पहले जब तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ था, मैंने विश्वेश्वर के दर्शन की मनौती की थी, पर अब तक मौका नहीं मिला। तुम्हारी इस बहिन का जन्म होने पर गत चौदहवें वर्ष भी मैंने तीर्थ यात्रा की पूरी तैयारी कर रखी थी, परन्तु ज्योतिषीजी ने इसकी जन्म कुण्डली देखकर कुछ ऐसी बातें बतलायीं कि मुझे रुक जाना पड़ा। इसका कारण यह उपस्थित हुआ कि तुम्हारी माताजी बीमार पड़ गयीं। बहुत खर्च करने पर चार महीने की लगातार सेवा सुश्रूषा से उस बार उनके प्राण बचे, परन्तु गत वर्ष के घातक रोग से उनकी प्राण रक्षा न हो सकी।

पिताजी की ये बातें सुनकर पुत्र ने कहा, "पिताजी, उस ज्योतिषी ने बहिन की कुण्डली देखकर कौन सी ऐसी बातें बतलायीं, जिनसे आपको यात्रा से रुक जाना पड़ा ?"

पिता—बेटा, उन बातों का मैं कहाँतक वर्णन करूँ। तुम जानते हो मुझे ज्योतिष का पूरा ज्ञान नहीं है। साधारण रीति से कुछ-कुछ सीख लिया है। ज्योतिषीजी ने बतलाया कि कुण्डली में ग्रहों के योग अच्छे नहीं हैं, तेरह वर्ष की अवस्था तक इस कन्या पर शारीरिक कष्ट पड़ते रहेंगे, जल द्वारा विपत्ति आने की पूरी आशङ्का है। नदी या अन्य जलाशयों में स्नान करते समय विशेष सावधानी की जरूरत है। ग्रहों की क्रूर दृष्टि से बचने के लिए शास्त्रीय निर्देशानुसार उचित उपचार होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र—पिताजी, मुझे ज्योतिष की ऐसी बातें ठीक नहीं जँचतीं। मैंने देखा है कि ज्योतिषियों के कहे वचन अक्सर ठीक नहीं होते। इसलिये उनके कथन से डरकर किसी काम में रुकावट डालना या ग्रहादि शान्ति के नाम पर व्यर्थ धन नष्ट करना मूर्खता है।

पिता—बेटा, ऐसा कहना उचित नहीं है। किसी बात में विश्वास न रहने पर भी झटपट अपनी राय प्रकट करना ठीक नहीं। संसार में क्या ठीक है क्या ठीक नहीं है इसका निर्णय करना कठिन काम है। ज्योतिष शास्त्र झूठ नहीं है। सभी काम शुभमुहूर्त में आरम्भ किये जाने से सुफलदायक होते हैं। ज्योतिष के बिना हमारा एक भी काम सम्पन्न नहीं होता। जन्म से लेकर मरण तक के हमारे सब कार्य ज्योतिष की मदद से किये जाते हैं।

पुत्र—मेरा मतलब आपने नहीं समझा। गणितज्योतिष का मैं विरोध नहीं करता। फलितद्वारा भाग्यगणना करने में मुझे विश्वास नहीं है। मैं समझता हूँ कि किसी मनुष्य के भाग्य में कब क्या होनेवाला है यह कोई भी नहीं बतला सकता। कहा है "स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।"

पिता—बच्चा, तुम्हारी वक्तृता सुनकर मुझे हर्ष और विषाद दोनों हो रहा है। हर्ष है तुम्हारी तर्क शक्ति पर और दुःख है सनातन प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाने पर।

पुत्र—यदि मेरे तर्क से आपको किसी तरह का कष्ट मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ हो तो क्षमा कीजिये। पर कृपया यह बतलाइये कि ज्योतिषी की किन बातों पर आपने यात्रा स्थगित की थी ?

पिता—उन्होंने कहा था कि इस कन्या की कुण्डली में ऐसे क्रूर ग्रहों की दृष्टि है जिससे इसको चौदहवें वर्ष के लगभग तक जल में डूबने की पूर्ण आशङ्का रहेगी। यदि ग्रहों की शान्ति का प्रबन्ध हो जायगा तो बहुत कुछ शान्ति मिल सकती है, नहीं तो घोर अनिष्ट की सम्भावना बढ़ जायगी। ये बातें सुनकर मैं भयभीत होकर उस बार की यात्रा रोक दी और अनुष्ठान की तैयारी करने लगा।

पुत्र—अनुष्ठान कैसे हुआ और उसमें क्या खर्च पड़ा ?

पिता—काशी से बड़े बड़े चार कर्मकाण्डी बुलाये गये थे। उन्होंने बहुत सोच समझकर अनुष्ठान किया। बेटा उस समय तुम अपने ननिहाल में थे।

पुत्र—हाँ पिताजी, मैं बचपन से ही ननिहाल में रहता था। गतवर्ष जब आपने माता की बीमारी की खबर भेजी तो मैं मामा के साथ आपके पास आया। मामी मुझे आने देना नहीं चाहती थीं, पर निरुपाय होकर उन्होंने मुझे भेजा। पिताजी, आपने यह न बतलाया कि कर्मकाण्डियों को क्या दक्षिणा दी गयी और क्या खर्च पड़ा ?

पिता—कर्मकाण्डियों को कुल डेढ़ सौ रुपये दिये गये। सामग्री जुटाने और अन्य कामों में और पचास जोड़ लो याने कुल दो सौ खर्च समझ लो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र—क्या ग्रहशान्ति के लिए ऐसे अनुष्ठान करने से भाग्य में परिवर्तन हो सकता है ?

पिता—बेटा, इतनी बातें मुझे मालूम नहीं कि मैं इस सम्बन्ध में तुमको अच्छी तरह समझा सकूँ। परम्परा से जो सनातन प्रथाएँ चली आयी हैं उनको मानकर चलना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। बेटा, रात आधी बीत चली, मुझे अब नींद आ रही है, तुम आराम करो।

पुत्र को यथा शक्ति समझाकर वृद्ध तो बिस्तर पर लेट गये पर युवक को नींद नहीं आयी। उसका चित्त किसी अज्ञात विपत्ति की आशङ्का से विचलित हो रहा था। नाव धीरे धीरे चली जा रही थी। चारो तरफ निस्तब्धता थी। आकाश मण्डल में वर्षाकाल की तरह घटाएँ छा गयीं। वसन्त ऋतु में ऐसा दृश्य उसके चित्त को और भी खिन्न बनाने में सहायक हुआ। रात का तीसरा पहर बीत चला। ब्राह्म मुहूर्त में उठने की आदत के कारण वृद्ध निद्रा से उठकर बैठ गये और मल्लाहों से नाव किनारे लगाने के लिये कहा। नाव का लङ्गर गिराकर मल्लाह निश्चिन्त हुए। वे सभी रामनाम जपने लगे। वृद्ध ने उसी समय प्रातःकृत्यादि सम्पन्न करके सन्ध्यावन्दन किया। जब वे शान्त भाव से आसन पर बैठे तो युवक ने पूछा, पिताजी, यह कौन स्थान है। हमलोग अब किस प्रान्त से गुजर रहे हैं।

पिता—बेटा, यहाँ से तीन कोस और आगे बढ़ने पर प्राचीन पाटली पुत्र का खंडहर दिखलाई पड़ेगा। अब हमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाव मगध प्रान्त से हो कर चल रही है। किसी समय यह प्रान्त भारत का गौरव था। महाभारत में मगधराज के वीरत्व का वर्णन तुम पढ़ चुके हो। नन्द, मौर्य तथा गुप्तवंशीय नरपतियों के राजत्वकाल में यह प्रान्त धन-धान्य, विद्या-बुद्धि, कलाकौशल, वाणिज्यव्यवसाय आदि का केन्द्र था। पर, काल की गति विचित्र है। समय की कुटिल दृष्टि से इसका प्राचीन गौरव अब नहीं रहा। इसकी वर्तमान दीनावस्था देखकर मुझे तरस आ रही है।

उपर्युक्त वार्तालाप के बाद वृद्ध नाव से उतरकर नदी तट पर टहलने लगे और युवक ध्यानमग्न की भाँति कुछ सोचते रह गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा परिच्छेद

वियोग की ज्वाला

आषाढ़ का महीना है। आकाश घने मेघों से आच्छन्न हो गया है। सन्ध्या के आगमन और चारों ओर काली घटाओं के घिर आने से घोर अन्धकार फैल गया है। अंधेरी भयावनी रात में एक पचीस वर्षीय युवक एकान्त कमरे में बैठकर कुछ सोच रहा है। चिन्ता की ज्वाला से उसका मुख विवर्ण हो गया है। उसको देखने से मालूम होता है कि वह किसी घोर चिन्ता से व्याकुल है। पड़ोस के सभी मकान निस्तब्ध हैं। कहीं किसी के जागने का चिह्न नहीं दिखलाई पड़ता। युवक को बार-बार कोशिश करने पर भी निद्रा लगने में सफलता नहीं मिल रही है।

बैठते, उठते, कमरे में टहलते और लेटते युवक ने दो पहर रात बिता दी। अन्त में बादलों की गरगराहट और बिजली की चमकाहट से वह इतना घबरा गया कि उन्मत्त की भाँति विरह के गीत गाने लगा। इससे भी जब उसके चित्त को शान्ति न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिली तो अपने बिस्तर पर लेटकर सोचने लगा। बड़ी देर तक सोचते-सोचते उसे एक उपाय दिखलाई पड़ा। दो एक दिनों में तीर्थ की यात्रा करनेवाला एक दल पश्चिम को रवाना होने वाला था। उसके साथ मुकुन्ददास को केतकी का समाचार लाने के लिए काशी भेजना उचित होगा—यह समझ कर वह तुरत मुकुन्द दास को जगाने गया। रात के समय अपने शयनगृह में दुर्गाचरण को देख कर मुकुन्द बहुत घबड़ाया।

मुकुन्द को घबड़ाते देख कर दुर्गाचरण ने नम्रभाव से कहा—"देखो मुकुन्द, इस समय मेरी परीक्षा निकट है, इस-लिए तुम एक जरूरी काम में मेरी सहायता करो। तुम्हारे लिये जो कुछ खर्च पड़ेगा उसका भार मेरे ऊपर है।

मुकुन्द—मैं आपका दास हूँ। इसमें अनुरोध की बात क्या है ?

दुर्गाचरण—अनुरोध की बात जरूर है। तुमको यहाँ से दूर जाकर मेरा काम करना पड़ेगा। मैं स्वयं चला जाता, परन्तु क्या करूँ गुरुजी आज्ञा न देंगे।

मुकुन्द—बतलाइये न क्या करना पड़ेगा ? आपकी आज्ञा मुझे सहर्ष स्वीकार है। परन्तु यहाँ भी तो मेरे न रहने से आपको कष्ट होगा।

दुर्गाचरण—मैं सब कष्ट सह लूँगा।

मुकुन्द—कहिये क्या आज्ञा है ?

दुर्गाचरण—तुमने सुना होगा कि कल या परसों तक यहाँ से नवद्वीप के कुछ तीर्थयात्रियों का गरोह पश्चिम के लिये रवाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होनेवाला है। तुम मेरा एक पत्र लेकर उनके साथ जाओ। काशी में मेरे एक मित्र रहते हैं। उनको यह पत्र देकर जितना शीघ्र हो सके उत्तर के साथ लौट आओ।

मुकुन्द—आज्ञा शीरोधार्य है। कल पत्र लिख कर मुझे दे दीजियेगा। अभी रात बाकी है, जाइये सोरहिये। ज्यादा जागने से स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है।

फिर मुकुन्द अपने कमरे में जाकर सो गया और दुर्गाचरण भी अपने कमरे में जाकर लेट रहे। चित्त में कुछ शान्ति आने के कारण उनको झपकियाँ आने लगीं और कुछ देर के बाद गहरी नींद में निमग्न होकर करवटें लेने लगे।

सबेरे नींद टूटते ही युवक ने प्रातःकृत्यादि सम्पन्न करने के बाद निरंजन के नाम एक पत्र लिखा। पत्र समाप्त करके उसने उसे आद्योपान्त पढ़ा जो इस प्रकार था—

प्रिय निरंजन,

नमस्कार। आज छः महीने से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। रह-रह कर तुम्हारी स्मृति आनेपर चित्त घबड़ा उठता है। इस समय मैं बहुत ही सङ्कट में हूँ। यदि तुम मेरे पास रहते तो मुझे अवश्य सान्त्वना देते। यहाँ कोई ऐसा नहीं है जिससे मैं अपने हृदय की बात कह सकूँ। मैं संसार में एक तुम्हारे सिवा और किसीसे अपनी गुप्त बातें नहीं बतला सकता। इसलिये अपना हाल संक्षेप में लिख रहा हूँ। आशा है तुम सब समझ कर इसके प्रतिकार का यत्न करोगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा परिच्छेद

गत वसन्त ऋतु में पण्डित दीनबन्धु तर्कभूषण अपने पुत्र जनार्दन और कन्या केतकी को साथ लेकर काशी के लिए रवाना हुए। आज तक उन लोगों का कुछ भी समाचार नहीं मिला। इससे मैं अत्यन्त चिन्तित हूँ। मैंने पण्डित जी से काशी पहुँचते ही समाचार भेजने का अनुरोध किया था। वहाँ से बराबर लोग आते जाते रहते हैं। तब से कई व्यक्ति काशी से लौटे पर किसी से भी कोई समाचार नहीं मिला। केतकी की स्मृति मेरे मनमन्दिर से क्षणमात्र के लिये भी नहीं हटती। जब-जब उसकी याद आती है तब-तब मैं विक्षिप्त-सा हो जाता हूँ। तुम जानते होगे कि उसके मेरे साथ विवाह की बातचीत गत वर्ष ही पक्की हो चुकी थी, परन्तु पण्डितजी ने कहा कि शास्त्रीय मर्यादा लङ्घन करके भी वे दो वर्ष और विवाह न करेंगे। उनका कहना है कि सोलह वर्ष के पहले कन्या का विवाह होना ठीक नहीं है। जो लोग आठ दस वर्ष की कन्या के विवाहका समर्थन करते हैं वे शास्त्र का मर्म नहीं समझते इत्यादि। कहने का मतलब यह है कि गतवर्ष मेरा विवाह रुक गया। मेरे पिताजी भी कहते हैं कि इस वर्ष को परीक्षा समाप्त होने पर विवाह करना ठीक होगा। केतकी को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह बहुत ही सुशीला और गुणवती लड़की है। मैं उसको हृदयसे प्यार करता हूँ। यदि कभी हम दोनों के मिलन में बाधा पड़ी तो मेरा जीवित रहना असम्भव हो जायगा। मैं अपने भृत्य को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। तुरत ही उन लोगों का पता लगा कर पत्रोत्तर भेजना। जब तक यह लौट कर न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवेगा तब तक मैं तृषित चातक की तरह व्याकुल रहूँगा। विशेष क्या लिखूँ।

तुम्हारा सुहृद
दुर्गाचरण।

दूसरे दिन सबेरे नवद्वीप से मथुरा के लिए तीर्थ यात्रियों का दल रवाना हुआ। मुकुन्द भी पत्र लेकर उक्त दल में शामिल हो गया। जब मुकुन्द दल के साथ घर से निकला तो दुर्गाचरण की उद्विग्नता कुछ अंशों में घट गयी। वे थोड़ी देर तक चुप चाप बैठे रहे, फिर व्याकरण की पुस्तक का पन्ना इधर उधर उलटने लगे। परीक्षा का समय निकट होने पर भी उनका चित्त एकाग्र न हो सका। पाठकों को समझ लेना चाहिये कि उस समय आजकल की तरह परीक्षाएँ न होती थीं। गुरुजी जिसको उपयुक्त समझते थे उसको इच्छानुसार आगे की शिक्षा में बढ़ा देते थे। गुरुजी को सन्तुष्ट करना आवश्यकीय था। दुर्गाचरण बार-बार चित्त एकाग्र करने की चेष्टा करते रहे पर कुछ भी फल न हुआ।

अव्यवस्थित कार्य-क्रम में ही उस दिन का सारा समय नष्ट हो गया। क्रमशः सन्ध्या का अन्धकार फैलने लगा। शौच सन्ध्या-वन्दनादि से निवृत्त होकर दुर्गाचरण गुरुजी के घर जाने के विचार से बाहरी बरामदे में गये। बरामदे में पैर रखते ही उन्होंने देखा कि जटाजूटधारी एक साधु कम्बल बिछाकर चुप-चाप बैठा हुआ रामनाम का जाप कर रहा है। दुर्गाचरण ने साधु से पूछा—"आप कौन हैं, कहाँ से किस मतलब से आये हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साधु—बच्चा, मेरा नाम राघवदास है। मैं अयोध्या से आ रहा हूँ और कामक्षादेवी के दर्शन के लिये कामरूप देश को जाना चाहता हूँ। आज रात भर यहीं विश्राम करूँगा। सवेरे फिर यात्रा शुरू होगी।

दुर्गा०—मेरा यह अहोभाग्य है कि आपके दर्शन हुए। साधुओं के दर्शन सदा नहीं होते। मुझे विश्वास है कि आप कोई सिद्ध पुरुष हैं। मैं बहुत-सी बातें पूछना चाहता हूँ। आशा है आप उन सबका यथोचित उत्तर देकर कृतार्थ करेंगे।

साधु—हाँ बच्चा, तुम जो चाहो पूछ सकते हो। परन्तु मैं न तो कोई सिद्ध पुरुष हूँ न ज्योतिषी ही हूँ।

दुर्गा०—आप जो कुछ ही क्यों न हो जब तक मैं आप से हृदय खोल कर बातचीत न करूँगा तब तक मुझे शान्ति न मिलेगी। कई कारणों से इन दिनों मेरा चित्त अत्यन्त उद्विग्न हो गया है। मैं किसी साधु सन्त से मिलने की इच्छा कर रहा था। ईश्वर की कृपा से मेरी यह इच्छा पूरी हो गयी।

साधु—सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है। उसकी इच्छा के बिना पेड़ की पत्ती भी नहीं हिल सकती। अपने को उसी को सर्वभाव से समर्पण करने पर ही शान्ति मिल सकती है—"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशोऽर्जुन तिष्ठति, भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया। तमेवशरणं गच्छसर्वभावेन भारत, तत् 'प्रसादात्' परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसिशाश्वतम्।" (१६ अ०) गीता।

दुर्गा०—अच्छा, इस समय मैं एक अपने खास जरूरी काम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बाहर जा रहा हूँ। दस-ग्यारह बजे तक लौटूँगा। फिर कल आप से बातचीत होगी। आशा है आप यहाँ कम से कम एक हफ्ता तो जरूर रहियेगा।

साधु—जाओ बच्चा, जाओ अपना काम करो, उदास मत रहो, सर्वदा प्रसन्न रहो—नित्यं च समचित्तत्वं निष्टा निष्टोऽप पत्तिषु।

दुर्गाचरण झटपट बरामदे से बाहर निकल पड़े। नदिया के एक छोर पर दुर्गाचरण रहते थे और दूसरे छोर पर उनके गुरुजी। गुरुजी का नाम पं० भोलानाथ काव्य वेदान्त रत्न था। दुर्गाचरण गुरुजी के घर जा रहे थे पर उनका मन केतकी की चिन्ता में निमग्न था। बार-बार मन को समझाने पर भी उनकी समझ में यह बात नहीं आती थी कि हर हालत में कैसे कोई व्यक्ति समभाव रह सकता है। भगवान् ने अर्जुन को जो उपदेश दिये थे क्या वे सबके लिये उपयुक्त हो सकते हैं। तरह-तरह की जल्पनाएँ करते-करते दुर्गाचरण चले जाते थे, आखिर वे गुरुजी के दरवाजे पर पहुँचे और बैठकखाने में जाकर उनको प्रणाम करके बैठ गये। गुरुजी ने पूछा—इतनी देर क्यों हुई ? आज-कल तुम इतने उदास क्यों रहते हो ? तुमको किस बात की चिन्ता है ?

दुर्गाचरण—गुरुजी आजकल मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

गुरु—स्वास्थ्य ठीक न रहने से चिकित्सा करायी जाती है। क्या किसीसे औषधि मिली है ?

दुर्गा०—नहीं गुरुजी, दो चार दिनों में मैं अच्छा हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाऊँगा। हर रोग में औषधि का प्रयोग करना उचित नहीं है।

गुरु—तुमको मालूम है कि परीक्षा एकदम निकट है ?

दुर्गा०—जी हाँ, मालूम है।

गुरु—तो इस हालत में इतनी लापरवाही उचित नहीं।

दुर्गा०—नहीं गुरुजी, दो दिनों के बाद नियमित रूप से आपके पास आया करूँगा। इसके बाद दुर्गाचरण ने इधर-उधर के दो चार पन्ने उलटाये और दो चार प्रश्न पूछकर गुरुजी से से विदा हो घर चल पड़े। घर पहुँच कर उन्होंने देखा कि साधु पूर्ववत् ध्यानमग्न अवस्था में बरामदे में बैठे हुए हैं।

डेढ़ पहर रात बीत चली थी। दुर्गाचरण ने साधु के भोजनादि का इन्तजाम किया। साधु ने खाना-पीना करके कहा—बच्चा, मेरी तृप्ति हो गयी। तुम जाकर आराम करो।

दुर्गाचरण—यदि आप दो चार दिन मेरे यहाँ ठहरने का वादा करें तो मैं निश्चिन्त होकर सो जाऊँ। अन्यथा अभी आपसे बातचीत करूँगा। क्योंकि ऐसा अवसर कम मिला करता है। इन दिनों मेरा चित्त अत्यन्त अशान्त रहता है। यदि आपकी कृपा होगी तो मेरे कष्ट अवश्य दूर होंगे।

साधु—अच्छा बच्चा, यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो मैं दो चार दिन और यहाँ ठहरूँगा। अभी तुम विद्यार्थी हो। अध्ययन तुम्हारा कर्तव्य है। इस समय किसी व्यर्थ चिन्ता में पड़ने की जरूरत नहीं है। सुख दुःख के लिये हर एक मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है। देखो—भगवान् ने कहा है—"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमव सादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रिपुरात्मनः । बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येननात्मैवात्मनाजितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेत्मैव शत्रुवत् ।" देखो बच्चा, उद्विग्न होने से कुछ भी लाभ नहीं । भगवान् के इन अमृत मय वचनों पर ध्यान देकर इनके अनुसार कार्य करने का अभ्यास करो । कुछ दिनों के बाद देखोगे कि संसार में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है, कहीं दुःख का लेशमात्र भी नहीं है । अच्छा बच्चा, अब मुझे नींद मालूम हो रही है । इस समय तुम भी जाओ आराम करो । कल फिर बातचीत होगी ।" दुर्गाचरण ने पूछा, "महात्मन्, यहाँ से जाने पर फिर कब लौटियेगा ?" साधु ने कहा—"यदि भगवती की कृपा हुई तो तीन महीने के भीतर ही मैं फिर लौट कर तुमसे मिलूँगा । इतना कहकर साधु बिस्तर पर लेट गये, दुर्गाचरण भी अपने शयनकक्ष में जाकर बहुत देर तक केतर्की की बातें सोचते-सोचते निद्रामग्न हुए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसरा परिच्छेद

दुर्गम अरण्य

गंगाजी के किनारे पहाड़ों के बीच के एक दुर्गम संकीर्ण रास्ते से तीन व्यक्ति उतावली से कदम बढ़ाये चले जा रहे हैं। तीनों युवक हैं, उनमें से किसी की अवस्था भी चालीस से अधिक नहीं है। आगे-आगे चलने वाले को हम अमानत कह कर पुकारेंगे। दूसरे का नाम मधुआ और तीसरे का अफजल है। तीनों चुपचाप निबिड़ जंगल में क्रमशः घुसते चले जा रहे हैं। सहसा अफजल ने अपने दोनों साथियों से कहा—"देखो भाइयो, सूरज डूबने में अभी दो घंटे की देर है। अभी कितना दूर और चलना होगा इसका पता मुझे नहीं है। मैंने अक्सर लोगों से सुना है कि इस जंगल में बहुत से भूत प्रेत आदि रहते हैं। बाघ सूअर वगैरह जंगली जानवरों से मैं उतना नहीं डरता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जितना भूतों और चुड़ैलों से। इसलिए तेजी से कदम बढ़ाये चलो। कहीं ऐसा न हो कि बीच रास्ते में ही रात हो जाय, और भूतों का सामना करना पड़े।

अमानत—तुम तो निहायत गंवार आदमी मालूम पड़ते हो। भूत क्या है—मैं नहीं समझता। मुझे अक्सर बीहड़ जंगली रास्तों से चलना पड़ता है, आधी जिन्दगी भयावने मार्ग से चलते चलते बीत गयी, अकेले ही मैंने कई बार खतरनाक जगहों की सफर की है। शेर सूअर के अलावा कहीं मुझे भूत चुड़ैल आदि नहीं दिखलाई पड़े।

सधुआ—क्या कहते हो अमानत भैया! तुम किसी रात को मेरे साथ चलो तो तुमको तमाशा दिखलाऊँ। तुम्हारा घमंड जरूर टूट जायगा। शिवपुर यहाँ से केवल आठ मील की दूरी पर है। उसके दक्खिन एक छोटी सी जंगली नदी बहती है। बरसात के दिनों में उसका रूप बहुत ही भयंकर हो जाता है। उसके किनारे शिवपुर गाँव के सामने एक श्मशान है। वह हजारों वर्ष का पुराना श्मशान कहलाता है। उस श्मशान से सटा हुआ एक बहुत पुराना बर का पेड़ है। उसकी सैकड़ों डालियाँ बहुत दूर तक फैली हुई हैं। लोग कहते हैं कि वह आज का नहीं बल्कि सतयुग का पेड़ है। रोज आधी रात बीतने पर वहाँ भूतों और चुड़ैलों का तमाशा देखने में आता है। कहा जाता है कि असाढ़ के महीने में किसी रईस की बारात से नाच गान करने के बाद एक वेश्या अपनी मण्डली के साथ नाव पर सवार होकर नदी से जा रही थी। अचानक उन-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर डाकुओं का आक्रमण हुआ। डाकुओं ने निष्ठुरता से सबको मार डाला और सब माल असबाब रुपया पैसा आदि लेकर चले गये। तभी से प्रतिरात को वहाँ साफ साफ नाचने गाने बजाने के दृश्य दिखलाई पड़ते हैं। मैंने यह बात किसी गँवार से नहीं बल्कि एक प्रतिष्ठित बूढ़े ब्राह्मण पण्डित के मुँह से सुनी है।

इस तरह आपस में बातचीत करते हुए तीनों चले जा रहे थे कि जंगल में दाहिनी ओर से किसी के रोने और कराहने की सी आवाज सुनाई पड़ी। अफजल ने घबरा कर पूछा, "क्या तुम लोगों को कुछ सुनाई पड़ रहा है?" मधुआ ने विरक्त हो कर कहा, "चलो, चलो, देर हो रही है। दुनियाँ में कहाँ क्या हो रहा है, यह जानकर हमें क्या करना है। हमें अपने काम से काम है। चलो, जल्द घर पहुँच कर अपना अपना हिस्सा बांट लें।

कराहने और रोने की आवाज कुछ और तेज सुनाई पड़ने लगी। अफजल भी डेरे पर पहुँचने के लिये उत्सुक था। क्यों कि वह इस दल में नया शामिल हुआ था। डाकुओं के अड्डे का उसे पता नहीं था। परन्तु किसी औरत के कण्ठ से आनेवाली करुण आवाज से उसका कोमल मन विचलित हो उठा। उसने चिन्तित भाव से कहा, "भाई मुझे बड़ा अचरज मालूम हो रहा है कि इस जंगल में औरत कहाँ से आयी और आयी भी तो रोती क्यों है? हम डाकू हैं, पर आदमी हैं।

मधुआ—देखो अफजल भाई, फजूल की बातें करके देर मत करो। रात हो जाने पर पछताना पड़ेगा। पैर में कांटे चुभ जायंगे। यदि वर्षा होने लगेगी तो नरक सा कष्ट भोगना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफजल—नहीं भाई, तुम दोनों बढ़ते चलो। इस बात की जाँच किये बिना मैं एक कदम भी आगे पैर न बढ़ाऊँगा।

अमानत—तुम जो चाहो कर सकते हो। लेकिन अभी तुम नये आदमी हो। मेरे कहने के मुताबिक चलना तुम्हारा कर्तव्य है। यदि मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हें नुकसान उठाना पड़ेगा। हमलोगों ने एक रईस की नाव लूट कर जो धन कमाया है उसका आज रात को बटवारा होगा। मेरे गरोह के और लोग डेरे पर मौजूद हैं।"—यह कह कर अमानत मधुआ के साथ तेजी से कदम बढ़ाये चला।

अमानत और मधुआ दोनों के चले जाने पर अफजल धीरे-धीरे जंगल में दाहिनी ओर बढ़ने लगा। वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता था, रोने की आवाज और भी स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी। करीब सौ कदम की दूरी पर जाकर वह एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और मोटी डालियों तथा पत्तियों के बीच अपने को छिपाकर इधर-उधर ताकने लगा। परन्तु बहुत देर तक कोशिश करने पर भी उसे केवल कराहने के सिवा और किसी तरह की आवाज न सुनाई पड़ी। निराश होकर वह बैठ जाना चाहता था। लेकिन करुण-क्रन्दन की आवाज बार-बार आती देखकर डाकुओं द्वारा किसी के सताये जाने की आशङ्का से उसका मन बहुत चञ्चल हो गया था। वह साहस के साथ और भी आगे बढ़ा। थोड़ी दूर जाते ही उसने देखा कि एक बड़े पेड़ के नीचे एक प्रौढ़ व्यक्ति एक युवती को धमका रहा है। अफजल घनी लताओं की ओट से धीरे-धीरे बढ़ता हुआ उन दोनों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकट पहुँचा। वह अब दोनों के एकदम पास पहुँच गया। वहाँ एक घनी झाड़ी थी जिसमें छिपकर वह सारा दृश्य अच्छी तरह देखता हुआ उनकी आपस की बातचीत सुनने लगा। पुरुष की उम्र प्रायः साठ और युवती की लगभग पचीस की मालूम होती थी। युवती का शरीर सुगठित और आकर्षक था। दोनों आँखें बड़ी-बड़ी और आकर्षक थीं। सूरत से ऊँची जाति की ललना मालूम होती थी। प्रौढ़ पुरुष गले में माला पहने हुए था और सिर के बाल खड़े-खड़े जंगलियों के से थे। दोनों की सब कार्रवाइयाँ देखने की नीयत से अफजल चुपचाप बैठ गया। महिला ने आँसू पोंछकर उस आततायी से कहा—"नराधम, देखने में तो तुम साधु-सा मालूम पड़ते हो, पर मुझे असहाय बनाकर तंग कर रहे हो। न तुम्हें लोकलाज है न परलोक का भय। पाप से डरना तो तुम जानते ही नहीं।" बनवारी ने नम्र स्वर में कहा—"तुम्हारे सौन्दर्य के आगे अब मुझे दुनिया में कुछ भी नहीं सूझ रहा है। मैं अपनी सारी सम्पत्ति तुम्हारे चरणों पर रख देने को तैयार हूँ।" युवती ने गर्जकर कहा—'हटो नर पशु, मुझे तुम जैसे पापियों से जरा भी भय नहीं है। मेरे सहायक भगवान् हैं। जिसने प्रह्लाद को कष्ट से उबारा था, ध्रुव को आश्रय दिया था, द्रौपदी की लाज बचायी थी, वही चक्रपाणि मेरी भी रक्षा करेगा।" इस तरह उस सती को वश करने में असमर्थ होकर उस नराधम ने उसे पकड़ने की इच्छा की और जोश में आकर आगे बढ़ा। वह उस युवती को पकड़ना ही चाहता था कि सहसा नंगी तलवार लिये अफजल बिजली की भाँति उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामने कूद आया। उसको देखते ही उस पापी की बुद्धि और भी विमूढ़ हो गयी। वह क्या करने जा रहा है और कहाँ है– आदि कुछ भी न सोच सका। उसने समझा कि अब प्राण जाने में ज्यादा देर नहीं है। उसका हृदय भय से धड़कने लगा। अफजल को देखते ही उसका जोश ठंढा पड़ गया। वह जान लेकर भागना चाहा। अफजल ने मुरली को सान्त्वना देते हुए कहा—"बेटी, घबड़ाना मत, मैं अभी इसको यमपुरी को रवाना करता हूँ। तुम चुपचाप तमाशा देखती रहो।" यह कहकर वह तुरत नंगी तलवार खींच कर दौड़ा। उसकी नीयत बनवारी पहले ही समझ गया था। इसलिये भागा जा रहा था। पर अफजल थोड़ी ही दूर की दौड़ में उसके पास पहुँच गया और खींचकर उसकी गर्दन पर तलवार चला दी। एक ही वार में बनवारी का सिर धड़ से जुदा हो गया।

12242

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौथा परिच्छेद

पण्डितों की सभा

खिलजी वंशवालों के राजत्वकाल की बात है। भारतवर्ष में संस्कृत या देवभाषा का प्रचार यवनों के आगमन के साथ ही धीरे-धीरे लुप्त हो चला है। शास्त्रों की प्रकृत मर्यादा का बोध न होने के कारण उत्तर भारत के ब्राह्मणों का पतन जोरों से शुरू हो गया है। ऐसे ही समय में भागलपुर जिले के गंगातटवर्ती श्रीनगर नामक एक समृद्धिशाली गांव में पंडित दीनानाथजी के बैठकखाने में आज बहुतेरे पण्डितों का समारोह हुआ है। दूर-दूर के विद्वान् धर्माचार्य बुलाये गये हैं। बैठक-खाने के सामने ही दुर्गाजी का विशाल मन्दिर शोभा पा रहा है। मन्दिर के सामने एक विस्तृत चबूतरा है। प्रायः तीस पण्डित एकत्रित हुए हैं। केवल अनन्त पुर के शास्त्रीजी के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने की देर है। आश्विन का महीना है। आकाश स्वच्छ है। शास्त्रीजी को लाने के लिये आठ कहारों के साथ एक सवारी भेजी गयी है। डेढ़ पहर दिन चढ़ आने पर भी शास्त्रीजी नहीं आये। कार्य में विलम्ब देखकर—मनमोहन भट्टाचार्य ने कहा, "भाइयो, शास्त्रीजी अभी नहीं आये। दोपहर के बाद मुझे अन्यत्र यज्ञ क्रिया में जाना है। इसलिए शीघ्र कार्यारम्भ होना चाहिये। भट्टाचार्यजी की बातें सुन पण्डित नन्दलाल त्रिवेदी ने कहा, "शास्त्रीजी अपनी नित्य क्रिया सन्ध्यावन्दनादि में बहुत समय लगाते हैं। ऊषाकाल से लेकर दोपहर तक उनका समय पूजा हवनादि में ही व्यतीत होता था। अब समय हो चला है, वे आते ही होंगे। तब तक बाबू साहब को भी बुला लिया जाय। उनके न रहने से काम नहीं चल सकता।" तदनन्तर एक अनुचर बाबूसाहब को बुलाने के लिए भेजा गया। सभी पण्डित चबूतरे पर जा बैठे। थोड़ी देर के बाद शास्त्रीजी आ गये। उपस्थित सज्जन पण्डितजी के आते ही उठकर खड़े हो गये और शास्त्रीजी के बैठने पर फिर अपने अपने स्थान पर बैठ गये।

इस तरह प्रायः एक पहर दिन और चढ़ गया। बाबू यदुनन्दन सिंह भी सभा स्थान पर आ गये। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बाबू साहब ने खड़े होकर कहा, "आप लोग भली-भाँति जानते हैं कि हम सब आज किस मतलब से एकत्रित हुए हैं। इस समय देश में सर्वत्र यवनों का प्रबल प्रताप फैला है। हमारे धर्म पर घोर सङ्कट उपस्थित है। हमारी सम्पत्ति सुरक्षित नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। सर्वत्र डाकू घूम रहे हैं। बेटी बहुओं की इज्जत बचाना कठिन हो रहा है। शासन में कड़ाई न होने के कारण लोगों में दुराचार की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यदि कुछ दिनों तक यही हालत रही तो दुराचारियों की संख्या बहुत बढ़ जायगी। फिर समाज में शान्ति पूर्वक रहना असम्भव हो जायगा। एक दिन की बात है कि मेरे ही गाँव की एक विधवा, जिसकी उम्र अभी पचीस वर्ष के लगभग होगी—अकस्मात: गायब हो गयी। परन्तु मुँगेर के नवाब साहब के प्रधान जासूस बाबू सूचितसिंह ने बड़े परिश्रम से उसका उद्धार किया। वह कल शाम को उस महिला को मेरे मकान पर पहुँचा गये क्यों कि उसके घरवालों ने उसे घर में स्थान न दिया। पन्द्रह दिनों तक वह कहाँ थी यह पूछने पर जब उसने उत्तर न दिया तो उसके घरवालों ने घर में स्थान देना अस्वीकार किया। मैं चाहूँ तो कानूनी कार्रवाई करके उसको सम्पत्ति में हक दिलवा सकता हूँ। परन्तु ऐसा करने और सम्बन्धियों से वैर का भाव बढ़ाने से उसकी विशेष भलाई न होगी। यही समझ कर मैंने आपलोगों को यहाँ बुलाया है कि उसके बारे में आप लोग ऐसी व्यवस्था दीजिये जिससे समाज में उसको स्थान मिले और वह शान्ति से अपना जीवन बिता सके। आप लोगों की व्यवस्था मिल जाने पर सभी चुप हो जायेंगे, उसके घर के लोग उसे तंग न करेंगे। मुरली के पिता मेरे सच्चे मित्र थे। वह मेरी कन्या के समान है।" इतनी बातें कह चुकने के बाद बाबूसाहब बैठ गये।

थोड़ी देर तक सभा में बिलकुल सन्नाटा रहा। अन्त में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निस्तब्धता भंग करते हुए त्रिवेदी जी कहने लगे, "बाबूसाहब, धर्म का मार्ग कठोर है, मुरली अब समाज में स्थान नहीं पा सकती। ऐसी दूषित स्त्री अवश्य समाजच्युत करने योग्य है।" शास्त्री जी ने कहा, "मृत पति की स्मृति में ब्रह्मचर्य से जीवन व्यतीत करना विधवा का धर्म है। पर वह पन्द्रह दिनों तक पर पुरुष के साथ रही। क्या उसे कोई बलपूर्वक घर से उठा ले गया था ? वह कैसे किसके साथ कहाँ गयी थीं जब तक ये बातें स्पष्ट रूप से नहीं मालूम होतीं तब तक उसके बारे में समाज क्या व्यवस्था दे सकता है ? मैंने सुना है कि पूछने पर वह कुछ भी स्पष्ट उत्तर नहीं देती। उसके पतित होने का यह स्पष्ट प्रमाण है।—भगवान् ने कहा है—'अधर्माऽभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्ण संकरः। संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतंति पितरो ह्येषां लुप्त पिण्डोदक क्रियाः। दोषैरतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः। उत्सा-द्यन्ते जाति धर्माः कुल धर्माश्च शाश्वताः। उत्सन्न कुल धर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरके नियतं वासो भवतीत्यनु सुश्रुम।"

पण्डितजी का धर्म पर ऐसा भाषण सुनकर उपस्थित जन समूह चुप हो गया। किसी को उनके खण्डन में कुछ कहने का साहस न हुआ। बाबूसाहब ने भी कुछ उत्तर नहीं दिया। अनन्तर थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उन्होंने कहा, "स्पष्ट कहिये, मेरे लिए आपलोगों की क्या आज्ञा होती है।" चौबेजी ने नम्रस्वर में कहा, "बाबू साहब, आपने शास्त्रीजी का भाषण सुना है। अब आपको घबड़ाना न चाहिये। मेरी राय है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके लिए किसी अच्छे स्थान पर एक आश्रम बनवा दिया जाय, जिसमें रह कर वह शेष जीवन व्यतीत कर सके। कोष में इतना धन सञ्चित होना चाहिये जिससे इस तरह की और भी पथभ्रष्ट स्त्रियों का भरण पोषण हो सके।" चौबे जी के मत को सबने एक स्वर से समर्थन किया। तदनन्तर सभापति जी की आज्ञा से सभा विसर्जित हुई। सभी उठकर अपने-अपने घर को रवाना हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाँचवाँ परिच्छेद

कोतवाल की तलबी

शरदऋतु की स्वच्छ चाँदनी से मुंगेर नगर की ऊँची अट्टालिकाएँ जगमगा रही हैं। नवाब लियाकत खाँ के पास कल से गाज़ीपुर के नवाब साहब का एक दूत ठहरा हुआ है। दूत के लिए आराम के सब इन्तजाम किये गये हैं। रात का पहला पहर बीत चला है। ऐसे ही समय में अवसर पाकर नवाब साहब ने दूत को अपने कमरे में बुलवाया। दूत ने कमरे में पहुँचते ही नवाब साहब को सलाम किया और उनका आदेश पाकर एक आसन पर बैठ गया। नवाब साहब अभी बिलकुल युवापुरुष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। उनके सिर पर काले केशों के गुच्छे शोभा पा रहे थे। मुखमण्डल पर गम्भीरता टपक रही थी। नौकर कस्तूरी की सुगन्धि से सुवासित तम्बाकू भर मूल्यवान चिलम को सोने की गुड़गुड़ी पर रख गया। सामने मेज सुसज्जित थी। उस पर पान से भरा स्वर्णनिर्मिति डब्बा पड़ा था। गड़गड़े पर तम्बाकू पीते हुए नवाब साहब ने कहा, "हाँ जनाब, मैंने आप के नवाब साहब का खत गौर से पढ़ा है। मैं जहाँ तक हो सकेगा आप लोगों को मदद देने के लिए तैयार हूँ। इस समय आप आराम कीजिये। सवेरे ही मैं आपको एक बहुत तेज़ घोड़े पर यहाँ से रवाना करूँगा। आप अपने नवाब साहब से कह दीजियेगा कि मैं बहुत जल्द उस लड़की के उद्धार की कोशिश कर रहा हूँ।" नवाब साहब की आज्ञा पाकर दूत चला गया। उसके चले जाने पर बिस्तर पर लेटे लेटे नवाब साहब सोचने लगे—मेरे राज्य में इस तरह की ज्यादती हो—यह कम लज्जा की बात नहीं है। इस देश में मुसलमानों की जड़ अभी मजबूत नहीं हुई है। चारों तरफ से शिकायतें आती हैं कि मुसलमान ज्यादती करते हैं, डाका डालते हैं। हमारे बादशाह का भी खयाल कितना गलत है कि हिन्दुओं को तंग करके इसलाम की तरक्की चाहते हैं। इस देश में हिन्दू करोड़ों वर्ष से रहते आये हैं। यह देश उनका है। हम अगर अमन चैन से रहना चाहें तो उनसे मिलकर ही रह सकते हैं। गाज़ीपुर के नवाब साहब के पत्र से मालूम होता है कि अब तक उस लड़की का पता नहीं चला। वह बेचारा यात्री बनारस जा रहा था। बीच में डाकुओं ने उसे मार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाला, उसके सभी साथी मारे गये, तीनों मल्लाह डुबा दिये गये और लड़की को लेकर नाव पर डाकू चम्पत हो गये। गाज़ीपुर के नवाब साहब की ओर से अब तक जो तहकीकात हुई है, उससे मालूम होता है कि शाम को यह दुर्घटना हुई और रात भर में डाकू लापता हो गये। लेकिन इस बात से कुछ खुशी हासिल हो रही है कि बेचारे लड़के—लड़की के भाई की जान बच गयी है। उसीने गाज़ीपुर जाकर इत्तिला दी है। वह गाजीपुर में ही अबतक ठहरा हुआ है।" इस तरह सोचते-सोचते नवाब साहब का चित्त चंचल हो उठा। वे बहुत घबड़ा गये, धीरज जाता रहा। यह समझ कर कि इस हालत में नींद न आवेगी—उन्होंने घंटी बजायी। तुरत ही पहरेदार ने आकर सलाम किया। उसके आते ही उन्होंने उससे कहा—'देखो, अपनी जगह पर तुम दूसरे आदमी को रखकर कोतवाल साहब को बुला लाओ।' हुक्म पाते ही पहरेदार वहाँ से चला गया। उसके जाने के बीस-पचीस मिनट के बाद कोतवाल नूरअली साहब वहाँ हाजिर हो गये। यथोचित शिष्टाचार दिखलाने के बाद जब कोतवाल साहब बैठ गये तब नवाब साहब कहने लगे—"देखिये साहब, जिन्दगी चार दिन की है। हमेशा ऐसा काम करना चाहिये जिससे कयामत के बाद हमारी भलाई हो। गाजीपुर के नवाब साहब ने मेरे पास जो पत्र भेजा है—उसे पढ़कर सब हाल मालूम कर लीजिये।" यह कहकर उन्होंने वह पत्र कोतवाल साहब के हाथ में दिया। पत्र पढ़कर नूरअली साहब थोड़ी देर तक चुप रहे। अनन्तर उन्होंने नम्रता के साथ

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहना शुरू किया—"हुजूर, मेरे जासूसों में सूचितसिंह ही एक ऐसा है जो कठिन और गुप्त बातों का पता लगा सकता है। अभी थोड़े दिन हुए, उसने जंगल के बीच से एक हिन्दू औरत को किसी बदमाश के पंजे से छुड़ा लाया है। अगर यह काम वह न कर सकेगा तो दूसरा कोई भी न करेगा। मुझे इसके बारे में पूरा हाल पहले से मालूम है। गाजीपुरवाले परिश्रम करते करते थक गये, पर कुछ भी न कर सके। आश्चर्य तो यह है कि आपके और गाजीपुर के नवाब साहब के इलाके के बीच ही यह दुर्घटना हुई है। यह हम सबके लिए लज्जा की बात है और जहाँ तक हो सके, दिलोजान से डाकुओं की गिरफ्तारी की कोशिश करना हमारा कर्तव्य है।" कोतवाल साहब की बातों से नवाब साहब को बहुत कुछ सान्त्वना मिली। उन्होंने धीरे-धीरे कोतवाल साहब से कहा—"मैं देखता हूँ कि ये हिन्दू—खास करके ब्राह्मण अजीब विचार रखते हैं। जरा-जरा सी बातों के लिए अपनी बहू-बेटियों को घर से निकाल देते हैं।" कोतवाल साहब ने कहा—"हाँ हुजूर, बात ऐसी ही है। मुरली नामक एक लड़की आज कई दिनों से भटक रही है। सूचितसिंह ने उसका उद्धार किया था। इस सिलसिले में मुझे मालूम हुआ है कि वह लड़की विधवा है, उसकी शादी अब न हो सकेगी।" यह सुनते ही नवाब साहब कहने लगे—"कोतवाल साहब, हिन्दुओं की इस हालत से मुझे बड़ी तरस आ रही है। मैं हर्गिज इस कौम की बुराई नहीं चाहता, पर ऐसी औरतों को—जिनको ये लोग नाहक तंग करते रहते हैं—मुसलमान बना लेने में पुण्य समझता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ। खैर, आप इस समय जाइये। मौका पाकर मैं आपसे उस लड़की के बारे में अपना विचार प्रकट करूँगा। अभी आपके सामने जो मसला पेश है, उसका इन्तजाम कीजिये।" इतनी बातचीत होने के बाद कोतवाल साहब नवाब साहब को झुककर सलाम करके अपने मकान को चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छठा परिच्छेद

अनुपम सौन्दर्य

आज दिवाली है। अगणित तारे आकाश में चमक रहे हैं। डाकुओं का सरदार अमानत अपनी गुफा के कमरे में चुपचाप बैठा सोच रहा है। उसकी चिन्ता घोर दुश्चिन्ता में परिणत हो रही है। अपनी गलती पर वह बार-बार पछता रहा है। थोड़ी देर तक इस प्रकार सोच में पड़ा-पड़ा वह ऊब गया और वहाँ से उठकर पास की एक दूसरी गुफा में गया। वहाँ पहुँचते ही उसने देखा कि मधुआ, सुखराम, जैलाल और हरदेव कहीं जाने की तैयारी में लगे हैं। उसने उन सब की तैयारी देखकर पूछा, 'तुम लोगों को कोई फिक्र नहीं है। जुआ खेलने की धुन में तुम लोग मस्त हो, पर मैं अफजल के न आने से बहुत घबड़ा रहा हूँ। मैं कभी किसी नये आदमी को अपने दल में मिलाना पसन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं करता। परन्तु इसी मधुआ के कहने से मैंने उसको अपने गरोह में शामिल कर लिया था। मैं समझता था कि वह नवयुवक मेरा पक्का साथी निकलेगा। परन्तु आज तक उसके न आने से मुझे अपने दल पर खतरा आने की शङ्का दिखलाई पड़ रही है।' अपने सरदार की ऐसी घबड़ाहट देख कर मधुआ भी कुछ घबड़ा गया। जुए के खेल में देर होते देख कर उसने सरदार को सान्त्वना देते हुए कहा, "हुजूर, इसमें डरने की कोई बात नहीं है। आप जाइये आराम कीजिये। कल सबेरे हमलोग अफजल की खोज में निकलेंगे और उम्मेद है कि शाम तक उसका पता लगा कर जरूर लौट आवेंगे। मैं समझता हूँ कि वह युवती अब तक आपके पंजे में जरूर आ गयी होगी।" मधुआ की यह उक्ति सुनकर अमानत का चेहरा एकदम फीका पड़ गया और उसने घबड़ाहट के साथ कहना शुरू किया, "क्या कहते हो भाई, मेरे कहने का उसपर अब तक कुछ भी असर नहीं पड़ा है। यारो, मैं तो उसके सौन्दर्य से एकदम मुग्ध हूँ। उसके लम्बे लम्बे बाल उसकी जाँघों तक काली नागिनी की भाँति फैले हुए हैं। आँखें बड़ी-बड़ी मदमाती-सी हैं। उसके सभी अंग विधाता ने इस चतुराई से रचे हैं कि उनका बयान करना मुश्किल है। मैं ज्योंही उसे देखता हूँ मेरी सब सुधि जाती रहती है। सारा संसार उसके सामने तुच्छ मालूम होने लगता है। अच्छा हुआ कि उस नये अनजान आदमी से हमलोगों ने उसके बारे में कुछ भी नही बतलाया, नहीं तो हमारा भण्डाफोड़ हो जाता और हम सब गिरफ्तार कर लिये जाते। मुझे ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम हो रहा है कि वह अफजल नाम का नौजवान मुँगेर का कोई जासूस ही था। मैं समझता हूँ कि इस स्थान पर और ज्यादा दिनों तक ठहरना खतरे से खाली नहीं है। अब जितना जल्द हो सके इस लड़की को यहाँ से किसी दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाय और अपने लिए कोई दूसरा सुरक्षित अड्डा कायम किया जाय।"

अमानत की बातों से सभी डाकूओं के हृदय भयसे थरथराने लगे। अनन्तर सुखराम ने कहा, "हाँ हुजूर, आपका कहना एकदम ठीक है, पहले से बहुत जल्द हटने में ही हमारी भलाई है। अफसोस है कि पन्द्रह वर्षों का हमारा यह अड्डा अब छूटना चाहता है। खैर, जो होगा सो होगा। आप उस लड़की को पा गये यही सबसे खुशी की बात है। आप जैसे सरदारों का एक बीबी से कैसे गुजारा हो सकता है।"

अमानत—सुखराम, तुम्हारी बातें अजीब होती हैं। आखिर वह हिन्दू की लड़की है। मुझे तो वह शैतान समझती है और मेरी परछाहीं से भी दूर रहना चाहती है। एक दिन मैं उसके बहुत नजदीक चला गया था। मेरी परछाहीं उसके ऊपर पड़ते ही—छिः छिः कहकर और आँखें लाल-लाल करके न मालूम क्या-क्या बकने लगी। जब मैं लौटने लगा तो झरने में नहाने चली गयी।

सुखराम—हाँ, हाँ, मुझे भी ख्याल हुआ। मैं जानता हूँ, वह किसी ऊँची जात की लड़की है। उसके लिए आप जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपवित्र हैं मैं भी वैसा हूँ। मेरे हाथ का छुआ जल भी वह नहीं पी सकती।"

अमानत—खैर, अब जाओ। लेकिन याद रक्खो सवेरे जरूर अफजल का पता लगाने की कोशिश करना।

सुखराम—"आप एकदम बेफिक्र होकर सोइये, आराम कीजिये। उसको फुसलाने की कोशिश कीजिये। अफजल के लिए आप इतनी घबड़ाहट छोड़ दीजिये। वह जरूर किसी खास वजह से रुक गया। अगर वह न भी मिला तो हमारा क्या बिगड़ जायगा। आप ऐसी-ऐसी मामूली बातों के लिए घबड़ा जाते हैं।"

अमानत—तुम्हारा कहना ठीक है। अगर अफजल न भी आवेगा तो हमारे कामों में रुकावटें न पड़ेंगी। खैर, एक बात मैं तुम लोगों से बतलाना भूल गया। तुम खूब गौर से सुन लो और इस पर अपनी राय जाहिर करो कि इस हालत में मेरा क्या कर्तव्य हो सकता है।

सुखराम—आज रहने दीजिये। हमलोगों को देर हो रही है। बाकी बातचीत कल होने से क्या हर्ज हो जायगा ?

अमानत—भाई, मालूम होता है कि तुम लोगों को मेरे साथ बिलकुल हमदर्दी नहीं है। क्या तुम नहीं समझते कि इस समय मैं कितनी तकलीफ में हूँ। उस औरत की खूबसूरती पर मैं दिलोजान से मोहित हूँ। मुझे रात को नींद नहीं आती, न तो दिन को चैन पड़ता है। बराबर उसकी मोहिनी सूरत मेरे आँखों में नाचा करती है। मालूम होता है कि उसके बिना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे प्राण न बचेंगे। इधर मेरी हालत ऐसी हो रही है, उधर बाबू अधरमसिंह उसको अपने यहाँ ले जाना चाहते हैं।

सुखराम—यह क्या ? अधरमसिंह को ये बातें कैसे मालूम हुईं ? अब सब काम बिगड़ने में देर नहीं है। यदि सचमुच उसकी इस पर चाह हो गयी हो तो जहाँ तक जल्द हो सके इसको उसको सौंप दो, नहीं तो हम लोगों के सब काम जरूर बिगड़ जायँगे।

अमानत—"क्या करूँ, बातचीत के सिलसिले में मेरे मुँह से यह बात निकल पड़ी। सुनते ही उन्होंने मुझसे और बातें दरियाफ्त कीं, उसकी खूबसूरती और उम्र आदि के बाबत पूछा, फिर उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कहा, 'भाई, मैं नक़द पाँच सौ रुपये दूँगा। तुम उसको मेरे पास पहुँचा दो।' मैं भी चाहता हूँ कि पाँच सौ के बदले उनसे पन्द्रह सौ ले लूँ। आखिर जब यह मेरे वश नहीं हो रही है तो इससे मुझे क्या आराम मिल सकेगा। मैं तो बिलकुल ऊब गया हूँ। खैर, आगे जो होगा सो होगा। तुम लोग अब जाओ।" इतना कहकर अमानत अपने साथियों से विदा होकर अपने कमरे में गया और चिन्तामग्न अवस्था में बिस्तर पर लेट रहा। अन्यान्य डाकू भी वहाँ से कुछ दूरी पर घनघोर वृक्षों की ओट में बैठ कर गाँजा पीने लगे और फिर बाद को जुआ खेलने में मस्त हो गये।

अब हम पाठकों को अमानत के कमरे की ओर ले चलते हैं। पहाड़ की गुफा में कमरे की बात सुनकर बहुतों को आश्चर्य हो सकता है। परन्तु सारी उम्र डाके डालने और पहाड़ी गुफाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में रहते-रहते अमानत की ज्यादा उम्र बीत चली है। पत्थर की चट्टानों को काटकर रहने योग्य कमरे बनाने की तरकीब उसे अच्छी तरह मालूम है। उसने गुफा की चट्टानों को औजारों से काटकर बड़ी मिहनत से आस-पास दो कमरे बना दिये हैं। एक कमरे में पत्थर के टुकड़ों के चार पाये बनाकर उन पर नाव से चुराये हुए काठ की पटरियाँ रखकर उसने बड़ी खूबसूरत एक चौकी बना डाली है। उस चौकी पर तोशक बिछी हुई है। नर्म तोशक पर लेटने के बाद उसके चित्त में फिर केतकी की सूरत झलकने लगी। थोड़ी देर तक सोचने के बाद आखिर वह केतकी के कमरे की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाये चल पड़ा।

केतकी के कमरे की बनावट भी विचित्र है। अमानत के कमरे के पास ही एक छोटा-सा झरना है। उस झरने से निकल कर एक पहाड़ी नाला बहता हुआ बहुत दूर तक चला गया है। उसी नाले और अमानत की गुफा के बीच एक छोटा-सा टिला है। उस टिले को एक तरफ से काटकर दीवार के रूप में बना दिया गया है, बाकी तीन तरफ चट्टानों के घेरे डाल दिये गये हैं। उत्तर की तरफ किसी व्यापारी की लूटी हुई नाव की पटरियों के दो किवाड़ लगे हैं। छत भी काठ की बनायी गयी है। अमानत जब कभी किसीको पकड़ कर लाता था तो उसी कमरे में कैद कर रख देता था। केतकी को भी उसने उसी कमरे में छिपा रखा था। उसकी नीयत बिलकुल खराब हो गयी थी पर केतकी के सतीत्वतेज से वह लाचार हो रहा था। उस डाकू की बुद्धि कुछ भी काम नहीं कर रही थी। जिस दिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बात हम कह रहे हैं, उस दिन वह दिल में बहुत ही ढाढस बाँधकर केतकी के कमरे के पास पहुँचा और किवाड़ के छेद से कमरे के अन्दर झाँकने लगा। केतकी गंभीर निद्रा में बेसुध पड़ी हुई थी।

पतङ्ग जिस प्रकार जलता हुआ दीपक देखकर मोहित हो जाता और प्राण न्यौछावर करने पर उतारू हो जाता है, सौन्दर्य की खान, नींद में बेसुध पड़ी हुई केतकी को देखकर उसकी वही दशा हो गयी। इतने दिनों में उसे कभी आज की तरह अनुपम रूपवती को देखने का मौका नहीं मिला था। जब कभी वह केतकी के निकट जाता था तो उसकी आहट पाते ही वह अपना मस्तक झुका लेती थी और सारे शरीर को अपनी साड़ी से जकड़ लेती थी। बूढ़े यात्री की नाव लूटने और उसकी हत्या के बाद अमानत केतकी को उसी कमरे में ला रक्खा था। केतकी के लिए खाने पीने और आराम से रहने का उसने सब इन्तजाम कर रखा था। परन्तु सब कुछ करने पर भी केतकी को वश में लाने की युक्ति उसे नहीं दिखलाई पड़ रही थी। केतकी को अधरम सिंह के हाथ सौंपने के बारे में उसने प्रायः सभी शर्तें ठीक कर ली थीं; परन्तु आज केतकी के सौन्दर्य की अपूर्व छटा देख कर वह एक दम मुग्ध हो गया है। आज वह भर पेट उस रूप छटा को निहारने लगा है। बेसुध लेटने के कारण उस बाला के अंग की झीनी पीली साड़ी इधर उधर खिसक गयी है, काली नागिन की भाँति बाल बिखरे पड़े हैं। नींद में मुंदी हुई आँखें, आँसुओं की धाराएँ बहने से मुरझाई हुई हैं, उनकी वह पतली कोर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीरे धीरे साँस चलने से उन्नत पुष्ट उरोजों का वह मृदु आन्दोलन, स्वप्नोद्वेग से गालों पर चढ़ी हुई वह ललाई, उज्वल कान्तिमय वह मृणालबाहु आदि सभी देखने की चीजें हैं। सभी अंगों से सौन्दर्य फूट पड़ा है। वाह, वाह, कैसी सुन्दरता है, कैसी मोहिनी छटा है। इस प्रकार की अपूर्व सौन्दर्य-राशि युवती को अच्छी तरह देखकर डाकू के मुँह से एकाएक यह वाक्य निकल पड़ा—'ऐ खुदा, तुम्हारी कृपा से आज दोनों आँखों का फल मुझे मिला।'

× × × ×

अकण्टक अवसर पाकर अमानत पर रूप का मोह छा गया, पाप का आधिपत्य जम गया। वह सोचने लगा, "क्या रुपये के लोभ में पड़कर मैं इस स्वर्ग की अप्सरा को अधरमसिंह को दे दूँ ? नहीं, नहीं, इसको लेकर मैं अब विन्ध्याचल की पहाड़ियों में जा छिपूँ तो ठीक हो, क्योंकि ऐसा करने पर अधरम सिंह या किसी को मेरा पता न चल सकेगा।"

इस प्रकार अपनी नीयत को बदल कर वह नरपिशाच निःशङ्क केतकी के पास जा बैठा। और फिर टक-टकी लगा कर करीब दस मिनट तक उसके मुख मण्डल की शोभा देखता रहा। अन्त में वह इतना विह्वल हो गया कि अपने को रोक न सकने के कारण उस अबला को चुम्बन करने के लिये उद्यत हो गया। लेकिन तब तक सहसा उस बाला की नींद टूट गयी। अपने ही पास यमदूत की भाँति डाकू को देखते ही वह अबला विस्तर से उठ खड़ी हुई और सौन्दर्य के नशे में विभोर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमानत उल्लू की भाँति टक-टकी लगाये बैठा रह गया। उसके मुख से एक शब्द भी न निकला। उसकी यह हालत देख कर लड़की ने डपटकर कहा, 'रे नीच, तू नहीं जानता की मैं किस वंश की लड़की हूँ। तू अभी यहाँ से चला जा नहीं तों इसका नतीजा अभी दिखला दूँगी।'

इस प्रकार रोष भरी तेजमयी बातें सुनकर अमानत का कलेजा दहल उठा। वह उठकर खड़ा हो गया और बहुत देरतक किंकर्तव्य विमूढ़ होकर खड़ा रहा। प्रायः पन्द्रह मिनट तक खड़े रहने के बाद वह उस स्थान से लौट गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सातवाँ परिच्छेद

कपट का बीज

नवाब साहब के कोतवाल नूरअली साहब का खयाल था कि दुनिया में सच्चे मित्र बहुत ही कम होते हैं और ज्यादा लोगों से दोस्ती करने से बुराई के सिवा भलाई नहीं होती। इस कारण वे अपने दिल की बात कभी किसी से प्रकट नहीं करते थे। उस दिन जब अकेले बैठकर वह मुरली के बारे में कुछ सोच रहे थे कि एकाएक नौकर ने आकर कहा "हुजूर, अरमान-अली साहब नीचे आपकी इन्तजारी में खड़े हैं।" नौकर से यह सुनते ही उन्होंने कहा, "फौरन उन्हें यहाँ बुला लाओ।" हुक्म पाते ही नौकर चला गया और तीन चार मिनट के अन्दर ही अरमानअली कोतवाल साहब के कमरे में हाजिर हो गये। कोतवाल साहब के उदास चेहरे को देखते ही उन्होंने पूछा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"भाई साहब, आप इतने मुरझाए हुए क्यों दिखलाई पड़ रहे हैं। दुनिया में आकर चार दिन की जिन्दगी को हँसते खेलते मौज में बिता देना चाहिये।" नूरअली ने कहा, "सच है, लेकिन मेरे ऊपर कितने जिम्मेदारी के कामों के इतने बोझ पड़े रहते हैं कि उनकी चिन्ता में अक्ल घबड़ायी रहती है। तुम्हें शायद मालूम होगा कि मुरली नाम की एक लड़की किसी बदमाश के पंजे से बचाकर यहाँ इस शहर में लायी गयी है। बाबू सूचितसिंह ने बहुत परिश्रम के बाद उसका उद्धार किया और उसे उसके घर पहुँचा दिया। परन्तु घरवालों ने उसको वहाँ न रहने दिया, आखिर वह बिलखती हुई यहाँ आयी है।"

अरमान—हाँ, मैंने उसके बारे में सुना है कि वह बेवा है, पिछले साल ही उसकी शादी हुई थी पर बदकिस्मती से उसकी ऐसी हालत हो रही है। उसके लिए कोई अच्छा इन्तजाम करना आपका या हर एक भले आदमी का फर्ज है।

नूरअली—हाँ दोस्त, बहुत जल्द उसके लिए कुछ इन्तजाम करना होगा। गाजीपुर से एक और ऐसी ही खबर आयी है। वह इससे भी पेचीला मामला है। जब तक वह झंझट तै नहीं होता तबतक दूसरा काम रोक रखना होगा।

अरमान—हाँ साहब, आपका काम ही ऐसा है कि बराबर इस तरह के मामले आते ही रहते हैं।

नूरअली—नौकरी कितना बुरा काम है। मैं तो इतना परेशान हो रहा हूँ कि जिसका बयान करना मुश्किल है। तबीयत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतनी बेहद रंज हो रही है और मालूम होता है कि ज्यादा दिनों तक मैं इस काम को न कर सकूँगा।

अरमान—"नहीं भाई, हर्गिज ऐसा न कहो। दुनिया झंझटों से भरी हुई है। आप अपना काम सम्हालिये, मैं आज एक जरूरी काम से सुलतानपुर जा रहा हूँ। फिर किसी दिन फुरसत के समय आपसे मिलूँगा।" यह कह कर अरमानअली वहाँ से चले गये।

अरमानअली के चले जाने के बाद कोतवाल साहब ने अपने प्रधान गुप्तचर बाबू सूचितसिंह को बुलवाया और केतकी सम्बन्धी सभी बातें आदि से अन्त तक उनसे बतलायीं। कोतवाल साहब की बातें सुनकर बाबू सूचितसिंह ने कहा, 'मुझे डाकुओं के एक दल का पता चला है। मुंगेर की पहाड़ियों में उनका प्रधान अड्डा है। असानत नामक एक व्यक्ति उनका सरदार है। मैं उस दल में बहुत सावधानी से शामिल हो गया था। उनके साथ मैं उनके अड्डे पर जा ही रहा था कि एका-एक मुरली की करुण पुकार सुनकर रुक गया। उसका उद्धार कर सकने पर मुझे बेहद खुशी हुई। लेकिन अफसोस इस बात का है कि उसको अपने घर में जगह नहीं मिल रही है। वह बिलखती हुई जिन्दगी बिता रही है। उसके लिए कोई पक्का बन्दोबस्त करने की बात में सोच रहा था, पर मेरी यह इच्छा अभी पूरी नहीं हो सकती। क्योंकि इस समय यात्री की नाव लूटनेवाले डाकुओं का पता लगाना जरूरी है। मैं तुरंत इस काम के लिए रवाना हो रहा हूँ। आप अब मुझे इजाजत दीजिये।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सातवाँ परिच्छेद

उपर्युक्त बातें कह कर बावू सूचित सिंह चुप चाप खड़े रहे और फिर नूरअली साहब की प्रसन्नता पूर्ण सम्मति पाकर वहाँ चले गये। उनके चले जाने पर नूरअली साहब भी अपने शयन-कक्ष में गये और विश्राम करने के विचार से तकिये के सहारे बिस्तर पर लेट रहे।

शारीरिक परिश्रम करनेवाले मानसिक चिन्ता से रहित व्यक्ति जब आराम करने लगते हैं तो अक्सर उनके विश्राम में किसी तरह की बाधाएँ नहीं पड़तीं। लेकिन जो लोग सिर्फ दिमागी काम करते हैं उनके विश्राम का तरीका शारीरिक परिश्रम करनेवालों से कुछ भिन्न प्रकार का होता है। उन्हें विश्राम का सुख तब मिल सकता है जब वे भी अपनी मानसिक चिन्ताओंसे मुक्त हो जाते हैं। जिस मनुष्य ने प्रतिदिन के व्यवहारों में विचारों पर शासन करना नहीं सीखा है, जो दिन भर के कामके बाद घर जाने पर या सोते समय सब प्रकार की चिन्ताओं को निर्वासित नहीं कर सकता, छोटी छोटी आदतें जिसके वश में नहीं, वह विश्राम का सुख कैसे प्राप्त कर सकता है। कोतवाल नूरअली साहब गये तो विश्राम करने, पर उनका मन स्थिर न रह सका। वे कभी मुरली की दुर्दशा की चिन्ता से बेचैन होते और कभी यात्रियों की नाव लूटने वाले डाकुओं की गिरफ्तारी के लिए घबड़ा उठते।

कोतवाल साहब की घबड़ाहट निन्दनीय या अस्वाभाविक न होने पर भी आदर्श नहीं मानी जा सकती। वे सर्वदा अपने कर्तव्यपालन की धुन में रहा करते थे। स्वप्न में भी किसी दूसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बुराई सोचना उनके स्वभाव के प्रतिकूल था। उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य परोपकार था। दुखियों का दुख देखते ही वे घबड़ा उठते थे और यथाशक्ति उनके दुःख निवारण के प्रयत्न में लग जाते थे। अपने खास कामों में दूसरों से राय लेने की आदत उनमें बहुत कम थी। इसका मुख्य कारण यह था कि उनके स्वभाव में सन्दिग्धता की मात्रा बेहद बढ़ गयी थी। यद्यपि अपने घनिष्ठ मित्र अरमान अली से वे कभी-कभी अपने कर्तव्य के सम्बन्ध में राय लेते थे, पर उन पर भी उनका भरोसा नहीं रहता था।

उस दिन सोचते सोचते कोतवाल साहब की घबड़ाहट इतनी बढ़ गयी कि तुरंत नौकर को बुलाकर उन्होंने अरमान अली के घर जाने का हुक्म दिया और कहा कि जितना शीघ्र हो सके उन्हें मेरे पास बुला लाओ। नौकर आज्ञा पाते ही चला गया। करीब तीन घंटे बीत गये। कोतवाल साहब को मानसिक थकावट के कारण झपकियाँ आने लगीं। अन्त में सूर्यास्त के एक घंटे पहले अरमानअली आये। कोतवाल साहब ने उनको देखते ही कहा, "आओ मित्र, मैंने समझा था कि शायद तुम घर पर न होगे, लेकिन अच्छा हुआ कि आपको बुलाने के लिये मैंने आदमी भेज दिया।"

अरमान—अच्छा आपके लिये होगा, पर मेरा तो बहुत नुकसान हो गया।

नूर—कैसा नुकसान?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरमान—भाई साहब, मैंने सबेरे ही आपको बतला दिया था कि मुझे सुलतानपुर जाना है।

नूर—सुलतानपुर जाते थे तो क्यों नहीं गये।

अर०—अभी जाने की तैयारी कर रहा था।

नूर०—मामूली कामों की तैयारी में आपको छः घंटे लगते हैं तो बड़े-बड़े कामों में कितना समय लगेगा ?

अर०—भाईसाहब, जले पर नमक न छिड़को। आपको मालूम होना चाहिये कि मेरा एक असामी जिसके यहाँ लगान के ५००) रुपये बाकी पड़े हैं, आज भाग कर कहीं चला गया।

नूर०—क्या अपना घर द्वार, खेती बारी सब छोड़ छाड़ कर चला गया ?

अर०—नहीं साहब, वह खुद चला गया, घर द्वार छोड़ कर गया, साथ नहीं ले गया।

नूर०—उसके घर में और लोग भी तो होंगे, बाल बच्चे भी तो होंगे ?

अर०—हैं और सभी हैं, लेकिन—

नूर०—लेकिन का कुछ मतलब नहीं, तुम फजूल घबड़ा रहे हो, वसूली तो हो ही जायगी।

अर०—वसूली जरूर होगी, लेकिन अब कब होगी इसका क्या ठिकाना है। मुझे इसी समय रुपये की इतनी सख्त जरूरत है कि मैं उसका बयान नहीं कर सकता।

नूर०—मैंने आपको अपनी तकलीफ दूर करने के लिए बुलाया, पर आप अपना दुःख सुनाने लग गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर०—मेरा दुःख आपके दुःख से बढ़कर है। आप तो हर महीने में तनख्वाह पाते हैं। कोई झंझट नहीं है। मेरी आमदनी की सूरत तो सिर्फ असामी ही हैं। अगर उनसे रुपये न वसूल हों तो सभी काम रुक जायँ।

नूर०—अच्छा तो अब आप की राय क्या है, कुछ मेरी भी मदद कीजियेगा या अपनी ही धुन में रहियेगा।

अर०—आपके लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। सिर्फ हुक्म मिलने की देर है।

नूर०—भाई साहब, बनावटी बातें मुझे जरा भी पसन्द नहीं। जो दिल में हो, जो हो सके वही कहना चाहिये। हुक्म क्या दूँ? आप मेरे नौकर तो नहीं हैं। यहाँ तो दोस्ती की बात है। कभी आपको मेरी मदद की जरूरत पड़ेगी, कभी मुझे आपकी।

अर०—यह बात एक दम ठीक है। दुनियाँ में कोई आदमी अकेला नहीं रह सकता। बगैर दोस्त की जिन्दगी बिलकुल वाहियात हो जाती है।

नूर०—लेकिन सच्चे दोस्त दुनियाँ में बहुत कम मिलते हैं।

अर०—कम तो जरूर हैं, लेकिन ऐसे दोस्तों से दुनियाँ बिलकुल खाली नहीं है।

नूर—सच है। मुझे यकीन है कि आप मेरे सच्चे दोस्त हैं इसीलिए मैंने आज आपको बुलाया है।

अर०—फरमाइये, मैं हर तरह से तैयार हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नूर०––आपसे मैंने किसी समय मुरली का जिक्र किया था, शायद आपको याद होगा।

अर०—हाँ, मुझे याद है, और उसका हाल मैं पहले भी सुन चुका हूँ।

नूर०—मैं आप पर उसका भार सौंपना चाहता हूँ। जबतक उसके लिए कोई खास इन्तजाम नहीं हो पाता तबतक आप उसकी निगरानी रखियेगा। बाबू सूचितसिंह दूसरे काम से बाहर गये हुए हैं। जब तक वे लौट कर नहीं आते, तव-तक मुरली की देखभाल करना, उसको गुण्डों वदमाशों से बचाना, ये सब काम आपको करने पड़ेंगे।

अर०—वहुत अच्छा, अभी वह कहाँ है ?

नूर०—पास ही एक ब्राह्मण का मकान खाली पड़ा हुआ था। मैंने तबतक उसके लिए वहीं सब बन्दोबस्त करा दिया है। सूचितसिंह के सिवा और किसी हिन्दू की उससे हमदर्दी नहीं दिखलायी पड़ती। मेरी जानकारी में किसी विधवा औरत को तकलीफ हो, यह बात मैं सह नहीं सकता। उस मकान में कोई खतरा नहीं है, फिर भी निगरानी की जरूरत जरूर है।

अर०—बहुत अच्छा। मैं हर तरह से आपके कामों में मददगार रहूँगा। फिर भी कल तक मैं अपने खास काम में लगा रहूँगा। परसों से मेरे ऊपर इस काम का भार रहे तो ठीक हो। कल मैं सवेरे ही जरूर सुलतानपुर जाऊँगा और शाम तक सब हाल मालूम करके लौट आऊँगा।

नूर०—ऐसा ही कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर०—अच्छा, मैं अब जाना चाहता हूँ। परसों से आपकी खिदमत में हाजिर हो जाऊँगा।

नूर०—मेरी खिदमत न कहो। यह काम मेरा नहीं खुदा का काम है। इन्सान की भलाई करना हरएक आदमी का फर्ज है। जो ऐसा नहीं करता वह आदमी नहीं जानवर है।

अर०—हाँ हाँ, यह काम जरूर खुदा का है। अच्छा, अब देर हो रही है। मुझे इजाजत दीजिये।

नूर०—जाइये।

मित्र से बिदा होकर अरमानअली घर को चले। घर पहुँचते ही सुलतानपुर जाने का विचार शिथिल पड़ गया। तरह तरह की चिन्ताएँ उनके मन में आने लगीं। वे सोचने लगे—क्या मेरी बीबी की खूबसूरती मुरली के मुकाबले में फीकी नहीं है? क्या उसको अपनाना मुश्किल काम है? रुपये से कौन ऐसा काम है जो नहीं हो सकता। यह औरत जिस हालत में पड़ी हुई है उससे इसको काबू में लाने में ज्यादा दिक्कत न उठानी पड़ेगी। हिन्दुओं की इस बेहूदी चाल से हम मुसलमानों की चमक चली है। सौ वर्ष पहले हम कितने थे अब कितने हो गये? उस दिन मौलवी साहब कह रहे थे कि हम अब दुगने बढ़ गये हैं। अगर हम इसी तरह बराबर बढ़ते रहेंगे तो थोड़े ही दिनों में हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान न रह जायगा। मेरी माहवारी आमदनी किसी भी हालत में छः सौ रुपये से कम नहीं है। मैं ऐसा काम करूँगा जिसका पता यदुनन्दन सिंह को भी न चलेगा औरों की तो बात ही क्या? यह सुनकर मुझे बेहद खुशी हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि जिस मकान में वह रखी गयी है उसी के पास एक बुढ़िया चूरिहारिन है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, वह अव्वल दर्जे की कुटनी है। मुझे उससे इस काम में काफी मदद मिलेगी। इस तरह की दुश्चिन्ताओं में जल्पना कल्पना करते करते अरमानअली बिस्तर पर लेट रहे। थोड़ी देर के बाद उनको नींद ने बेहोश कर दिया। एक घंटा भी न बीता होगा कि एकाएक नौकर के पैर की आहट सुनकर अरमानअली की नींद टूट गयी। वे तुरत उठकर बैठ गये। सूर्य डूब चुका था। चारो ओर अँधियारी फैल रही थी। नौकर को पानी लाने का हुक्म देकर वे फिर उसी चिन्ता में डूब गये। पानी आने पर उन्होंने हाथ मुँह धोकर नमाज पढ़ी और फिर नौकर को पास बुला कर कहा—देखो मुबारक, काजी टोला में जो धर्मशाला है, उसके पीछे एक मन्दिर है। मन्दिर के पास ही एक बुढ़िया चूरिहारिन रहती है। तुम अभी जाओ और उसे फौरन यहाँ बुला लाओ।

मुबारक हुक्म पाते ही चला गया। थोड़ी देर के बाद बुढ़िया आ गयी। अरमानअली ने उससे एकान्त में बड़ी देर तक बातचीत की और उसे अच्छी तरह समझा कर बिदा किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आठवाँ परिच्छेद

पतन के मार्ग में

आधीरात बीत चली है। अरमानअली साहब आराम से बैठ कर धीरे धीरे तम्बाकू पी रहे हैं। पहले कभी उनको सोने में इतनी देर न होती थी। रात के दस बजते-बजते सो जाया करते थे। परन्तु आज उनकी हालत विचित्र दिखलायी पड़ रही है। किसी घोर दुश्चिन्ता से उनका मुख मण्डल फीका पड़ गया है। तम्बाकू पीते पीते वे ध्यानमग्न की तरह दिखलायी पड़ रहे हैं। उनका चित्त अत्यन्त उद्विग्न हो गया है। उनकी दशा ऐसी दयनीय हो गयी है कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

करीब डेढ़ घंटे तक इस प्रकार ध्यान मग्न योगी की भाँति चिन्तित रहने के बाद अरमानअली बिस्तर से उठकर खड़े हो गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और कमरे में इधर उधर टहलते हुए बड़बड़ाने लगे। धीमी आवाज में आप ही आप कहने लगे—क्या वजह है कि अबतक वह बुढ़िया नहीं आयी। मैं जानता हूँ वह इस काम में कितनी पक्की है। उसके वार अक्सर चूकते नहीं है। लेकिन देखें खुदा की क्या मर्जी है। मेरे इस काम में मुझे कोई पाप न होगा। क्योंकि वह इस वक्त बेहाल है, उसका कोई मददगार नहीं है। इस चढ़ती हुई जवानी में उसकी ऐसी बुरी हालत है। देखें, वह पाक इसलाम की शरण में आकर चैन की जिन्दगी बिताती है, या हिन्दुओं के साथ रहकर बिलखती रहती है। इस तरह जल्पना कल्पना करते करते एक घंटा समय और बीत गया। आखिर अरमान अली को झपकियाँ आने लगीं। वे सोना ही चाहते थे कि तब तक बांदी ने आकर जगा दिया। नींद में रुकावट पड़ने से अरमान अली बेहद रंज हुए और रूखी आवाज में बोले—"रात का तीसरा पहर बीत रहा है। इस वक्त तूँ यहाँ क्यों आयी?"

दासी ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया—"आप की बीबी ने मुझे आपके पास भेजा है और फौरन आपको बुलाया है। इसी लिए आयी हूँ। अब आप ही बतलाइये इसमें मेरा क्या कसूर है?" अरमानअली ने और रंज होकर कहा—'जाओ कह दो कि आज तबीयत ठीक नहीं है।' बाँदी ने फिर कहा—"ऐसा नहीं हो सकता। आपको अभी चलना पड़ेगा। बहुत जरूरी काम है। आप फिर तुरत लौट आ सकते हैं। बाँदी की ऐसी जिद देखकर अरमानअली अपनी बीबी के कमरे में गये। उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखते ही न मालूम क्यों उनका हृदय दहल उठा। कपटी हृदय मानो दो टुकड़ों में खण्डित हो गया।

पाठको, जरा अरमानअली की दशा पर ध्यान दीजिये। देखिये उनका चेहरा कैसा फीका पड़ गया है। जो मुख मण्डल प्रात:कालीन श्वेत कमल की भाँति खिला रहता था, जिससे किसी बड़े नवाब की सी ज्योति निकलती थी, वही तेजस्वी मुख-मण्डल महापातकी घृणित व्यक्ति की मुँह की तरह दिखलायी पड़ रहा है। वास्तव में बात भी ऐसी है; ज्योंही हृदय में कपट का बीज अङ्कुरित होने लगता है, परस्पर विरोधी भावों का संघर्ष शुरू हो जाता है, और ज्योंही कोई व्यक्ति पाप मार्ग में पैर रखता है, त्यों ही उसका तेज नष्ट होने लगता है। अरमानअली की ठीक यही दशा है। यद्यपि नयी-नयी औरतों को लाना और पुरानी औरतों को छोड़ते जाना उनके लिए कोई नया काम नहीं है, फिर मी आज उनकी दशा ज्यादा खराब इसलिए हो रही है कि वे अपनी बीबी को छोड़ना नहीं चाहते साथ ही और नया इन्तजाम भी करना चाहते हैं। इसके पहले उन्होंने एक-एक करके चार औरतों को छोड़ा है। इस बीबी की उम्र सोलह की है। दो वर्ष पहले इससे उनकी शादी हुई थी। इसके सौन्दर्य, ठाट-बाट, और अन्य गुणों से वे इतना प्रभावित रहते हैं कि इसके सामने कड़ी आवाज में एक शब्द भी बोलने का साहस नहीं होता। दिन में तीन-तीन बार कपड़े बदलने वाली, प्रतिक्षण शृङ्गार की ही धुन में रहने वाली गजगामिनी, मदमाती इस बीबी की शान-शौकत और रौनक ने उनके हृदय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर जादू सा असर डाल दिया है। वे इसकी आजानुलम्बित केशराशि, बिम्बा के समान अधर, हरिणी जैसी आकर्षक आँखें, सुगठित नासिका, सुन्दर ललाट, सुन्दर गोल कपोल; श्रीफल सदृश उन्नत पुष्ट उरोज द्वय, उन्मत्त हस्तिनी की तरह सुगठित जंघाओं तथा सिंहिनी की भाँति लचीली कमर और वीणा के समान सुमधुर कण्ठ पर एक दम लट्टू बने रहते हैं। इसके सामने एक भी विरुद्ध शब्द बोलने का उन्हें साहस नहीं होता।

सौन्दर्य-सुषमा के प्रभाव में इस प्रकार पड़ने वाले अरमान-अली ज्यों ही अपनी बीबी के कमरे के दरवाजे पर पहुँचे कि उनकी सुधि जाती रही। डरते-डरते वे कमरे के अन्दर पहुँचे। उनको देखते ही रोशनारा पलंग से उठ कर खड़ी हो गयी और उनके दोनों हाथ पकड़ कर आदर के साथ बिठाया। फिर कहने लगी--प्यारे, आज कई दिन हुए तुम मेरे पास नहीं आये। आज तुम्हारा मुँह उदास क्यों दिखलायी पड़ रहा है। शाम को ही बाँदी ने मुझसे बतलाया था कि तुम किसी अफसोस में उदास हो रहे हो। रात होने पर मैं तुम्हारी इन्तज़ारी करती रही। आधी रात बीत गयी, फिर रात का तीसरा पहर बीत रहा है जब मुझसे न रहा गया तो तुमको बुलवाया।

अरमान—प्यारी, तूने मुझे इतनी रात को बुलाकर अच्छा काम नहीं किया। क्या कोई खास बात है ?

बीबी—खास बात क्या है, आज ही से नहीं, कई दिनों से तुम्हारा रंग-ढंग बदलता सा मालूम हो रहा है। समझ में नहीं आता कि आजकल तुम किस धुन में रहते हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर०—जब बुलाना था तो शाम को ही बुला लेती, क्या यह भी कोई समय है ?

बीबी—समय की पाबन्दी कैसी ? क्या तुमको बुलाने के लिए समय की पाबन्दी चाहिये ?

अर०—अच्छा बोलो, क्या मतलब है ?

बीबी—बतला रही हूँ, घबड़ाते क्यों हो ? अच्छी तरह दोनों पैर पलंग पर रख कर बैठ जाओ ।

अर०—जो कुछ कहना हो जल्द कह डालो । रात भर नींद नहीं आयी, अब जोरों की नींद आ रही है । अभी जाने दो या जरूरी काम हो तो बतलाओ, नहीं तो फिर कल परसों बातचीत करना ।

बीबी—अगर तुमको मेरे पास ठहरने में तकलीफ मालूम हो रही हो तो जा सकते हो । लेकिन याद रखो कि मैं मामूली आदमी की बेटी नहीं हूँ । मैं आदमी पहचानती हूँ । तुम्हारी चालचलन बिगड़ती-सी मालूम हो रही है, पर इसका इलाज मेरे पास है ।

अर०—प्यारी, तुम समझती नहीं हो । मेरी तबीयत ठीक नहीं है । तुम्हारे सिवा मेरे दिल में किसी का स्थान नहीं है । नाहक सन्देह न करो। उस दिन मेरे दोस्त जिनका नाम सुलतान खाँ है मेरे पास आये थे और आपनी एकलौती लड़की का जिक्र करते हुए मुझसे शादी करने का इरादा जाहिर किया । मैंने कहा—भाई, तुम भी क्या पागल की तरह बातें किया करते हो, जानते ही हो कि हाल ही में मैंने शादी की है । फिर दूसरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शादी क्यों करूँ, क्या यह भी खेलतमाशा है ? मेरा कोरा जवाब पाकर वे उदास होकर अपने घर चले गये। प्यारी, मेरा खाना, पीना, जिन्दा रहना, उठना बैठना सब काम तुम्हारे लिए है। तुम नाहक शक करती हो। मुझे आज अभी छुट्टी दो। कल से मैं रोज तुम्हारे पास आया करूँगा। इस वक्त सर में दर्द भी होने लगा है।

बीबी—अच्छा, जाओ, लेकिन याद रखो, मेरे साथ दगा-बाजी करोगे तो तुमको ऐसा मजा चखाऊँगी कि उसे सारी जिन्दगी में कभी भूल न सकोगे।

अपनी प्रेयसी की ऐसी चेतावनी सुन कर अरमानअली धीरे धीरे अपने खास कमरे में चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाँ परिच्छेद

परिचय

हरिहरपुर के मुंशी शिवनारायण लाल की धार्मिक प्रवृत्ति से आसपास के गाँव वाले सभी परिचित थे। सर्वत्र लोगों के मुँह से मुंशीजी की प्रशंसा सुनायी पड़ती थी। वास्तव में वे अजातशत्रु थे। सूर्योदय के पहले गङ्गास्नान, पूजापाठ, देवताराधन, दीन-दुखियों का उपकार, गौब्राह्मणों की भक्ति—ये सब मुंशीजी के नित्यकर्म थे। सदा सन्तुष्ट, प्रसन्न मुखमण्डल, करुणा से द्रवित आँखें, मधुरभाषण, कर्तव्यपरायणता, धैर्य, क्षमा, तेजस्विता, उदारता आदि गुणों के कारण मुंशीजी का यशसौरभ दिनपर दिन बढ़ता चला जा रहा था।

एक दिन स्नान के उपरान्त मुंशीजी श्रीमद्भगवत्गीता का पाठ कर रहे थे कि एका-एक उनके कुल पुरोहित पं० शिवनाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिवारी जी उनके घर आये। तिवारी जी के अकस्मात् आने पर मुंशीजी को कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि बिना बुलाये किसी के घर जाना पं० शिवनाथ तिवारी के स्वभावविरुद्ध बात थी। अस्तु, यथा शीघ्र पाठ से निवृत्त होकर मुंशीजी बैठके में गये और तिवारीजी को प्रणाम कर के कुशल समाचार पूछा। तिवारीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—मुंशीजी, आज एक बहुत जरूरी काम के लिए मैं आपके पास आया हूँ। मुझे पूरी आशा है कि आप मेरे इस सङ्कट के समय अवश्य सहायता करेंगे।

मुंशीजी—आपका ऐसा अनुरोध करना शोभा नहीं देता। मैं आप की आज्ञा का पालन करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस कारण मेरे साथ सङ्कोच पूर्ण वर्ताव आप के लिए कभी उचित नहीं कहा जा सकता। क्या मैं आपका कृत्रिम शिष्य हूँ ?

तिवारी—नहीं, नहीं, मुंशीजी, आपको मैं अपना बनावटी शिष्य नहीं समझता। मेरे कहने का मतलब यह है कि बराबर किसी मनुष्य को एक तरह अवकाश नहीं मिलता, कभी-कभी इच्छा के रहते भी, मित्रों, स्वजनों या गुरुजनों का उपकार करना कठिन हो जाता है। मुझे मदद पहुँचाने में सम्भव है कि आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़े।

मुंशीजी—प्रारम्भ में ही कठिनाइयों का खयाल करना ठीक नहीं है। पण्डित होकर भी आप ऐसी गलती क्यों करते हैं ?

तिवारी—विद्वान् लोग उपाय के साथ अपाय की भी बात सोच लिया करते हैं। बड़े-बड़े नीतिकारों ने ऐसा ही उपदेश दिया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुंशीजी—खैर, अब आप अपने मतलब की बात कहिये। मैं आपका काम करने में किसी भी कोशिश से बाज न आऊँगा।

तिवारी—बात यह है कि मेरे बड़े लड़के के विवाह के लिए श्रीनगर से कुछ ब्राह्मण आये हुए हैं। कुण्डलियाँ मिलायी गयी हैं, गणना अच्छा बन रहा है। परन्तु श्रीनगर के लोगों से हम लोगों का कभी सम्बन्ध नहीं रहा। उनके कुलशील, आचार विचार का हाल हमलोगों को कुछ भी मालूम नहीं है। लड़की कैसी है, अन्धी, लँगड़ी, लूली, गूँगी या पगली है इसका कुछ भी पता मुझे नहीं है। मैं ऐसे अज्ञात कुलशीलवालों से कभी अकस्मात् सम्बन्ध स्थापित करके लड़के का जीवन नष्ट नहीं करना चाहता। लग्न के दिन बहुत निकट हैं। उन लोगों का पूरा परिचय जबतक न मिलेगा तबतक मैं विवाह में सम्मति न दूँगा।

मुंशीजी—मुझे इस सम्बन्ध में क्या करना होगा ?

तिवारी—आप श्रीनगर जाइये और कन्यापक्षवालों की सब बातें अच्छी तरह मालूम करके मुझे बतलाइये।

मुंशीजी—पण्डितजी, बड़े ही दुःख के साथ कहना पड़ता है कि कल और परसों मुझे अवकाश नहीं है।

तिवारी—आखिर मेरी आशङ्का ही सच निकली न ?

मुंशी—कहीं बाहर जाने का खयाल मुझे बिलकुल ही नहीं हुआ था। फिर भी सिर्फ कल ही की रुकावट है परसों बाहर जाना मुश्किल नहीं है।

तिवारी—अब आप सच-सच बतलाइये कि जल्द से जल्द यह काम कर सकेंगे या नहीं—?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुंशी—कल के बाद परसों से लगातार दिनरात आपका काम कर सकूँगा।

तिवारी—जल्दी इसलिए कहता हूँ कि देर होने से काम बिगड़ जायगा—श्रीनगर वालों से तिलक में काफी रुपया मिलेगा। यदि इनकी वंश मर्यादा में कोई त्रुटि न होगी तो फिर यह विवाह हो जाना ही चाहिये। क्या कल सवेरे आप वहाँ नहीं जा सकते।

मुंशी—मेरे यहाँ कई महीनों से एक बंगाली का लड़का ठहरा हुआ है। घोर विपत्तियों से किसी तरह उसकी जान बची है। वह इतना घायल था कि प्राणरक्षा की आशा नहीं थी। परन्तु दिनरात लगातार सेवा सुश्रूसा से उसकी हालत अब ठीक हो गयी है? शरीर के घाव सब सूख गये हैं। ईश्वर की कृपा से वह अब सकुशल इच्छानुसार अपने गन्तव्य स्थान को जा सकता है। वह कहाँ जायगा—इसका ठिकाना नहीं है। कल या परसों सम्भवतः वह चला जायगा। तब मैं निश्चिन्त हो जाऊगा।

तिवारी—ठिकाना क्यों नहीं है?

मुंशी—डाकुओं के हाथ से किसी तरह उसकी जान बची है। वह तो मर ही गया था। यह उसका दूसरा जन्म समझना चाहिये।

तिवारी—वह कौन है, किस तरह उसपर डाकुओं ने आक्रमण किया और कैसे उसकी रक्षा हुई।

मुंशी—बंगाल के नदिया का नाम आपने सुना होगा, वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संस्कृत शिक्षा का केन्द्र है। वहाँ से एक ब्राह्मण अपनी कन्या और पुत्र के साथ काशी आ रहा था। वृद्ध की स्त्री भी साथ थीं। पटना से कुछ दूर आने पर किसी निर्जन स्थान में डाकुओं ने इन लोगों पर आक्रमण किया। इन के साथ दो सिपाही और दो मल्लाह भी थे, पर डाकू हथियारबन्द थे। इस कारण ये लोग उनसे हार गये। नाव का सामान लूटकर और इन लोगों को पीटकर वे कहीं चले गये।

तिवारी—क्या लड़के के सिवा और सब आरोही मर गये ?

मुंशी—जी हाँ, मैं एक दिन बहुत सबेरे उधर ही गंगा स्नान करने गया तो देखा एक नाव टूटी-फूटी पड़ी है, पास ही कई लाशें पड़ी हुई हैं।

तिवारी—फिर क्या हुआ ?

मुंशी—ऐसी भयंकर स्थिति देखकर मैं तो बहुत घबड़ा गया और एक एक करके सबकी साँस परीक्षा करने लगा। सभी मरे पड़े थे पर इस लड़के की साँस कुछ कुछ चल रही थी। इसकी बहिन की लाश का पता नहीं था। डाकू अवश्य ही उसको लेकर चम्पत हुए हैं।

तिवारी—फिर आगे क्या हुआ ?

मुंशी—मैंने तुरत कुछ लोगों को एकत्रित किया और गाजीपुर के नवाब साहब को इसकी सूचना दी।

तिवारी—तब ?

मुंशी—तब क्या ? गाजीपुर के नवाब साहब ने मुंगेर के नवाब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब के पास खबर भेज दी और दोनों ओर से डाकुओं की गिरफ्तारी की कोशिश हो रही है।

तिवारी—मालूम होता है कि डाकुओं के पास अपनी नाव थी। उसी पर लूट की सामग्री और लड़की को लेकर वे चले गये होंगे।

मुंशी—हाँ, मेरा भी यही अनुमान है।

तिवारी—आपने जिस अद्भुत घटना का वर्णन किया उससे मेरा रोमाञ्च हो रहा है।

मुंशी—रोमाञ्च की तो बात ही है। इसी का नाम भाग्य विपर्यय है।

तिवारी—अब तो वह लड़का अच्छा हो गया होगा। क्या आप उसे मेरे पास बुला सकते हैं ?

मुंशी०—क्यों नहीं ?

यह कह कर मुंशीजी उसे और मकान के दूसरे खण्ड में ले गये। थोड़ी देर के बाद एक लड़के को साथ ले कर वे बैठक खाने में आये। लड़के ने झुक कर तिवारीजी को प्रणाम किया। आशीर्वाद देकर तिवारीजी ने पूछा—"बच्चा, तुम्हारा नाम क्या है ?

लड़का—मेरा नाम सुखमय चट्टोपाध्याय है।

तिवारी—ब्राह्मण हो ?

लड़का—जी हाँ।

तिवारी—उम्र कितनी है ?

लड़का—बाईस पार करके इस साल तेइसवें में है।

तिवारी—देखने में तुम्हारी अवस्था सोलह से ज्यादा की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं मालूम होती। मैंने सुना है कि तुम्हारे पिताजी तुम लोगों को साथ लिये नाव द्वारा काशी जा रहे थे, रास्ते में ही डाकुओं ने चढ़ाई करके नाव लूट ली, सबको मार डाला और तुम्हारी बहिन को लेकर कहीं भाग गये।

लड़का—जी हाँ, यह सब सच है।

तिवारी—इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारी बहिन अभी जीवित है और ईश्वर की कृपा होगी तो अवश्य ही तुमसे उसकी मुलाकात होगी।

लड़का—ईश्वर की कृपा और आप लोगों के आशीर्वाद का भरोसा है।

तिवारी—अब तो तुम्हारी तबीयत बिलकुल ठीक है न?

लड़का—जी हाँ, अभी कुछ-कुछ शिकायत जरूर है, पर यह भी दो चार दिनों में जाती रहेगी।

तिवारी—फिर आगे क्या करने का विचार है?

लड़का—यहाँ से काशी जाऊँगा। वहाँ मेरे कई परिचित मित्र हैं। उनके सहयोग से मैं वहीं पिता की अन्त्येष्टि क्रिया आदि सम्पन्न करूँगा और फिर उनलोगों की सम्मति के अनुसार बहिन की खोज में लग जाऊँगा।

तिवारी—बच्चा, तुम्हारी दुःख कहानी सुन कर मुझे बहुत दुःख हो रहा है। परन्तु दैवी दुर्घटनाओं पर अपना कुछ वश नहीं। ऐसी हालत में धैर्य धारण करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लड़का—मैं सब समझता हूँ, परन्तु चित्त इतना व्याकुल रहता है कि जिसका वर्णन करना भी कठिन है।

तिवारी—बच्चा, घबड़ाने का कुछ अच्छा नतीजा नहीं निकलता। शान्तभाव से जीवन-संग्राम में सब कठिनाइयों को पार करते हुए आगे बढ़ो।

लड़का—मैं यथा शक्ति आपके उपदेशानुसार चलने की कोशिश करूँगा।

तिवारी जी और सुखमय में इस प्रकार बातचीत हो ही रही थी कि एक आदमी दौड़ता हुआ आया और घबड़ाहट के साथ कहने लगा, "पण्डित जी, मेहमान आये हैं, कहते हैं कि जल्दी तिवारी जी को बुला लाओ।"

सुनते ही मुंशीजी से बिदा होकर तिवारी जी चले गये। उनके जाने पर सुखमय और मुंशीजी दोनों अपने अपने कमरे में चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दसवाँ परिच्छेद

यात्रा की तैयारी

जब सुखमय के शरीर के सभी क्षतविक्षत स्थान अच्छे हो गये और हालत बिलकुल सुधर गयी तो उनका मानसिक कष्ट पहले की अपेक्षा और भी बढ़ गया। उनको सारा संसार असार, असत्य और निरानंदमय मालूम होने लगा। लगातार कई दिनों तक शोकपूर्ण अवस्था में सोचते-सोचते वे पागल से हो गये। अन्त में उन्होंने उस स्थान से चले जाने का निश्चय कर लिया। उनके पास रास्ते के खर्च के लिए पैसा नहीं था यही कठिन समस्या उपस्थित हुई।

सन्ध्या की ठंडी हवा धीरे-धीरे बह रही थी। सुखमय चिन्ताकुल उदास भाव से अकेले बैठकर सोचते रहे। अन्त में उन्होंने मुंशीजी से याचना करना ही कर्तव्य समझा। घर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकल कर वे गंगाजी के किनारे टहलने चले गये। वहीं पं० शिवनाथ तिवारी से मुलाकात हुई। तिवारीजी से दिल की बात निवेदन करने पर उन्होंने कहा, "जिन्होंने कई महीनों तक तुमको पुत्रवत् पालन किया है, जिनकी कृपा से तुम्हारी प्राण रक्षा हुई है, वे अवश्य तुम्हें और भी सहायता करेंगे। तुम सङ्कोच छोड़कर उनसे अपने खर्च के लिए रुपये माँग सकते हो।"

तिवारीजी के कथन से सुखमय के हृदय में आशा का सञ्चार हुआ और टहलने के बाद घर लौटते ही वे पहले मुंशीजी के खास बैठकखाने में गये। मुंशीजी उस समय नथुआ नामक अपने एक भृत्य को डाँट रहे थे—'अरे नथुआ, तूँ इतना कम पानी भरता है कि हमारे घर की बहुएँ अच्छी तरह नहा भी नहीं पातीं। प्रतिदिन पानी घट जाने की शिकायत सुनता हूँ। अगर तूँ काम नहीं करना चाहता तो आज ही चला जा! कहारों की कमी नहीं है। मैं तुरत इन्तजाम कर लूँगा।'

मुंशीजी की क्रोधाग्नि से सहम कर नथुआ कहने लगा—"घर में पानी की तंगी की बात मुझे मालूम नहीं है। कभी ज्यादा पानी भरने के लिए मुझसे किसी ने नहीं कहा। मैं कैसे समझूँ कि पानी के बिना घर में तकलीफ हो रही है।"

"अच्छा जा, अब कभी ऐसी गलती न करना" यह कहकर और हलवाहे, माली आदि सबको तड़पझिड़क से धमका कर मुंशीजी ने सबको बिदा किया। इन झंझटों से खाली होते ही मुंशीजी ने देखा कि सामने सुखमय खड़े हैं। सुखमय को देखते ही मुंशीजी ने आदर के साथ बैठने को कहा और कुशल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाचार पूछा। अवसर अच्छा देखकर सुखमय ने विनीत स्वर में कहा, "मुंशीजी मेरा चित्त अत्यन्त व्यग्र हो रहा है, बहुत समझाने पर भी चञ्चलता बढ़ती ही जा रही है। अभी पं० शिवनाथ तिवारी जी से मुलाकात हुई थी। उन्होंने कहा "अब तुम अच्छे हो गये, अपने पिता की अन्त्येष्टि क्रिया शीघ्र सम्पन्न कर डालो। अब ज्यादा देर करना ठीक नहीं है।" उनके इस उपदेश से मेरी तबीयत और भी अस्थिर हो गयी है। अब एक दिन भी मुझे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा है।"

सुखमय की ये बातें सुनकर मुंशीजी ने कहा, "जब से तुम मेरे यहाँ आये हो, मैंने पुत्रवत् तुम्हारी सेवा सुश्रूषा की है। लगातार औषधि आदि में मेरा काफी खर्च हुआ है। अब तुमको स्वस्थ देखकर मुझे जो प्रसन्नता हो रही है यह वर्णनातीत है। पिता का श्राद्ध यथा शीघ्र करना तुम्हारा कर्तव्य है।" सुखमय ने आर्द्र स्वर में कहा—"आप का उपकार मैं भूल नहीं सकता। अब मैं बिलकुल स्वस्थ हो गया। पिताजी का श्राद्ध करना मेरा कर्तव्य है और साथ ही बहिन का पता लगाने की कोशिश भी करनी होगी। काशी में मेरे कुछ मित्र हैं। मैं उनके पास जाकर केतकी की खोज में पूर्ण उद्योग करने का प्रबन्ध करना चाहता हूँ। आप से यह कहने की जरूरत नहीं है कि मेरे पास रास्ते के खर्च के लिए दाम नहीं है। आप यदि कृपाकरके मुझे काशी जाने का खर्च दें तो मैं जा सकूँ। मेरा चित्त बहुत व्यग्र हो गया है।

सुखमय का निवेदन सुनकर मुंशीजी ने कहा, "बहुत अच्छा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं आपको ५०) रुपये देता हूँ, आपका काम इससे चल जायगा न ?", सुखमय ने आश्वस्त होकर कहा, "भगवान् आपका कल्याण करे। इतने से मैं सब काम चला लूँगा।"

मुंशी—अच्छा, आज आप ठहर जाइये, परसों गाँव के कुछ विद्यार्थी काशी जाने वाले हैं, उनके साथ आप जाइयेगा तो आपको हर तरह से आराम मिलेगा।

सुखमय—दो दिन ठहरने में कोई कठिनाई नहीं है, पर न जाने क्यों मुझे अब एक क्षण एक कल्प के समान मालूम हो रहा है।

मुंशी—जो मनुष्य सुख के दिनों में फूल नहीं उठता और जो दु:ख के दिनों में व्याकुल नहीं होता, वही स्थिर बुद्धि का मनुष्य कहलाता है। उसकी बुद्धि प्रत्येक काम में समान रहती है। इस कारण सुख दु:ख की पृथक पृथक अनुभूति उसे विचलित नहीं करती। भगवान् श्री कृष्ण ने ऐसे लोगों को स्थित प्रज्ञ कहा है।

सुखमय—जी हाँ, मुझे ये बातें मालूम हैं। मेरे गुरुजी कभी कभी गीता भी पढ़ाया करते थे। घर पर मैं प्रतिदिन अन्य नित्य नैमित्तिक कृत्यों के साथ गीता का भी पाठ किया करता था।

मुंशीजी—यह तो उचित ही है। जिस मनुष्य को गीता का ज्ञान नहीं है उसकी सब शिक्षा दीक्षा निष्फल है।

सुखमय—हाँ, मुंशीजी, मैं सब जानता हूँ पर उन्हें अमल में लाने का अभी अभ्यास नहीं हुआ है। इस कारण चित्त घबड़ाता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुंशीजी—घबड़ाना व्यर्थ है। अब आप जाइये आराम कीजिये।

यह कहकर मुंशीजी अपने अन्य काम में लग गये और सुखमय गंगा स्नान के लिए रवाना हुए।

स्वस्थ हालत में सवेरे और सन्ध्या दोनों समय स्नान करने की आदक सुखमय की बचपन से ही थी। इधर जब से शारीरिक पीड़ा से वे अशक्त हो गये थे तब से इस नियम का पालन न कर सकते थे। इधर आज से ही उन्होंने फिर अपने पूर्व के नियमानुसार स्नान पूजा और त्रिकाल सन्ध्यावन्दनादि करने का निश्चय कर लिया।

सुखमय गंगा तट पर पहुँचे तो करारे पर उन्हें एक छोटी सी कुटिया दिखलायी पड़ी। कुटिया के चारो ओर घने वृक्षों की डालियाँ फैली हुई थीं। स्थान इतना मनोहर था कि सुखमय उसे देखते ही मुग्ध हो गये। चारो ओर की विस्तृत खुली भूमि से बहती हुई स्वच्छ हवा के झकोरे लगने से उस स्थान की मोहकता बेहद बढ़ गयी थी।

सुखमय की इच्छा हुई कि एक बार चल कर देखें कि इस कुटिया में कौन है। यह सोचकर वे उस कुटी के दरवाजे पर पहुँचे। कुटी के चारो तरफ खिड़कियाँ लगी हुई थीं इसलिए उस में प्रकाश की कमी नहीं थी। एकाएक कुटी के दरवाजे पर पहुँच कर उन्होंने देखा कि एक जटाजूट धारी गौर वर्ण साधु, जिसकी अवस्था अभी चालीस से ज्यादा नहीं है—भक्ति विह्वल भाव से गीता पाठ कर रहा है और सामने एक प्रौढ़ पुरुष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो देखने में रईस या मालदार मालूम हो रहे हैं भक्ति विभोर चित्त से बैठे हुए हैं । वे ध्यान से सुनने लगे। साधु के मधुर कंठ से उन्हें ये श्लोक सुनायी पड़े—

ब्रह्मण्याध्याय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवांभसा ।
कायेन मनसा बुद्ध्या कैवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये ।
युक्तः कर्म फलं त्यक्त्वा शांतिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबद्ध्यते ।

सुनते-सुनते सुखमय को रोमाञ्च होने लगा—वे एकदम गद्‌गद् हो गये । तब तक साधु की नजर सुखमय पर पड़ी । उन्होंने पास बैठे हुए सेठजी को इशारा किया । सेठजी ने सुखमय को कुटी के भीतर आने का अनुरोध किया । पर सुखमय साधु से दूसरे दिन मिलने का अनुरोध कर सोचते-सोचते स्नानवन्दनादि के लिए गंगाजी के किनारे पहुँच गये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्यारहवाँ परिच्छेद

मित्र समागम

तीसरे दिन सबेरे ही मुंशीजी ने सुखमय को खर्च देकर गाँव के विद्यार्थियों के साथ काशी भेज दिया। धीरे-धीरे चलते चलते एक हफ्ते के बाद वे लोग काशी पहुँचे। नगर प्रवेश करते ही सुखमय ने विद्यार्थियों से पूछा, "भाइयो, क्या आपलोग निरञ्जन शर्मा को जानते हैं ? एक विद्यार्थी ने उत्तर दिया—"हाँ जानता हूँ निरञ्जन नामक एक बंगाली विद्यार्थी है उसने पढ़ने-लिखने में बड़ा नाम पैदा किया है। आप मेरे साथ चलिये तो उनका ठिकाना बतला दूँ।"

सुखमय उक्त विद्यार्थी के साथ-साथ गये और सन्ध्या के ठीक पहले निरञ्जन के घर पहुँचे। निरञ्जन गंगास्नान की तैयारी में थे कि तबतक सुखमय को देखते ही गद्गद हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गये। निरञ्जन ने कहा "भाई, तुम थके मादे आये हो, तब तक विश्राम करो, मैं स्नानादि से निवृत्त होकर आ रहा हूँ, फिर तुमसे निश्चिन्त होकर बातचीत करूँगा।" सुखमय ने कहा—"मैं भी चलूँगा, थोड़ी देर तक ठहरो।"

निरञ्जन—अच्छी बात, थोड़े समय विश्राम कर लो तो एक साथ चलें।

सुखमय—यहाँ से गंगाजी कितनी दूर हैं ?

निरञ्जन—बस, इस मन्दिर के पीछे बीस कदम पर ही गंगाजी का विमल प्रवाह दिखलायी पड़ेगा।

सुखमय—भाई, तुमसे मुलाकात होने से मुझे बहुत सान्त्वना मिली।

निरञ्जन—मित्रों और स्वजनों के मिलने से स्वभावतः सबको प्रसन्नता होती है। मुझे भी तुमसे मिलने से अपार आनन्द मिल रहा है।

सुखमय—भाई, मुझ पर इन दिनों जैसी विपत्तियाँ आयी हैं क्या तुम्हें मालूम है।

निरञ्जन—हमें मालूम है, लेकिन अच्छी तरह मालूम नहीं, क्योंकि मुकुन्ददास दुर्गाचरण का भेजा हुआ यहाँ आया है। दुर्गाचरण ने तुम लोगों की काशी यात्रा की सब बातें लिखी हैं और तुमलोगों का पता लगा कर शीघ्र खबर भेजने का निवेदन किया है। तब से मैं बराबर तुम लोगों का पता लगाता हूँ। मुझे नाव लूटी जाने की खबर मिली है और तुम्हारी बहिन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लापता होने की बात भी मालूम है। तुम दुर्गाचरण को अवश्य ही जानते होगे।

सुखमय—दुर्गाचरण को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। उसी से मेरी बहिन के विवाह की बातचीत पक्की हो गयी थी। विशेष कारणों से विवाह का दिन टल गया। हम लोग तीर्थयात्रा में चले आये। फिर जो घटना हुई तुम सुन चुके हो।

निरञ्जन—नहीं, अभी मुझे घटना का विवरण अच्छी तरह मालूम नहीं हुआ। लेकिन मैं तुमसे आदि से अन्त तक सब बातें मालूम करना चाहता हूँ।

सुखमय—भाई, अब चलो स्नान पूजादि से निवृत्त हो लें तब फिर पीछे बातचीत होती रहेगी।

स्नानपूजादि से निवृत्त होकर जब सब निश्चिन्त होकर बैठे तो गोष्ठी आरम्भ हुई। निरञ्जन ने सुखमय से एक-एक करके सभी बातें पूछीं। सुखमय ने आदि से अन्त तक सब घटनाओं का सिलसिलेवार वर्णन किया। सुनकर निरञ्जन बहुत ही दुःखी हुए और ढाढ़स देते हुए कहा, "भाई इस अनिरिक्त संसार में संयोग वियोग, सुख दुःख आदि आते जाते रहते हैं।"

सुखमय ने कहा, "मैं सब जानता हूँ मित्र, तथापि इस कष्ट के समय जब कि मेरी प्यारी बहिन का कुछ भी पता नहीं चल रहा है, सब समझते हुए भी चित्त ठिकाने नहीं रहता।"

निरञ्जन—अभी तुमने उसकी खोज का क्या बन्दोबस्त किया है।

सुखमय—गाजीपुर के नवाब साहब के पास घटना का हाल लिख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर भेज दिया गया है और समाचार मिला है कि उन्होंने मुंगेर के नवाब बहादुर के दरबार में खबर देकर यथोचित कार्रवाई शुरू कर दी है। दोनों ओर से खोज हो रही है।

निरंजन—प्यारे भाई, यदि तुम्हें ज्योतिष में विश्वास हो तो चलो चलें विश्वनाथ जी के मन्दिर से थोड़ी दूर एक दक्षिणी ज्योतिषी रहते हैं, उनसे इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न करें।

सुखमय—मैं फलित में विश्वास नहीं करता, पर गणित तो अवश्य सत्य है। ज्योतिष शास्त्र में हमारे पूर्वजों ने विशेष उन्नति की थी। प्राचीनकाल के लोग बहुत कुछ सच बतला सकते थे, पर यवनों के आगमन के साथ ही यह विद्या क्रमशः लुप्त सी हो चली है। इस कारण मैं दृढ़ता के साथ इसकी सचाई झुठाई के बारे में कुछ कह नहीं सकता।

निरञ्जन—भाई, मेरे साथ कल तीसरे पहर चलो। मैं तुम्हें जिनके पास ले जाऊँगा, वे इस विषय में यश प्राप्त कर चुके हैं। सुनता हूँ कि कठिन से कठिन गुप्त प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर देने की उनकी शक्ति असाधारण है। अभी उस दिन की बात है कि एक नेपाली ब्राह्मण का लड़का खो गया था। उसने जाकर पूछा तो ज्योतिषी ने बतलाया कि अयोध्या से उत्तर नागा साधुओं की एक मंडली में वह लड़का घूम रहा है। यदि शीघ्र वह बुला कर न लाया जायगा तो एक हफ्ते के बाद वह उस साधुमण्डली के साथ गभीर जंगल में चला जायगा।

सुखमय—क्या उनके कथनानुसार उस नेपाली ने लड़के की खोज की ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर०—हाँ, उसने ज्योतिषी जी को आकर्षण आदि अनुष्ठान का प्रबन्ध करने का खर्च दिया और वह स्वयं अयोध्या की तरफ रवाना हो गया। अयोध्या पहुँचने के साथ ही उसे साधुओं के गरोह के रवाना होने का हाल मालूम हुआ। सुनते ही वह और आगे बढ़ा। जाते जाते ८-१० कोस की दूरी पर उसने उक्त साधु मण्डली को देखा। वहाँ पहुँचते ही उसका लड़का मिल गया।

सुखमय—क्या लड़के ने साधुओं का साथ छोड़ कर अपने पिता के साथ आना स्वीकार किया ?

निर०—हाँ, पिता को देखते ही वह चिल्ला चिल्ला कर रोने लगा और पैरों पर गिर पड़ा।

सुखमय—क्या साधुओं ने इस काम में रुकावट नहीं डाली ?

निर०—नहीं ? साधुओं ने कहा कि हमलोग बलपूर्वक किसी को अपने दल में नहीं मिलाते। जो अपनी खुशी से आना चाहे वह हममें शामिल हो सकता है। यदि तुम्हारा यह लड़का तुम्हारे साथ जाना चाहे तो चला जाय। हम लोगों को इसकी जरा भी परवा नहीं।

सुखमय—भाई, तुम्हारी ये सब बातें स्वप्न सी मालूम हो रही हैं। यदि तुम्हें विश्वास हो तो चलो, कल यह काम कर दिया जाय।

इस प्रकार की बातचीत होते होते रात का पहला पहर बीत चला। रसोईदार ने आकर कहा भोजन तैयार है।

निरञ्जन और सुखमय भोजन करने गये। मुकुन्द दास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक सप्ताह से वहीं ठहरा हुआ था, उसने भी भोजन किया। भोजन के बाद दोनों मित्र बिस्तर पर लेटे और परस्पर बातचीत करते-करते निद्राभिभूत हो गये।

दो तीन घंटे सो चुकने के बाद सुखमय को एक भयानक स्वप्न दिखायी पड़ा। उन्होने देखा एक संकीर्ण उपत्यका है। उपत्यका के दोनों तरफ गगन स्पर्शी-पर्वतों की चूड़ाएँ तुषाराछन्न होकर खड़ी हैं। बीच में एक छोटी सी प्रखर वेग से बहनेवाली स्रोतस्विनी है। उसके दोनों तट स्फटिक शिलाओं से जगमगा रहे हैं। उसी नदी के तट पर एकान्त में एक अशोकवृक्ष के नीचे केतकी खड़ी है। उसका शरीर एक दम पीला पड़ गया है आँखें धँस गयी हैं और आंसुओं से डबडबायी हुई हैं। उसे देखते ही सुखमय उसके निकट दौड़ गया। समाचार पूछना ही चाहते थे कि पश्चिम से एक घुड़सवार आता हुआ दिखलायी पड़ा। उसे देखते ही केतकी चिल्ला उठी, "भैया, मुझे बचाओ, वह डाकू यहाँ भी आ गया।" सुखमय ने चट उसे कन्धे पर चढ़ा लिया और अपने साथियों को पुकारने लगे। बात की बात में आठदस आदमी एकत्रित हो गये और उस आततायी को मार गिराया तथा उसकी लाश नदी में फेंक दी। तबतक नींद टूट गयी और सुखमय आश्चर्य चकित हो बिस्तर से उठकर राम नाम जपने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बारहवाँ परिच्छेद

भण्डा फोड़

अपनी बीवी से विदा होकर अरमानअली साहब जब अपने कमरे की तरफ चले तो रोशनारा ने भी धीरे-धीरे छिपकर उनका पीछा किया। उस परम सुन्दरी ललना के हृदय में अपने प्रियतम की चाल-चलन पर संदेह का बीज अंकुरित हुआ था और उसी बीज को समूल नष्ट करने के विचार से उसने ऐसा किया। जब अरमानअली अपने शयनकक्षा में पहुँचे तो रोशनारा कमरे के पीछे की खिड़की के पास छिपकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खड़ी हो गयी। खिड़की के किवाड़ वन्द थे और उनके छिद्र-पथ से भीतर का दृश्य स्पष्ट दिखलायी पड़ता था। रोशनारा एक टक उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से कमरे के अन्दर झाँकने लगी। वह जिस खिड़की के पास छिपकर खड़ी थी वह भीतरी मकान की तरफ थी। उसने देखा कि अरमानअली बिस्तर पर न जाकर बाहर वाली खिड़की के पास एक छोटी-सी चौकी पर बैठ गये। थोड़ी देर के बाद उसी खिड़की से एक बुढ़िया आयी। उसे देखते ही अरमानअली ने कहा, "आज की रात तेरी इन्तजारी में बीत चली। कहो क्या हाल है?" बुढ़िया ने कहा, "साहब, वह मामूली लड़की नहीं है, ऊँचे खान-दान की पढ़ी लिखी समझदार है। उसको फुसलाना बहुत कठिन काम है। उसकी खूबसूरती का हाल क्या कहूँ वह इन्दर की परी से भी बढकर है। मैंने जाकर उससे इधर उधर की बात-चीत करके चूड़ी पहनने के लिए कहा तो उसने जवाब दिया कि—"चूड़ी मैं क्या करूँगी। क्या तुम नहीं जानती कि मैं बेवा हूँ। जब मेरा सुहाग ही न रहा तो शृङ्गार से क्या लाभ?" मैंने कहा—बेटी, तूँ तो जरूर किसी भले घर की बेटी है। पहले कभी मैंने तुझे इस मकान में नहीं देखा था। इधर कई दिनों से देखने पर मैं चूड़ी पहनाने की इच्छा से तेरे पास आयी हूँ। मेरा तो पेशा ही यही है। घूम-घूम कर अगर चूड़ी न वेचा करूँ तो मेरी रोटी कैसे चलेगी?" उसने फिर कहा—"मैं एक विधवा हूँ, कर्म के फेर से यहाँ आ पहुँची हूँ। बाबू सूचितसिंह का नाम तुमने सुना होगा। उन्होंने कल यहाँ के कोतवाल साहब से राय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर कुछ दिनों के लिए मुझे इस मकान में आश्रय दिलवाया है। वे डाकुओं की खोज में पहाड़ में गये हैं। लौटकर आवेंगे तो मुझे इस मकान को छोड़ देना पड़ेगा। मैं चूड़ी नहीं पहिनती। कहारिन पानी भरने गयी है, अब आती होगी। उससे पूछ लो और अगर वह पहिनना चाहे तो उसको पहना दो।" मैंने कहा—"बेटी, तेरी दुःख कहानी सुन कर मेरी तबीयत घबड़ा रही है। तुम्हारी अभी चढ़ती जवानी है। तुम्हारे सुख आराम और ऐश के सब हौसले पूरे हो सकते हैं। क्या यह उम्र तड़प तड़प कर मरने के लिए है? जिसने इस उम्र में मौज न किया उसका दुनिया में रहना फजूल है। तुम मेरे साथ चलोगी तो रहने के लिए आलीशान मकान, खाने-पीने, पहिनने ओढ़ने की दामी चीजें और नौकर नौकरानियाँ तेरे पैरों पर लोटती रहेंगी। अफसोस छोड़कर जवानी की मौज लो। सूचितसिंह आकर क्या करेंगे। उनसे तेरी कुछ भी भलाई न होगी यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है। इतना कह चुकने के बाद मैंने तुम्हारी तसबीर उसको दिखलायी।

अरमान—तसबीर देखने पर उसके चेहरे की रंगत कैसी बदली?

बुढ़िया—वह और भी नाराज होकर पूछने लगी—"यह कौन है। यह तो कोई मुसलमान मालूम हो रहा है। तुम्हारा मतलब क्या है?" मैंने उसको समझा कर कहा, "बेटी, यह मामूली आदमी नहीं हैं, इनके पास इतनी ज्यादा दौलत है कि बीसों नौकर चाकर इनकी खिदमत में पेट पाल रहे हैं। ये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकेले हैं, अगर तूँ इनके साथ रहो तो सब दुख दूर हो जाय। देखो इनकी चढ़ती जवानी कैसी भली मालूम हो रही है।"

अरमान—इसके बाद उसने क्या जवाब दिया ?

बुढ़िया—उसने तड़प कर कहा, "तू यहाँ से अभी चली जा नहीं तो अभी चिल्लाना शुरू करूँगी और तुमको पिटवा डालूँगी। हम हिन्दू औरतें दूसरे मर्दों की परछाहीं भी छूना पाप समझती हैं। हमारे लिए हमारे पति देवता हैं। पति के मर जाने पर भी हम उनकी पूजा करती हैं। हमलोगों का विवाह पशुओं जानवरों की तरह मौज उड़ाने के लिये नहीं होता। तेरी हिम्मत की बलिहारी है कि मेरे सामने ऐसी बेहूदी बातें कर रही है। तुझे बुढ़िया समझ कर माफ करती हूँ। फिर कभी ऐसी बातचीत न करना।"

बुढ़िया की बात सुनकर थोड़ी देर तक सोचने के बाद अरमानअली ने झुंझला कर कहा, "मेरा खयाल था कि तूँ अव्वल दर्जे की कुटनी है। लेकिन अब इस काम से मुझे मालूम हो गया कि इस काम में तेरी कुछ भी चालाकी नहीं है। एकाएक उसको इस तरह भड़का कर तूने सब काम बिगाड़ दिया। खैर, अभी नाउम्मेद होने की जरूरत नहीं है। तूँ बराबर उसके यहाँ अपना आना-जाना जारी रखना। मैं उसको वहाँ से उड़ा लाने की तरकीब सोच रहा हूँ। वहाँ से उड़ा कर ऐसी जगह में रखूँगा कि फिर पता लगाना कठिन हो जायगा। देखूँ इस चढ़ती जवानी की हालत में वह कब तक सती बनी रहती है। अब तूँ जा, अपना काम कर। तूँने जो मिहनत की है उसके लिए लो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ये दो रुपये देता हूँ। रुपये ले कर चूरिहारिन चली गयी पर अरमानअली निश्चिन्त होने के बदले और भी अधीर होकर धीरे-धीरे आप ही आप बड़बड़ाने लगे—"अहा, उसकी खूब-सूरती कैसी है! उसके शरीर की बनावट इतनी सुन्दर है कि मेरी बीबी भी उसके सामने फीकी पड़ जाती है। उसकी दोनों आँखें मेरे कलेजे में धँस गयी हैं। एक दिन उसको मैंने गंगाजी के घाट पर नहाते देखा था। कमर सिंहिनी की तरह लचीली है। ओठों की ललाई और उसके प्रत्येक अंग की सुघराई मेरे दिल में बार-बार ववंडर उड़ा रही है। उसको अपनाने में दिक्कतें जरूर हैं पर कामयाबी होने पर मौज का ठिकाना न रहेगा। क्या इस काम में मुझे कुछ पाप लगेगा? हर्गिज नहीं, यदि किसी तरह उसको मैं पाक इसलाम की छाया में ला सकूँ तो उसकी जिन्दगी बन जाय और मुझे भी आराम मिले। खुदा भी मुझसे जरूर खुश हो जायगा। लेकिन ये सब काम रोशनारा से छिपाकर करने पड़ेंगे। मैं उसे भी छोड़ना नहीं चाहता। दोनों के साथ चैन की बंसी बजेगी। पहले तो उससे छिपा कर काम करूँगा। पीछे जब उसको अपनी राय में लाऊँगा तब सब बातें खोल कर बतला दूँगा। कल से मैं उसको अपना बहुत ज्यादा प्यार दिख-लाऊँगा जिससे वह मेरी ओर से निश्चिन्त रहे। ऐ खुदा, खूब-सूरती भी क्या ही अजीब चीज है। क्या यह औरत मेरे गले से लिपटेगी। कब मुझे उसको आलिङ्गन करने और उसके बालों को सँवारने का मौका मिलेगा, कब वह मेरे सामने खड़ी होकर 'ऐ प्यारे' कह कर पुकारेगी? इस प्रकार पागल की भाँति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल्पना कल्पना करते-करते अरमानअली को झपकी आने लगी। वे बिछौने पर जाकर लेट गये और तुरत गंभीर निद्रा में निमग्न हो गये।

ऊषाकाल की आरम्भिक किरणें कुछ-कुछ प्रकट होने लगी थीं। चारो तरफ निस्तब्धता छायी हुई थी। रोशनारा ने खड़ी-खड़ी सारा दृश्य देखा और सब बातें सुनी। उसका शरीर जडवत् अचल हो गया। प्रियतम की विश्वासघातकता देखकर उसका सारा शरीर क्रोध से जलने लगा। आँखें रोश के आवेग से लाल-लाल हो गयीं। पैर थरथराने लगे, सिर चकराने लगा और चारो ओर अँधियारी मालूम होने लगी। हृदय फटने लगा, सभी अंग शिथिल पड़ गये। वह मूर्च्छित होकर फर्श पर गिर पड़ी। गिरने की आवाज सुनकर बाँदी घबड़ायी हुई आयी। अरमानअली गहरी नींद में बेहोश पड़े थे। उनको कुछ भी मालूम न हुआ।

दासी रोशनारा को बेहोश देखकर उनको कमरे में ले गयी। उसका शरीर प्रौढ़ावस्था में भी पुष्ट था। उसने बड़े यत्न से सेवा-सुश्रूषा करके रोशनारा को चैतन्य किया। सिर में जहाँ चोट लगी थी, उसने कुछ पीसकर लेप किया। फिर दौड़ कर बवर्ची को जगा कर तुरत मुर्गी का माँस पकाने के लिए कह कर लौट आयी।

यहाँ पर इस बाँदी का संक्षिप्त परिचय कराना पाठकों के लिए रुचिकर होगा। इसकी अवस्था अब ३५ तक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी समय इसकी रौनक के सामने रानियाँ भी फीकी मालूम होती थीं। लाल गेहूँ की तरह इसके शरीर का रंग, कटीली आँखें, गठित शरीर, पुष्ट भुजाएँ, उन्नत नोकीले उरोज आदि सभी वर्णनातीत थे। अब भी इसका रूप बहुतों से बढ़ चढ़ कर था। दस वर्ष पहले अरमानअली का इससे गुप्त सम्बन्ध था। इन्होंने इसके पति को अपने यहाँ पहले नौकर रखा और पीछे उसे जहर देकर मरवाडाला था। इस बाँदी के गुप्त षणयन्त्र से ही इन्होंने अपनी दो बीबीयों को छोड़ा था, पर इस समय की ढलती अवस्था से इनका इससे दिल उचट गया है। इसने भी अपना सम्बन्ध अरमानअली के बबर्ची से स्थापित कर लिया है। इस कारण इसके दिल में रोशनारा के प्रति किसी तरह का द्वेषभाव नहीं है। रोशनारा की बेहोशी दूर होने और आराम मालूम पड़ने के साथ ही दासी ने नम्रता से पूछा, "आप वहाँ क्या कर रही थीं? जब आपको बहुत देर हुई तो मैं आपकी खोज में साहब के कमरे की तरफ गयी। वहाँ जाते ही आप को फर्शपर बेहोश पाया। फिर वहाँ से उठा कर लायी हूँ और अब उम्मेद है आपको कोई तकलीफ न होगी।" रोशनारा की आखें आसुओं से भरी थीं। मुख मण्डल छः महीने के रोगी की तरह विवर्ण हो गया था। कण्ठस्वर शिथिल हो गया था। उन्होंने दासी से धीमे स्वर में कहा, तुम इस समय थोड़ी देर के लिये यहाँ से चली जाओ। मैं तुम्हारे कामों से बेहद खुश हूँ। तुमने आज मेरी जान बचायी। इस समय बातचीत करने में तबीयत नहीं लग रही है। सबेरा तो हो गया लेकिन मैं थक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गयी हूँ, इसलिये थोड़ी देर तक सो लूँगी। तुम जाओ थोड़ी देर के बाद फिर आना।

रोशनारा के आज्ञानुसार दासी वहाँ से चली गयी और रोशनारा भी लेटकर घोर निद्रा में अभिभूत हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरहवाँ परिच्छेद

डाकुओं का सन्धान

बाबू सूचित सिंह कोतवाल साहब से बिदा होकर गंगातट के रास्ते से डाकुओं के अड्डे की खोज में चलने लगे। करीब तीन मील तक किनारे-किनारे चलने के बाद उन्होंने उस जंगल में प्रवेश किया जिसमें वे कुछ दिन पहले अफजल नाम से अमानत के साथ गये थे। वे क्रमशः निविड़ जंगल में घुसते गये। एक दिन का परिचित रास्ता होने के कारण कभी-कभी उनके दिल में सन्देह भी उत्पन्न हो जाता था। परन्तु परम साहसी सूचित सिंह गन्तव्य स्थान की तरफ लक्ष्य रखकर लताओं और कण्टकों को हटाते-हटाते चले जा रहे थे। आधा रास्ता अतिक्रम कर के वे और भी आगे बढ़े। चलते-चलते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने उस स्थान को देखा जहाँ बनवारी को मार कर मुरली की जान बचायी थी। जिस पेड़ पर चढ़ कर उन्होंने बनवारी का पता लगाया था और सती रमणी के उद्धार का उपाय सोचा था वह पूर्ववत् खड़ा था।

हेमन्त कालीन शीतल वायु उनके अंगों को कँपा रहा था। उनके कान बराबर सतर्क थे, कुछ दूर और आगे बढ़ने पर उनको मनुष्यों की गुनगुनाहट सुनाई पड़ी। क्रमशः आवाज ज्यादा स्पष्ट होती गयी। उन्होंने सोचा, अवश्य ही डाकुओं के गरोह के लोग आ रहे हैं। जरूर ये लोग अमानत के दल के हैं। क्योंकि इस जनशून्य जंगल में साधारण गृहस्थ मनुष्य कदापि नहीं आ सकते। दुर्भेद्य लताओं की खड़खड़ाहट निकट-तर और स्पष्टतर होने लगी। बाबू सूचित सिंह रास्ते से कुछ दूर दाहिनी तरफ एक सघन स्थूल पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गये। रास्ता उनसे सिर्फ छः सात गज की दूरी पर था। वह अपनी झोली में से नकली दाढ़ी आदि निकाल कर लगा लिये, विभूति से सारा शरीर रंजित कर लिया, बड़े बड़े रुद्राक्ष की दो मालाएँ पहिन लीं और एक लँगोटी पहिन कर हाथ में त्रिशूल लेकर पक्के साधु हो गये। अपनी छुरी या कटारी और अन्य कपड़े झोले में रखकर मनही में शिव शिव जपते हुए तैयार होकर बैठे रहे।

दो तीन मिनट तक प्रतीक्षा करने के वाद आगन्तुकों के शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ने लगे। मधुआ का कण्ठ स्वर उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्पष्ट पहचान लिया। लताओं के बीच से झाँकते हुए उन्होंने देखा तीन व्यक्ति उतावली से आ रहे हैं। मधुआ कह रहा था, सुखराम, अब इस स्थान पर रहना निरापद नहीं। अमानत की आशङ्का निर्मूल नहीं है। अफजल तो जरूर ही—कोई जासूस था। यहाँ से थोड़ी दूर एक मील के अन्दर ही हम लोगों का अड्डा है और यहाँ तक तो उसने देख ही लिया है। हमारा सर्दार भी आज या कल विन्ध्याचल की पहाड़ियों से लौट आवेगा। वह अफजल के भय से घबड़ा गया है। अच्छा होता कि उसके आने के पहले ही हम भाग चलें।" सुखराम ने कहा, "क्या कहते हो भाई, उस युवती को हम लोग अधरमसिंह को सौंप दें और रुपया आपस में बाँट लें। मेरे पास पहले के दो हजार नगद रुपये और बहुतेरे कीमती गहने हैं। गहनों को बेचकर कुल रुपया एकत्रित करके अपने गाँव को लौट कर खेती करना ही अब मुझे अच्छा लग रहा है। इस काम में बराबर जान खतरे में रहती है, कभी सुख की नींद सोने का मौका नहीं मिलता।" मधुआ ने कहा, "भाई, मैं तो अधरमसिंह का नौकर बन जाऊँगा। अमानत के यहाँ से मुझे वहाँ ज्यादा आराम मिलेगा। रसोई बनाने की झंझट तो वहाँ न रहेगी। उनकी रसोई में ही खा लिया करूँगा। उस लड़की को तुम्हारी गैरहाजिरी में कल ही मैंने अधरमसिंह के यहाँ पहुँचा दिया।

सुखराम—अरे, यह क्या? कल ही मैं न रहा और तुमलोगों ने मुझसे दगाबाजी की, रुपये में कुछ भी हिस्सा मुझे नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मधुआ—घबड़ाओ मत मित्र, रुपया तुमको भी मिलेगा। उन्होंने कल देने का वादा किया है।

सुख०—क्या वह उनके मकान के अन्दर रखी गयी है ?

मधुआ—नहीं, नहीं, उनके गाँव लक्ष्मणपुर से एक कोस पूरब एक निर्ज्जन मैदान में प्रचण्ड बर का पेड़ है। उसी पेड़ से सटा हुआ सैकड़ों वर्ष का पुराना एक मकान है। उसकी दीवारें अब भी दृढ़ हैं। वह स्थान इतना भयङ्कर है कि भूतों के भय से दिन के समय भी कोई मनुष्य वहाँ जाने का साहस नहीं करता। उसी गाँव में रामनाथ अहीर मेरा परम मित्र है। जब कभी मैं जाता हूँ दूध दही खाते पीते मेरी तबीयत ऊब जाती है। उसीकी सहायता से हम लोग इसे वहाँ उस पुराने मकान की एक कोठरी में रख आये हैं।

सुखराम—तब तो जो कुछ रुपया मिलेगा उसमें रामनाथ भी हिस्सा लेगा ?

मधुआ—नहीं नहीं, हमारे रुपये में से वह क्या लेगा। उसको तो अधरमसिंह ने दस बिघे खेत दिये हैं और कुछ माहवारी तनख्वाह भी देते हैं। एक हजार नकद मिलेगा—उसको हमलोग आपस में बँटवारा कर लेंगे।

सुखराम—क्या अधरमसिंह को मालूम है कि तुमने अमानत से छिपा कर यह काम किया है।

मधुआ—हाँ, हाँ, मैंने उनसे सब हाल बतला दिया है। वे जानते हैं कि अमानत विन्ध्याचल की पहाड़ियों में भीलनियों से जड़ी बूटी संग्रह करने गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुखराम—भाई, आखिर हम हिन्दू ही हैं और अमानत मुसलमान है। पेट के कारण हम जो पाप कर रहे हैं उसका परिणाम क्या होगा यह सोचते ही हृदय दहल उठता है। अधरमसिंह अधर्मी होने पर भी अमानत से तो जरूर अच्छा होगा।

मधुआ—अच्छा हो या बुरा, हमें रुपया तुरत मिल जाना चाहिये।

सुखराम—अगर उन्होंने रुपया न दिया तो क्या कर लोगे?

मधुआ—इसकी कुंजी मेरे पास है। सारी दुनियाँ उलट जाय पर मेरा मित्र रामनाथ मुझसे दगाबाजी नहीं कर सकता।

इस तरह आपस में बात चीत करते-करते दोनों गंगा जी के किनारे पहुँच गये। बाबू सूचितसिंह धीरे-धीरे साधुके वेषमें सात आठ कदम की दूरी से उनका पीछा कर रहे थे। गंगातट पर पहुँच कर वे आसन जमा कर बैठ गये पर सुखराम और मधुआ तटभूमि से होते हुए पूरब की तरफ चले गये।

सूचितसिंह को अपनी सफलता पर अपार आनन्द हुआ। विश्राम कर चुकने पर उन्होंने साधु का नकली वेष बदल दिया और अपनी सरकारी पोशाक पहिन कर तेजी से कदम बढ़ाये चलना शुरू किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौदहवाँ परिच्छेद

उत्साह-भंग

सन्ध्या की हवा का वेग क्रमशः बढ़ता जा रहा था। सूचित सिंह बहुत तेजी से कदम बढ़ाये जा रहे थे। कोतवाल साहब के मकान पर पहुँचने के लिए वे बेहद घबड़ा गये थे। आधी रात के पहले या सबेरा होने के पहले लक्ष्मणपुर ससैन्य पहुँचना जरूरी समझ कर उनका चित्त बहुत चञ्चल हो उठा। शीतकाल में भी उनके शरीर से पसीना टपक रहा था। सोचते-सोचते सूचित सिंह ने मुंगेर नगर में प्रवेश किया। स्वच्छ चाँदनी से नगर की अट्टालिकाएँ जगमगा रही थीं। नानाविध चिन्ताओं से डूबे बाबू सूचित सिंह कोतवाल साहब के मकान के पास तंग गली में पहुँचे। गली बराबर जनशून्य रहती है। कोतवाल साहब से मिलने के पहले उन्होंने मुरली को देख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेना उचित समझा। यह सोच कर वे उस मकान के पास गये जहाँ मुरली रखी गयी थी। वहाँ जाकर उन्होंने अनुसन्धान किया तो मालूम हुआ कि कल परसों से वह औरत दिन-रात रोती रहती है। उसकी रुलाई से पड़ोस के लोग घवड़ा उठे हैं। इस हालत में रात के समय उसके आराम में विघ्न पहुँचाना उन्होंने अनुचित समझा। क्योंकि उस समय मकान में बिलकुल निस्तब्धता थी। अनुमान से यह समझ कर कि मुरली अभी गहरी नींद में है उसे जगाना अनुचित समझ लौट जाना ही अच्छा समझा। वे तुरत लौट पड़े और कोतवाल साहब के मकान पर पहुँचे। ड्योढ़ी पर दरवान पहरा दे रहा था। उससे संक्षेप में बतला कर उन्हों ने कोतवाल साहब के पास खबर भेज दी। उनके आने का समाचार सुनते ही कोतवाल साहब व्यग्र भाव से अपने बैठक खाने में पहुँचे और बाबू सूचित सिंह को बुलवाया।

सूचितसिंह कोतवाल साहब के सामने पहुँचते ही सलाम करके सब हाल कहने लगे। उन्होंने आदि से अन्त कुल बातें बतला दीं और कहा कि इसी समय लक्ष्मणपुर सशस्त्र सिपाहियों के साथ जाना जरुरी है।

कोतवाल साहब ने पूछा, "आप के कहने से मुझे यह बात मालूम हो गयी कि वह लक्ष्मणपुर में रखी गयी है। पर ठीक ठीक पता लगना चाहिये कि वह किस मकान में है। जब तक यह मालूम न होगा तब तक उसका उद्धार होना झंझटों से खाली नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूचितसिंह—अब कुछ झंझट नहीं है। आपको अभी सभी बातें मालूम नहीं हुई हैं। लक्ष्मणपुर से एक कोस पूरब जनशून्य मैदान में एक पुराना मकान है। मकान क्या उसे एक महल ही कहना चाहिये। उसी मकान में उस लड़की को बदमाशों ने बन्द करके रक्खा है।

कोतवाल—लड़की का उद्धार तो हो जायगा पर साथ ही डाकुओं की गिरफ़्तारी भी होनी चाहिये। क्या डाकू का सर्दार भी वहीं मिलेगा।

सूचित—नहीं, डाकू का सर्दार तो विन्ध्याचल की पहाड़ी में घूमने गया है। जंगल में उसके अड्डे के पास तक मैं पहुँच गया था। शायद वह कल तक लौट आवेगा। उसको पकड़ने के लिए वहीं जाना पड़ेगा। बाकी सब लक्ष्मणपुर में कल रात को गिरफ्तार कर लिये जायँगे। क्योंकि कल रात को वहीं उस पुराने मकान में अधरमसिंह उनको रुपया देनेवाला है।

कोतवाल—अच्छा, मैं सब समझ गया। अब देर करने की जरूरत नहीं है। आप अभी अपने घर जाइये और खाना पीना करके कुछ समय विश्राम कर लीजिये। विश्राम करके आठ सिपाहियों के साथ आप तेजी से लक्ष्मणपुर के लिए रवाना हो जाइये। आपके पीछे-पीछे मैं भी आऊँगा। रातोरात हम सब पहुँच जायँ तो अच्छा हो।

सूचित—जी हाँ, रात रहते ही पहुँचने से अच्छा होगा। हम सब किसी गुप्त स्थान में छिप रहेंगे और दिनभर किसी तरह बिताकर रात को सबको गिरफ़्तार कर लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोतवाल—यही तो मुश्किल है। वहाँ छिपने की जगह कहाँ मिलेगी ?

सूचित—इसका बन्दोबस्त मैं कर लूँगा। उस मकान के पास हजारों वर्ष का एक पुराना तालाब है। तालाब के चारों ओर चार गुफाएं बनी हुई हैं। लोग कहते हैं कि पुराने जमाने में वहाँ साधु संन्यासी रहा करते थे। गरमी के दिनों में गुफाएँ बहुत ही आराम देती हैं। एक मील में विस्तृत जलाशय छोटा सा समुद्र मालूम होता है। उसके शीतल जल के स्पर्श से बहनेवाली हवा इतनी ठंडक पहुँचाती है कि उसका बयान नहीं किया जा सकता।

कोतवाल—अच्छा, अब देर करने का मौका नहीं है। अगर तुम छिपने का बन्दोबस्त कर लोगे तो बड़ी खुशी की बात होगी।

सूचित—मैं सब इन्तजाम वहाँ का कर लूँगा।

कोतवाल—अच्छा, अब आप जाइये।

कोतवाल साहब से विदा होकर बाबू सूचितसिंह अपने घर गये। खाने-पीने के बाद वे घोड़े पर सवार होकर आठ हथियारबन्द घुड़सवारों के साथ लक्ष्मणपुर की तरफ रवाना होना ही चाहते थे कि निरुआ नामक उनका नौकर बिलखता हुआ आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

बाबू सूचितसिंह ने उसको इस तरह के विनीत वेष में उदास अपराधी की भाँति खड़े देखकर पूछा—निरुआ, कहो क्या हाल है ? अच्छी तरह हो न ? वहाँ उनको कोई कष्ट तो नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरुआ—हुजूर, कहते कलेजा फट रहा है। कल शाम को मैं तरकारी लाने गया था। लौट कर देखा कि मकान सूना पड़ा हुआ है—और उनके कमरे की सब चीजें गायब हैं।

सूचित—क्या कहते हो। क्या ऐसा भी सम्भव है? तुम तो सन्ध्या को ही तरकारी लाने गये होगे?

निरुआ—जी हाँ, शाम से कुछ देर हो गयी थी और मुझे बाजार से लौटने में भी कुछ देर हुई।

सूचित—राम राम! आफत पर आफत। जीवन में मुझे कभी चैन नहीं है। मैं तुमको क्या कहूँ। खैर मुझसे कोई बात छिपी नहीं रह सकती। मैं दो तीन दिनों में लौटूँगा तो इस सम्बन्ध में उचित कार्रवाई से बाज न आऊँगा। तुम जाओ। अब इस समय मैं तुमसे कुछ कहना नहीं चाहता।

निरुआ से ये बातें करके तेज घोड़े पर सवार होकर बाबू सूचितसिंह क्षण भर में अदृश्य हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

कुमार्गगामी

जिस रात को अरमानअली साहब की काली करतूत का पूरा पता रोशनारा को चल गया, उसी समय से वह बराबर उनकी ताक में रहने लगी। वे कब क्या कर रहे हैं, किससे बातचीत कर रहे हैं; सोये हैं या बैठे हैं, चिट्ठी लिख रहे हैं या पढ़ रहे हैं, टहलने कहाँ जा रहे हैं आदि सब बातें प्रतिक्षण की वह मालूम कर रही थी। चूरिहारिन से मुलाकात होने के दूसरे दिन ही सन्ध्या को जब अरमानअली अपने खास नौकर मुजफ्फर को साथ लिये अँधेरे में बाहर निकले तो रोशनारा ने भी उनका पीछा किया। उसने अरमान-अली को कपड़े पहिनते देखकर तुरत अपनी मर्दानी पोशाक पहन कर मर्द का वेष बना लिया और लुक-छिप कर बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चालाकी से अरमानअली का पीछा कर रही थी। यदि उसे कोई देखता तो उसको अनजान राहगीर समझ कर चुप रहता।

कई गलियों और टेढ़ी सड़कों को पार करते हुए अरमान-अली एक जनशून्य उजाड़ मुहल्ले में पहुँचे। संकीर्ण गली में एक बहुत ही पुराने पर मजबूत मकान के दरवाजे पर जाकर मुज-फ्फर ने अपने डंडे से ठुकठुकाया। ठुकठुकाने की आवाज सुनते ही एक विंशति वर्षीया युवती झमाझम बाहर निकली। अरमान-अली पास ही खड़े थे। रोशनारा भी गली के मोड़ पर खड़ी खड़ी देख रही थी। मुजफ्फर उस औरत से बहुत धीरे-धीरे कहने लगा—'वह अच्छी तरह है न ?'

युवती—जी हाँ, चलिये, वह अभी नींद में बेहोश पड़ी है।

मुजफ्फर—तव चलो, हमारे, साहब आज उसे इस मौके पर अच्छी तरह देखलें।

युवती—अच्छा, आप लोग धीरे धीरे मेरे पीछे पीछे चले आइये।

मुजफ्फर—देखो प्यारी, जैसे हो उसको अव मेरे मालिक के घर पहुँचाना होगा।

युवती—ऐसा न कहिए। वह हर्गिज जाने को राजी न होगी। अगर आपलोग चाहें तो बेहोशी की हालत में यहाँ से भी उसे ले जा सकते हैं।

मुजफ्फर—वहाँ से बेहोश करके लायी गयी है, मालूम होता है यहाँ से भी उसी तरह ले जाने की तरकीब काम में लानी पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युवती—जरूर, राज़ी ख़ुशी से उसको आपलोग अपने साथ हर्गिज न ले जा सकेंगे। यह बात मैं बहुत ही अच्छी तरह जानती हूँ।

मुजफ्फर—अब तक तुमने हम लोगों के लिए जो मिहनत की है उसके लिए तुमको यह हार इनाम में दिया जाता है। फिर काम पूरा होजाने पर बहुत सी चीजें तुम्हें दी जायंगी।

इतनी बातचीत होने पर युवती ने हाथ से आगे बढ़ने का इशारा किया। बाहर का दरवाजा पार होकर आँगन में पहुँच कर तीनों सीढ़ियों से होते हुए चढ़ने लगे। अंधकार में किसी तरह टटोलते टटोलते वे सब ऊपर की मंजिल पर पहुँचे। उस मंजिल पर चारो तरफ छोटी छोटी कई कोठरियाँ थीं। फिर उस मंजिल से वे तीसरे मंजिल पर गये। वहाँ उत्तर तरफ एक बड़ा कमरा था। कमरे के बीच में एक दरवाजा था। दरवाजे के दोनों तरफ दो खिड़कियाँ थीं। दाहिनी ओर की खिड़की पर मुजफ्फर को और बाईं ओर की खिड़की पर अरमानअली को खड़े रहने के लिए कहकर युवती किवाड़ खोल कर कमरे के अन्दर गयी। फिर क्षण भर के बाद उसने धीमी आवाज में मुजफ्फर से कहा—आप लोग खिड़की से अच्छी तरह देखिये।

कमरे में दीप की क्षीण रेखा प्रकाशित थी। अरमानअली ने झाँक कर देखा—एक अनुपम सुन्दरी युवती नींद में बेसुध पड़ी हुई है। उसके लम्बे-लम्बे केश घुटनों तक लहरा रहे हैं। अँग-अँग पर मानो सारी सुषमा बिराज रही है। अरमानअली ने मुजफ्फर के कान में धीरे से कहा—'इसकी रौनक तो पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से भी बढ़ी-चढ़ी मालूम होती है। मुजफ्फर, अभी यह नींद में बेसुध है लेकिन जब कभी जग सकती है। इसलिए यह जड़ी लो और चुपचाप उसकी नाक के पास इसको थोड़ी देर तक रखो। फिर वह कम-से-कम २४ घंटे तक बेहोश पड़ी रहेगी, उसकी नींद न टूटेगी।' मुजफ्फर जड़ी लेकर मुरली की पलँग के पास गया और जड़ी को उसकी नाक के पास रखा। अरमानअली ने कहा—अब झटपट इसको उठा लो और नीचे ले चलो, गाड़ीवान तो आ गया है न? मुजफ्फर ने कहा, 'जरूर आ गया होगा। वह इस मकान को अच्छी तरह जानता है। मैंने इसका पूरा हाल उसे वतला दिया है। वह पहले भी कई बार इसमें आ चुका है।' "अच्छा, जल्दी करो, देर करना फजूल है—" यह कह कर अरमानअली सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए एकदम नीचे गली में पहुँच गये और वहाँ उन्होंने देखा कि गाढ़ीवान गाड़ी लिये खड़ा है।

मुजफ्फर मुसलमान होने पर भी दया ममता से वञ्चित नहीं था। अबसे दस वर्ष पहले वह मुसलमान हो गया था। उस समय उसका नाम मनोहरसिंह था। युवावस्था की पहली उत्तेजना में उसका एक नीच जाति की लड़की से प्रेम हो गया। उसकी बदनामी इतनी फैल गयी कि जातिवालों ने उसके साथ खाना-पीना उठना-बैठना सब छोड़ दिया। इस तरह लोगों से तंग हो कर एक दिन यह अपनी प्रेमिका को साथ ले कर अपने गाँव से भाग निकला और दोनों मुसलान बन कर या मुसलमान के नाम से रहने लगे। बाहरी तौर से उसने अपना मुसलमानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम रख लिया था, पर उसके सब काम हिन्दुओं के ही थे। वह प्रति दिन सबेरे नहा धोकर खुद खाना पकाता था और उसकी प्रेमिका अपने लिए अलग पकाती थी। मुरली को कंधे पर उठाते हुए उसके मनमें बेहद ग्लानि हुई—इस तरह परस्त्री को स्पर्श करना कितना गर्हित कर्म है—यह समझ कर उसका रोम रोम पश्चात्ताप से जलने लगा। उसने सोचा अब इस बदमाश की नौकरी से तबीयत बिलकुल ऊब गयी; हे भगवन् , कब इस नीच से मुझे छुटकारा दिलाओगे। मैंने एक के प्रेम में घर द्वार जाति बिरादर सब छोड़ दिया। तबसे दूसरी औरतों की ओर कभी कुदृष्टि से नहीं देखा। लेकिन, इस नीच के यहाँ रहने से मुझे ऐसे ऐसे कुकर्म करने पड़ रहे हैं।

मुजफ्फर के आने में देर देख कर अरमानअली बहुत घबड़ाये। वे फिर ऊपर जाना ही चाहते थे कि तब तक मुजफ्फर मुरली को लिये आया और सभी गाड़ी में सवार हो गये। मुरली को बेहोशी की हालत में अन्दर बैठाकर वे दोनों एक तरफ़ के आसन पर बैठ रहे। गलियों के कई मोड़ पार करके गाड़ी चौराहे पर पहुँची। फिर तो अरमानअली के कहने से गाड़ीवान ने बेधड़क गाड़ी चलाना शुरू किया। गाड़ी तेज चलायी जाने के साथ ही रोशनारा धीरे से गाड़ी के पीछे बैठ गयी। कई सड़कों को पार करती हुई गाड़ी एक पुराने मकान के पास पहुँची। अरमानअली ने मुजफ्फर से कहा, "अब हमलोग अपनी जगह पर आ गये। तुम जानते हो यह मकान भी मेरा है। इन दिनों यह बेमरम्मत खाली पड़ा हुआ है। यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतना बड़ा मकान है कि एक दो नहीं पचासों आदमी इसमें छिपा कर रखे जा सकते हैं। मैं अभी सदर दरवाजा खोलता हूँ। इसमें एक दो नहीं पाँच हिस्से हैं। सबसे बीच के हिस्से में इसको रखना होगा—जिससे कि चिल्लाने पर भी न सुनायी पड़े। तुमको अगर यहाँ अकेले रहने में तकलीफ हो तो अपनी बीबी को ले आओ और एक खण्ड में रहो। इस औरत के लिए एक हिन्दू नौकरानी का बन्दोबस्त करना जरूरी है। वही इसकी खिदमत करेगी। तुम सिर्फ इस मकान का पहरा देना। तुम मेरे पुराने नौकर हो। अगर तुम मेरे कहने के मुताबिक काम करोगे तो तुम्हारी तनख्वाह बढ़ा दूँगा। कल शाम को फिर इसको देखने और खुद बात-चीत करने आऊँगा। जहाँ तक जल्द हो सके इसको राजी करना चाहिये।

इस तरह अरमानअली ने मुजफ्फर को समझा कर अपने घर का रास्ता पकड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोलहवाँ परिच्छेद

आत्म-रक्षा

अरमानअली के चले जाने पर मुजफ्फर बालिका को मकान के तीसरे खण्ड में ले गया। वहाँ एक हवादार और स्वच्छ सुन्दर कमरे में मुरली के रहने का बन्दोबस्त कर के तुरत कहारिन का बन्दोबस्त करने के लिए बाहर चला गया। ईश्वर की कृपा से एक कहारिन तुरत ही काम करने को राजी हो गयी।

सूर्यदेव की किरणों से प्राची दिशा आलोकित हो उठी। भक्तों के मधुर कंठ से आनेवाली भक्ति सङ्गीत-ध्वनि से दिशामण्डल गूँज उठे। चारो तरफ चहल पहल का पूर्ण आभास प्रकट होने लगा।

तब तक मुरली की बेहोशी पूरा हो चली थी। होश होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही वह अपने को अपरिचित स्थान में अकेली पाकर चीख कर रोने लगी। तब तक मजदूरिन आ गयी और उसने बहुत समझा कर सब हाल बतलाया। मुरली ने उससे विनीत स्वर में कहा—'बहिन, जैसे हो वैसे मुझे अभी कोतवाल साहब के घर के पास-वाले मकान में पहुँचा दो। वह मकान बाबू सूचितसिंह का है। इस काम के लिए मैं तुम्हारी सदा कृतज्ञ बनी रहूँगी।'

मजदूरिन ने कहा, 'बहिन जी, मैं आप का दुःख देखकर बहुत दुःखी हो रही हूँ। लेकिन बाहर के फाटक पर एक मुसलमान पहरा दे रहा है। उसके सामने से तुमको लेकर निकलना एकदम कठिन है।

मुरली—अच्छा, इसके बारे में हम पीछे आपस में राय कर लेंगी। यदि तुम मुझ से मिलकर काम करोगी तो किसी दिन मालोमाल बन जाओगी। इस जगह पर ज्यादा देर तक ठहरने से मेरी बदनामी और भी बढ़ जायगी।

मजदूरिन—अभी तुम नहा धो कर पूजा पाठ करो, ईश्वर का नाम लो, तब तक मैं चौका बर्तन वगैरह सब ठीक कर देती हूँ। सामान लाने के लिए मुझे दाम मिला है, बाजार से खरीद कर ला देती हूँ। रसोई बनाओ, भोजन करें, फिर कोई न कोई यहाँ से भागने का उपाय सोच लिया जायगा।

मुरली—दाम कहाँ से मिला ?

मजदूरीन—मैंने तुमसे पहले ही बतला दिया कि यह सब काली करतूत अरमानअली की है। आज शाम को वे खुद यहाँ आने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुरली—अरमानअली का नाम मैंने सुना है। वह बड़ा भारी बदमाश है। उसने उस मकान में मेरे पास एक कुटनी भेजी थी। वह जात की चूरिहारिन थी। चूड़ी पहनाने के बहाने मेरे पास आयी थी। फिर मैं कैसे उस मकान से यहाँ लायी गयी हूँ यह बात मैं बिलकुल नहीं जानती।

मजदूरिन—जैसे हो अब तुम इनके पंजे में पड़ गयी हो। इनसे छुटकारा पाना असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है।

मुरली—लेकिन शाम होने के पहले यहाँ से जरूर भाग चलना होगा।

मजदूरिन—मैं तुम्हारे लिए कोई कोशिश बाज न आऊँगी। हिन्दू होकर हिन्दू की मदद न करूँगी, ब्राह्मणी को रक्षा का उपाय न करूँगी तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जायगा, नरक में भी जगह न मिलेगी।

मुरली—अच्छा अब जाओ बाजार से सौदा लेकर आओ। मैं इन दुष्टों से जरा भी नहीं डरती। कापुरुष कपट छल, दगाबाजी से जो कुछ कर ले, पर सामने ताकने की हिम्मत नहीं पड़ सकती। तुम जानती हो सती स्त्री का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। कष्ट सहते सहते मैं और भी पत्थर सी बन गयी हूँ। पहले कुछ भी कष्ट मिलने पर मैं घबड़ा जाती थी और रोने लगती थी, पर अब मुझे मालूम हो गया कि रोना बिलखना, बदमाशों से आरजू करना ये सब फजूल हैं। ईश्वर का भरोसा रखकर दुष्टों से अपनी रक्षा का प्रयत्न प्राण निछावर करके भी करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मजदूरिन—हाँ बहिन, दुष्ट पुरुषों के अत्याचार से स्त्री जाति का बचना तब तक सम्भव न होगा जबतक स्त्रियों में खुद अपने बाहुबल का भरोसा न हो।

मुरली—बहिन, मैंने शरीररक्षा, प्राणरक्षा और धर्म पालन को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। इस विपत्ति में तुम्हारा साथ मिलने से मुझे आशा है कि शीघ्र ही मैं फिर दुष्टों से आत्मरक्षा करने में समर्थ होऊँगी।

मजदूरिन—बहिन, मेरा बचपन पढ़ने-लिखने और अच्छी संगति में बीता। मैंने अच्छे-अच्छे धर्मग्रन्थों के उपदेश आदि सुने हैं। मुझे कहीं भी जरा भी भय नहीं मालूम होता। यदि हम स्वयं अपनी सतीत्वरक्षा में दृढ़ रहेंगी तो दुष्ट हमारा कुछ भी न कर सकेंगे।

मुरली—तुमने पढ़ना-लिखना कैसे सीखा, तुम्हारे घर में कौन हैं।

मजदूरिन—बहिन, इस समय ज्यादा बात-चीत करने का मौका नहीं है, पर इतना बतला देती हूँ कि मेरी माता एक बड़े रईस के घर में काम करती थीं। उन लोगों की लड़कियों के साथ मैं भी पढ़ती थी। वहाँ पुरुष या घर की स्त्रियाँ मुझे भी अपनी लड़की से किसी तरह कम नहीं जानती थीं। जब मेरी सब सखियाँ विवाह योग्य अवस्था को पहुँची और मैं भी सयानी हुई तब हमारा पढ़ना-लिखना बन्द कर दिया गया और इधर-उधर वरों की खोज होने लगी। थोड़े ही दिनों में मेरी सखियों का, जो कुल चार थीं, विवाह ठीक हो गया और मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विवाह की भी बात-चीत मेरी माता की सम्मति से पक्की हो गयी। संयोग से मुझे भी सुन्दर सुशील और शिक्षित वर मिला। परन्तु बहिन, कहते कलेजा फटा जा रहा है—तीन साल विवाह सुख भोगने के बाद मैं विधवा बन गयी।

मुरली—आह बहिन, मैं तो अपने पति का मुख भी न देख सकी। विवाह होने के बाद गौना होनेवाला था, तब तक वे इस संसार से चल बसे। तब तक संसार में प्रतिक्षण मुझे दुःखों और कष्टों का ही सामना करना पड़ रहा है। विवाह क्या चीज है उसका सुख क्या है यह मैं बिलकुल नहीं जानती।

मजदूरिन—बहिन, तुम तो ब्राह्मण की लड़की हो। तुम्हारे लिए पुनर्विवाह का मार्ग बन्द है, मैं चाहूँ तो विवाह कर सकती हूँ, लेकिन मैंने भी सारा जीवन तप करने का निश्चय कर लिया है।

मुरली—तुम्हारा यह आदर्श प्रशंसनीय है। वासनाओं के दमन में जो आनन्द है—वही परमानन्द है।

मजदूरिन—बहिन, रह-रह कर उनकी सूरत मेरी आँखों के सामने इस वक्त नाचने लगती है कि पर पुरुष की ओर वासना पूर्ण दृष्टि डालने में घृणा मालूम होती है।

मुरली—ठीक है बहिन, विवाह करने की जरूरत नहीं। यह सब हमारे पूर्व जन्म के कर्मों का फल है। कुछ संयम से आत्मरक्षा करने और ईश्वरार्पण में ही हमारा कल्याण है।

मजदूरिन—हां बहिन, तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन इस जमाने में लोगों की नीच वृत्तियाँ जिस तरह बढ़ती हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिखलायी पड़ रही हैं, उनमें रहकर अपनी रक्षा करना भी साधारण बात नहीं है।

मुरली—इस जमाने और उस जमाने का यह भेद ठीक नहीं है। अच्छे बुरे मनुष्य सदा से पाये जाते हैं। प्राचीन काल में सतियाँ थीं तो कुलटाएँ भी थीं।

मजदूरिन—लेकिन, बहिनजी, दुष्टों से बचना सहज नहीं है।

मुरली—सहज नहीं है तो घबड़ाने से सहज नहीं हो सकता। यह निश्चय कर लो कि शरीर में प्राण रहते दुष्टों का सामना करके सतीत्व की रक्षा करोगी तो कल्याण अवश्य ही हो जायगा।

मजदूरिन—अरे बहिन, बातचीत करते-करते इतना दिन चढ़ आया, बाजार से सामान खरीद लाऊँ तो फिर पीछे बातचीत होगी।

मुरली—जाओ, मैं भी तबतक स्नान पूजा-पाठ अदि से निवृत्त हो लेती हूँ।

मजदूरिन बाजार में सौदा लाने गयी और मुरली शौच स्नान आदि करके ईश्वराराधन करने लगी। इस प्रकार करीब डेढ़ पहर दिन बीत गया। फिर मजदूरिन के आने पर दोनों ने मिलकर रसोई बनाना शुरू किया और आपस में इस प्रकार बातचीत होने लगी—

मुरली—क्या बहिन, यहाँ से भाग निकलने के बारे में अबतक तुमने कुछ सोचा है?

मजदूरिन—दोपहर को मुजफ्फर को फाटक पर बैठे बैठे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झपकियाँ लेते कल मैंने देखा था, यदि उसी तरह आज भी झपकी लेने लगेगा तो हम दोनों सीधे निकल जायँगी।

मुरली—अगर वह जग जायगा तो ?

मजदूरिन—फाटक से एक कदम बाहर निकल सकने पर फिर वह या कोई हमारा क्या कर लेगा ?

मुरली—शोर मचाने या चीत्कार करने का इरादा मेरा नहीं है। यह काम इस तरीके से होना चाहिये जिससे किसी को कुछ भी मालूम न हो। यदि गुप्तरूप से कार्रवाई करने की जरूरत न होती तो सबसे सहज तरीका सरकारी अफसरों को सूचित करना था।

मजदूरिन—हाँ, हाँ, चुपचाप भाग निकलने में ही आपका और मेरा कल्याण है। मुझे न तो यह मुसलमान अच्छी तरह जानता है न तो इसका मालिक अरमानअली ही।

मुरली—अरमानअली प्रकट रूप से हमारे खिलाफ कुछ कार्रवाई न कर सकेगा क्योंकि वह भी तो अपनी बदनामी से डरता होगा।

मजदूरिन—हाँ, हाँ, मैं आपका कहना समझ गयी। आपको लोक लाज से बचना है और उसको भी।

दो पहर दिन वीत कर तीसरा पहर आ गया। मुरली और मजदूरिन दोनों ने भोजन किया और मजदूरिन बाहर के फाटक पर मुजफ्फर का हाल मालूम करने गयी। वहाँ जाकर उसने देखा कि मुजफ्फर निश्चिन्त भाव से घोर निद्रा में निमग्न है। यह देखते ही वह झटपट मुरली के पास लौट गयी और सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाचार कह सुनाया। मुरली ने कहा—"देखो बहिन, अब जरा भी देर करने या सोचने का मौका नहीं है। यही समय भाग चलने का है। यदि यह मौका हाथ से निकल जायगा तो पछताना पड़ेगा। तुरत मेरा सामान कुछ तुम ले लो और कुछ मैं। खास-खास चीजें ले लें और झटपट यहाँ से कहीं दूसरी जगह निकल चलें। फिर मौका देख कर तुम बाबू सूचितसिंह को खबर देना। वे हमारा फिर इन्तजाम कर देंगे। कोतवाल साहब बड़े नेक आदमी हैं, बाबू सूचितसिंह के मकान में, जो खाली पड़ा हुआ था, उन्होंने मुझे इसलिए जगह दी थी कि वह हिन्दुओं का मुहल्ला है। अरमानअली को अपना मित्र समझ कर उन्होंने उस पर मेरी देखभाल का भार सौंपा था।

मजदूरिन ने तब तक जरूरी सामान एकत्रित कर लिया और अपने सुगठित शरीर पर लादकर मुरली को पीछे पीछे चलने का इशारा किया। दोनों झटपट एक खण्ड के बाद दूसरे और तीसरे को पार करके बाहरी फाटक पर पहुँचे। मुजफ्फर तब तक मृतव्यक्ति की तरह लेटा पड़ा था। दोनों फाटक से बाहर निकलती गयीं। आस-पास उस मकान के सामने किसी ने भी उन दोनों को मकान से बाहर निकलते नहीं देखा। क्षण मात्र में दोनों गली के मोड़ से एक गली के बाद दूसरी गली पार करती हुई एक खपड़ैल पर साफ सुथरे मकान के सामने पहुँचीं। मजदूरिन ने 'कहा, बहिन यही मेरा मकान है—मैं अकेली यहीं रहती हूँ। अपनी सुविधा के लिए दो आदमियों को किराये पर बसा लिया है। तुमसे मैंने पहले ही बतला दिया था कि मेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विवाह पढ़े लिखे धनवान व्यक्ति के साथ हुआ था। वे मेरे लिए इतनी सम्पत्ति छोड़कर मरे जिससे मैं किसी तरह नमक रोटी खाकर जी सकती हूँ। मुजफ्फर के कहने से मैंने सिर्फ दस दिन के लिये तुम्हारी खिदमत का भार १००) रुपये में लिया था। यह रुपया मुझे उसने पहले ही दिया। तुम जानती हो, अरमानअली बड़े आदमी हैं ही। ऐसे काम छिपकर किये जाते हैं और रुपया पानी की तरह वहाया जाता है। उसने यह नहीं वतलाया था कि किस हालत में किस औरत की खिदमत करनी है। मैं नहीं समझती थी कि इस काम में उन लोगों की ऐसी जालसाजी और नीचता है' यह कह कर उसने अपना दरवाजा खोला और दोनों मकान के अन्दर घुस गयीं।

———०———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्रहवाँ परिच्छेद

ज्योतिषी की सूझ

सवेरे नींद टूटते ही सुखमय चट्टोपाध्यायने आद्योपान्त दुःस्वप्न का विवरण निरंजन से कह सुनाया। सुनकर निरंजन ने कहा, "भाई, स्वप्न देखने से घबड़ाते क्यों हो ? विपत्ति में, चिन्तितावस्था में जो स्वप्न दिखलायी पड़ते हैं उनके कुछ विशेष फल नहीं होते। चलो आज सन्ध्या को उस ज्योतिषीजी की परीक्षा लें।" सुखमय ने कहा—मैं तैयार हूँ, किसी तरह मेरी वहिन का पता मिलना चाहिये। इस प्रकार विचार करने के बाद दोनों मित्र प्रातःकाल सन्ध्या बन्दनादि में लग गये।

दिन के भोजन के उपरान्त परस्पर वार्तालाप होते होते सन्ध्या हो चली। प्रथम के प्रास्तावानुसार दोनों मित्र ज्योतिषी के मकान की ओर चले। कई गलियों और सड़कों से घूमते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूमते सान्ध्या वायु सेवन करते हुए दोनों मित्र ज्योतिषीजी के मकान पर पहुँच गये।

एक स्वच्छ कमरे में ज्योतिषीजी/आसन जमाये बैठे थे। सामने दो पुरुष हाथ जोड़कर बैठे हुए थे। दोनों अगान्तुकों को देखते ही बैठने का इशारा करके ज्योषीजी ने कहा—"आप का नाम निरंजन शर्मा और आपका नाम सुखमय चट्टोपाध्याय है न? आप लोग कहाँ से आ रहे हैं?" अपरिचित ज्योतिषी के मुँह से अपने नाम सुनकर दोनों आश्चर्य में पड़ गये। सुखमय ने कहा—"हम लोगों का मकान बंग देश में है।" ज्योतिषीजी ने कहा—"कृपया आपलोग यहाँ से शीघ्र चले जाइये, मैं बंगालियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।" ज्योतिषो की ऐसी कटूक्ति सुनकर निरंजन क्रोध से तमतमा उठे, पर किसी तरह अपने को संयत रख कर कहने लगे—"क्यों महाशयजी, बंगालियों से आपको इतनी चिढ़ क्यों है?" ज्योतिषी ने कहा—"गत वर्ष तोन सज्जन जो मेदिनीपुर जिले के रहने वाले हैं, मेरे पास आये, बात की बात में तर्क वितर्क और झगड़ा करके चले गये।"

निरंजन—एक या दो चार के व्यवहार से रुष्ट होकर सबके साथ ऐसा वर्ताव करना कभी उचित नहीं है और ऐसा तुच्छ विचार आपको शोभा नहीं देता।

ज्योतिषी—हाँ, हो सकता है कि आप लोग सज्जन हैं पर वंगदेश के लोगों के प्रति मेरी धारणा अच्छी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरंजन—दक्षिणी ब्राह्मणों से बंगीय ब्राह्मणों में विद्वत्ता कम नहीं है। हमारा नवद्वीप विद्या का केन्द्र है।

सुखमय—निरंजन, व्यर्थ के तर्क से क्या लाभ? यदि इनकी इच्छा नहीं है तो चलो, मैं तो तुम्हारे कहने से यहाँ आया, मेरी इच्छा न थी।

सुखमय का ऐसा भाव देखकर ज्योतिषी ने कुछ सोच कर कहा—"अच्छा, अब आपलोग मेरी पिछली बातों को भूल जाइये और जो कुछ कहना चाहते हों कहिये। पहले आप लोग यह बतलाइये कि यहाँ किस मतलब से आये हैं।"

सुखमय ने कहा—"पण्डित जी, मैं प्रश्न प्रकट नहीं करना चाहता। मेरा प्रश्न मूक रहेगा।

ज्योतिषी—मूक प्रश्न का विचार मैं नहीं करता। मेरे यहाँ का ऐसा नियम नहीं है।

सुखमय—अच्छा, प्रश्न खोलकर बतलाने में भी कोई हर्ज नहीं है। उत्तर ठीक ठीक मिलना चाहिये। आज लगभग सात महीने हुए मेरी बहिन लापता हो गयी है। बतलाइये वह कहाँ किस अवस्था में है और कब वह मेरे पास आवेगी।

ज्योतिषी—मैं समझता हूँ कि काशी और मगध के बीच कुछ दुराचारियों ने उसका हरण किया है। पहले वह जिस स्थान पर छिपायी गयी थी अब वहाँ से दूसरी जगह हटायी गयी है। वहाँ लोग उसके उद्धार के लिए जा रहे हैं। अब उसके उद्धार में कुछ भी देर नहीं है। कल तक वह शत्रुओं के पंजे से मुक्त हो जायगी। इस समय आप लोगों को उसके कल्याण के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए कुछ अनुष्ठान कराना चाहिये। क्रूर ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से रक्षा पाने का यह अति उत्तम उपाय है। अनुष्ठान के बाद आप लोग तुरत मुंगेर के लिए रवाना हो जाइये। वहाँ पहुँचते ही आप लोगों का कष्ट दूर हो जायगा।

सुखमय—खर्च क्या लगेगा ?

ज्योतिषी—सामग्री लाने में दस रुपये लगेंगे। और पन्द्रह रुपये दक्षिणा।

निरंजन—इस दुर्दिन में संकट में इनके पास इतने रुपये कहाँ से मिलेंगे। यदि आप दस रुपये में सब काम कर सकें तो ठीक है।

इसके बाद बार बार अनुरोध करने से ज्योतिषीजी ने दस रुपये में अनुष्ठान करना स्वीकार किया। निरंजन ने अपने पास से दस रुपये ज्योतिषी को दिये और सुखमय को वहाँ से चलने का इशारा किया। तदनन्तर दोनों मित्र ज्योतिषी के मकान से चल पड़े।

रास्ते में चलते चलते सुखमय ने कहा—"भाई निरंजन, यह मनुष्य ज़रूर जानकार है।" निरंजन ने कहा—"जानकार तो है पर लोभी भी जबर्दस्त है। कड़ी बातें बोलता है पर हृदय में छल-कपट नहीं है।" इस तरह की बात-चीत करते-करते दोनों मित्र अपने डेरे पर पहुँच गये।

रात्रि भोजन के उपरान्त दोनों मित्रों में कुछ देर तक बात-चीत हुई। दोनों ने दूसरे दिन मुंगेर के लिए प्रस्थान करने का निश्चय किया और सुख पूर्वक निद्रागत हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अठारहवाँ परिच्छेद

घोर-संकट

जब बाबू सूचितसिंह कोतवाल साहब से डाकुओं की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में बातचीत करके लक्ष्मणपुर के लिए रवाना हुए तब रात एक पहर बीत चुकी थी। उसी समय जंगल के अड्डेपर अमानत विन्ध्याचल की पहाड़ियों से लौटा। वहाँ पहुँचते ही उसने देखा कि केतकी का कमरा सूना पड़ा हुआ है। साथियों का भी कहीं पता नहीं है। इस स्थिति से अत्यन्त व्यथित होकर वह भूमिपर लेट गया। थोड़ी देर तक लेटे रहने पर भी उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्ति न मिली। अन्त में वह उठा और उन्मत्त की भाँति जंगलों में इधर उधर दौड़ने लगा। उसकी आँखें लाल लाल हो गयीं और मुखमण्डल पीला पड़ गया। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह बालक की भाँति रोने लगा। इस प्रकार छटपटाते छटपटाते प्रायः सारी रात बीत चली। जब एक पहर रात रही तो वह थक कर अपने कमरे में गया और लेटते ही नींद के आवेश में वेहोश हो गया।

उधर घोड़ा दौड़ाये बाबू सूचितसिंह लक्ष्मणपुर पहुँचे और बहुत जल्द बृहत् जलाशय के अन्तर्गत गुफाओं में सबके छिपे रहने का इन्तजाम किया। निर्जन विस्तृत मैदान में उनकी मण्डली के सिवा किसी मनुष्य की आहट तक न थी। देखते देखते कुछ लोग तो थके रहने के कारण लेटकर विश्राम लेने लगे पर बाबू सूचितसिंह को चैन नहीं थी। एक एक क्षण उनके लिए कल्प के समान बीत रहा था, और घड़ियाँ गिनते गिनते शाम हुई। चारो तरफ अँधियारी फैलने लगी। बादू सूचितसिंह ने अपने सब सिपाहियों को सावधान रहने का आदेश दिया और स्वयं बदमाशों के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

थोड़ी देर के बाद चार पाँच मनुष्य उधर आते हुए दिखलायी पड़े। बाबू सूचितसिंह ने सबको सतर्क रहने के लिए कहा और अगुलियों से इशारा करते हुए दिखलाया कि गुण्डे मकान के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। उन्होंने नम्र स्वर में कहा "भाइयो, ज्यों ही गुण्डे मकान के भीतर जाते हैं हमलोग बाहर से मकान घेर लें और झटपट एक एक करके गिरफ्तार कर लें।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतना कह कर बाबू सूचितसिंह धीरे धीरे अपने दल के साथ मकान की तरफ बढ़ने लगे। उन्होंने स्पष्ट देखा कि मधुआ, सुखराम अन्य दो आदमियों के साथ मकान के अन्दर घुस गये। तुरत ही सूचितसिंह ने अपने साथियों के साथ उस मकान तक पहुँचे और हथियारबन्द हालत में भीतर घुसने की कोशिश करने लगे। परन्तु दरवाजा भीतर से बन्द था। किसी तरह हिलाने पर जरा भी टस से मस न हुआ।

अन्त में सिपाहियों ने किवाड़ तोड़ने की राय दी, क्योंकि बाहर चारो तरफ घूमकर देखने पर भी अन्दर घुसने का कोई रास्ता नहीं मिला। तदनुसार इन लोगों ने बड़े परिश्रम से किवाड़ तोड़ डाले और बात की बात में भीतर पहुँच कर ललकारा। एक एक कर के सब बदमाश गिरफ्तार कर लिये गये और सबके हाथ में हथकड़ियाँ डाल दी गयीं।

तदुपरान्त बाबू सूचितसिंह ने अपने साथियों से कहा— "अब तक कोतवाल साहब नहीं आये। मुझे अभी अमानत को, जो डाकुओं का मुखिया है गिरफ्तार करना है।" सूचितसिंह सुखराम को पहचानते थे।" उन्होंने उसे इशारे से अपने पास बुलाया और पूछा—"अपने कर्म का फल अब तुम लोगों को मिलने वाला है। मैं तुम से कुछ बातें पूछना चाहता हूँ। यदि ठीक ठीक बतलाओगे तो समझ लो कि तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा। अभी तुमलोगों का विचार होने वाला है। विचार होने पर सजाएँ दी जायंगी। बतलाओ तुम्हारा सरदार इस समय कहाँ है और वह किस तरह कहाँ किस हालत में रहता है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुखराम ने कहा—"हमलोग जिस दिन आये उस दिन वह डेरे पर नहीं था, विन्ध्याचल की पहाड़ियों में कुछ जड़ी बूटी संग्रह करने गया था। आज जरूर आ गया होगा।" "उसके साथ कोई और है ?" "हमलोगों के दल का एक आदमी उसके साथ है उसका नाम जैलाल है। आप बड़े दयावान मनुष्य मालूम होते हैं। बाबू साहब, क्या मुझे छोड़ देने की आप कृपा कीजियेगा ? मुझे ज्यादा दिनों तक रोक रखियेगा तो बड़ा भारी अपराध होगा। मेरी स्त्री और बच्चे खाने पीने बिना मर जायँगे। आपको हत्या का पाप लगेगा" यह कह कर वह तुरत सूचितसिंह के पैरों पर लुढ़क गया।

तब तक कोतवाल साहब अपने साथ तीन सिपाही लिये घटनास्थल पर पहुँच गये। उनके आने के पहले ही सारी कार्रवाई हो चुकी है, यह देखकर उनको बड़ी खुशी हुई।

सूचितसिंह ने कहा—"आप तो मेरे पीछे-पीछे आने वाले थे, पर न आ सके क्या कोई रुकावट पड़ गयी थी ?"

कोतवाल—बगैर रुकावट के मैं झूठा कैसे बनता। आपके आने के थोड़ी देर बाद ही मुझे पता लगा कि मुरली लापता हो गयी है। उसी की खोज का इन्तजाम करने में कई घंटे समय बीत गये।

सूचितसिंह—मुझे यह बात उसी समय मालूम हो गयी थी जब मैं आपके यहाँ से बिदा होकर लक्ष्मणपुर आने की तैयारी कर रहा था, परन्तु मैंने उस समय रुकना ठीक न समझा।

कोतवाल—यहाँ से चलने के बाद इसके बारे में ठीक ठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन्तजाम किया जायगा। पहले हाथ का काम पूरा हो जाना चाहिये। बाबू साहब, आप की बहादुरी से मुझे बेहद खुशी हुई है। वहाँ पहुँचते ही मैं नवाब साहब से आप की बहादुरी का बयान करूँगा। जरूर ही वे आप की तरक्की करेंगे। अब यहाँ ठहरना फजूल है। इन गुण्डों को वहाँ ले चलना चाहिये। नवाब साहब इनका फैसला करेंगे और हर एक को सजा देंगे।

सूचितसिंह—कोतवाल साहब, जो सर्दार सब अनर्थों की जड़ है उसको बिना गिरफ्तर किये मैं घर न जाऊँगा। अभी मेरा काम अधूरा रह गया है।

कोतवाल—आपका अकेला जाना ठीक नहीं है, अच्छा होता कि आप पहले मेरे साथ ही घर चलते और वहाँ से कुछ सिपाहियों के साथ फिर उस सर्दार को पकड़ने के लिए रवाना होते।

सूचितसिंह—लेकिन तब तक वह अपने अड्डे से चला जा सकता है। इसलिए मैं जरा भी देर नहीं करना चाहता। मेरी भुजाओं में बल की कमी नहीं है। आप की दी हुई तलवार मेरे पास मौजूद है। मैं क्षत्रिय हूँ। एक डाकू मेरा सामना नहीं कर सकता। लड़ना, शत्रुओं को परास्त करना, दुःखियों की रक्षा करना ये सब मेरे कर्तव्य हैं। आप खुशी से मुझे इजाजत दीजिये। वह डाकू मेरा बाल भी बाँका न कर सकेगा।

सूचितसिंह की साहस भरी बातें सुनकर कोतवाल साहब ने कहा, "अच्छा भाई, अगर आप में इतनी हिम्मत है तो जाइये। सवेरे मैं भी चार सिपाहियों को आपके पास भेजूँगा। आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपना रास्ता बतला दीजिये।" इतनी बात-चीत करने के बाद कोतवालसाहब अधरमसिंह, मधुआ, रामनाथ और सुखराम को लेकर मुँगेर के लिए रवाना हो गये और बाबू सूचितसिंह टेढ़े रास्ते से इधर-उधर घूमते हुए जंगल की तरफ चले।

जंगल के विकट मार्ग से आधे रास्ते पहुँचते ही बाबू सूचितसिंह को सामने एक मनुष्य दिखलायी पड़ा। निर्जन स्थान में घोर अरण्य में मनुष्य को देख कर उनको बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह आगे-आगे जा रहा था और सूचितसिंह उसके पीछे-पीछे। सूचितसिंह तेज जाना चाहते थे पर वह धीरे-धीरे चल रहा था इसलिए तेज चलने का उपाय न था। रास्ता संकीर्ण था, जब तक आगे का पथिक सम्हल कर एक तरफ खड़ा न हो जाय तब तक दूसरे के लिए आगे बढ़ने की गुंजाइश नहीं थी। सूचितसिंह ने उस व्यक्ति से कहा, "अरे भाई, जरा खड़े हो जाओ, मैं आगे चला जाऊँ, तुमको धीरे-धीरे चलना है और मुझे जरूरी काम करना है।"

आगेवाला पथिक एकदम बहरे की तरह धीरे-धीरे चल रहा था, उसने सूचितसिंह के कहने पर कुछ भी ध्यान न किया, मानो बहरा था। जब सूचितसिंह ऊब गये तो उन्होंने क्रोधित होकर ललकार कर उससे कहा, "क्यों जी, तुम कौन हो ? एक तरफ खड़े हो जाओ, मुझे आगे चले जाने दो।" लेकिन वह पूर्ववत् धीरे-धीरे कदम उठाये चल रहा था। अपने कार्य में विलम्ब और विघ्न होते देख कर सूचितसिंह को बहुत ही क्रोध हुआ। वे झट उसके ऊपर उछल पड़े और कूदकर एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थप्पड़ लगाया। परन्तु थप्पड़ लगा नहीं मानो हवा में उड़ गया। सूचितसिंह ने उसको पकड़ कर नीचे गिराना चाहा और अपनी म्यान समेत तलवार से जोरों से ढकेला, पर वह ज्यों का त्यों सामने खड़ा रहा।

इस प्रकार के विपत्ति काल में पड़ कर धीरे-धीरे लड़ते झगड़ते चलने पर भी बाबू सूचितसिंह डाकुओं के अड्डे के पास पहुँचे। वे समझ गये कि उनकी लड़ाई किसी मनुष्य से नहीं बल्कि प्रेत से हो रही है। परम साहसी बाबू सूचितसिंह का साहस भी टूट गया। वे उन्मत्त की भाँति चिल्लाने लगे। कोलाहल सुनकर जैलाल दौड़ता हुआ आया। उसने बाबू सूचितसिंह को देखते ही पहचान लिया। वह उनके गाँव का रहने वाला था। बचपन में दोनों साथ ही खेलते थे। वह उनके हलवाहे का लड़का था। कुछ बड़े होने पर बाबू सूचितसिंह ने नवाब साहब की नौकरी कर ली। उनके चले जाने के बाद जैलाल भी गाँव छोड़कर इधर-उधर घूमता रहा और कुछ दिनों के बाद डाकुओं के दल में शामिल हो गया। गाँव के लोगों को उसकी हालत मालूम नहीं थी। वे समझते थे कि वह कहीं नौकरी करता है। जैलाल हर तीसरे चौथे महीने अपने गाँव पर जाता और स्त्री पुत्र कन्या और अन्य परिजनों से मुलाकात करता।

उस घोर अँधियारी रात में सूचितसिंह को वहाँ देखकर उसे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इसके अलावा उनका चिल्लाना सुनकर वह और भी आश्चर्य में पड़ा। उसने हाथ जोड़कर बाबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब से पूछा—"मैं आपके सामने खड़ा हूँ, आप किससे डर रहे हैं ?"

सूचितसिंह ने कहा—"देखो देखो यह सामने आ रहा है।" उस समय काले बादलों से आकाश घिर जाने से रात और भी भयावनी हो चली। देखते-देखते बिजली चमकने लगी और बादल गर्जने लगे। एकाएक बिजली की चमक में सूचितसिंह ने देखा कि सामने बनवारी खड़ा रोषभरी आँखों से उनकी तरफ देख रहा है। उसको देखते ही वे पागल की भाँति चिल्लाने लगे। डाकुओं का अड्डा बिलकुल पास था। उनकी चिल्लाहट से अमानत की नींद टूट गयी। वह तुरत दौड़ता हुआ सूचितसिंह के पास पहुँचा और पूछा—"तुम कौन हो ? क्यों चिल्ला रहे हो ? कहाँ से आये हो ?"

सूचितसिंह ने हाथ बढ़ाकर कहा—"देखो, यह सामने खड़ा है।" अमानत को कुछ भी नहीं दिखलायी पड़ा। थोड़ी देर में बनवारी लापता हो गया। उसे गायब देखकर सूचितसिंह कुछ शान्त तो हुए पर उनका हृदय धड़क रहा था।

सूचितसिंह को चुपचाप खड़े देखकर अमानत ने पूछा—"क्यों जी, बतलाते क्यों नहीं ? यहाँ किस मतलब से इतनी रात को आये हो ? तुम कौन हो, जल्द बतलाओ नहीं तो मैं तुमको पकड़ कर इस पेड़ में बाँध रखूँगा।" प्रेत से लड़ते-लड़ते बाबू सूचितसिंह की बुद्धि चकरा गयी थी। वे पागल से हो रहे थे। उनको अपने कर्तव्य का बोध नहीं रहा। उन्होंने एकाएक कहा—"मैं इस जंगल में डाकुओं को गिरफ्तार करने आया हूँ। यहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाकुओं का सर्दार रहता है। उसका नाम अमानत है। क्या तुम ही अमानत हो ?"

इतनी बात सुनते ही अमानत झट दौड़कर अपने कमरे में गया और तुरत तलवार लेकर आया। सूचितसिंह ने दौड़कर उस पर वार किया, पर उसने बड़ी चालाकी से बचकर इन पर चोट लगायी। बाबू सूचितसिंह तलवार के आघात से बचने के लिए पीछे कूद गये पर पेड़ से टकरा जाने से लुढ़क कर जमीन पर गिर गये। ऐसा मौका देखकर अमानत झट उनके ऊपर चढ़ बैठा। इतनी घटनाएँ क्षण भर में हो गयीं। जैलाल नाटकीय दृश्य देखता अवाक् था। अब उससे न रहा गया। उसने झट अपने सर्दार के हाथ से तलवार छीन ली।

जैलाल की इस करतूत से अमानत के शरीर में खून खौलने लगा। वह सूचितसिंह को छोड़ कर खड़ा हो गया और गर्ज कर कहने लगा, "नमकहराम, तूँ दुश्मन को मदद दे रहा है ? क्या तूँ नही जानता कि यह हम लोगों को गिरफ्तार करने आया है ? शायद इसी ने मेरे साथियों को पकड़ा है और औरत को भी भगा ले गया है। जल्दी बोलो नही तो मैं अभी तुमको भी सजा देता हूँ।"

सूचितसिंह ने देखा कि अमानत जैलाल पर वार करना चाहता है। वे घायल हो गये थे। उठने की हिम्मत नहीं थी, पर जैलाल की दुर्दशा की आशङ्का से वे इतने उत्तेजित हुए कि पीठ में भयानक दर्द के रहते भी उठकर खड़े हो गये। उन्होंने जैलाल से कहा, "तुम्हारी बहादुरी से मैं बहुत खुश हूँ, इसको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकड़ने में पूरी मदद दो तो तुमको काफी इनाम दिलवाने का बन्दोबस्त करूँगा।"

यह कह कर वे अमानत पर झपटे। वह भाग कर भी नहीं जा सकता था, क्योंकि सामने जैलाल खड़ा था। तब तक सूचितसिंह ने उस पर तलवार चला दी। तलवार के वार से बचने की इच्छा से वह एक कदम पीछे हट गया, पर तलवार की चोट उसके दाहिने पैर में लगी और उसकी एक टाँग आधी कट गयी। वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्नीसवाँ परिच्छेद

विचार और दण्ड

डाकुओं की गिरफ्तारी करके और केतकी का उद्धार करके मुंगेर लौटते समय कोतवाल साहब को प्रसन्नता के साथ अप्रसन्नता भी विचलित करने लगी। सूचितसिंह का अकेले भयावनी रात में जाना उन्हें खटक रहा था। यह सोचकर कि उनको न रोककर भारी गलती हुई वे बार बार पछता रहे थे। इस तरह सोच विचार में पड़े वे जा रहे थे कि रात का तीसरा पहर बीत गया। धीरे धीरे उषा की आभा से दिशाएँ आलोकित हो उठीं। पेड़ों से पक्षियों के कलरव सुनाई पड़ने लगे। शीतल दक्षिण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वायु के प्रवाहित होने से उनकी क्लान्ति बहुत अंशों में दूर हो रही थी पर मानसिक थकावट घटने के बदले और भी बढ़ गयी।

देखते देखते सूर्य की किरणों से प्राची दिशा आलोकित हो उठी। तालाबों में कमल के फूल विकसित होने लगे। जहाँ तहाँ चरवाहे गायों और अन्य पशुओं के झुंड लिये बिरहा गाते-गाते चरागाह को जाने लगे। इस तरह एक पहर दिन चढ़ते चढ़ते कोतवाल साहब मुंगेर नगर में पहुँचे। घर पहुँचते ही कोतवाल साहब ने पं० शिवनारायण त्रिवेदी के मकान पर केतकी को भेज दिया और पण्डितजी से उसके लिए खाने पीने, आराम से रहने आदि का इन्तजाम करने का अनुरोध किया। अधरमसिंह, और अन्यान्य अपराधी हवालात में रखे गये। केतकी के उद्धार का समाचार नवाब साहब के दरबार में पहुँचा दिया गया।

नवाब साहब के कानों में यह खबर पहुँचते ही उनको अपार आनन्द हुआ। उन्होंने अपराह्न में ही अपने सब सभासदों को बुलाया। कोतवाल साहब भी बुलाये गये। नवाब साहब की आज्ञा पाकर यथा समय सभी दरबारी सभाभवनमें उपस्थित हुए। कोतवाल साहब ने नम्रता और शिष्टता के साथ केतकी के उद्धार का सारा हाल कह सुनाया। सुनते ही नवाब साहब ने कहा,—'मेरे माननीय सरदारो, आपलोगों को मैं यह बतला देना चाहता हूँ कि मेरी आखों में सब प्रजाजन चाहे वे किसी जाति या फिर्के के क्यों न हों समान हैं। एक ही खुदा ने सबको बनाया है। उसकी मर्जी से सभी बातें होती हैं। उसकी इच्छा के बिना एक पत्ती भी नहीं हिल सकती। किसी की बहू बेटी पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी तरह की ज्यादती मुझसे हर्गिज बर्दाश्त नहीं हो सकती। वह लड़की मेरे लिए अपनी ही लड़की जैसी प्यारी है। खुदा को धन्यवाद है कि इतने दिनों के बाद वह सकुशल लौट कर आ गयी। अब मैं इन बदमाशों को सजा देता हूँ। आप लोगों में से किसी को किसी प्रकार की आपत्ति हो तो बगैर रोकटोक के कहियेगा। मैं चाहता हूँ, और हुक्म देता हूँ कि अधरमसिंह की जमींदारी छीन ली जाय और उनको नंगे सिर गधे पर चढ़ाकर नगर की सड़कों पर टहलाकर बेंत लगाये जायँ। जितने डाकू पकड़े गये हैं उनके दाहिने हाथ कटवाकर सात सात वर्ष की सजा दी जाय। यह कहकर नवाब साहब चुप हो गये। सभी सभासदों ने एक स्वर से नवाब साहब का समर्थन किया।

नवाब साहब के आदेश से एक सिपाही ने एक धोबी को गधे के साथ बुला लाया। अधरमसिंह नंगे सिर उस गधे पर चढ़ाये गये। रक्षकों के साथ अधरमसिंह शहर की सड़कों में घुमाये गये और फिर बेंत से पीटे गये। बेंतों के आघात से उनकी पीठ से रक्त बहने लगा, मुख से फेन निकलने लगा और आँखें ज्योति हीन होने लगीं। उनका सारा शरीर अवसन्न हो गया। उनकी जमींदारी जब्त कर ली गयी और वह बाबू सूचित सिंह के नाम लिख दी गयी। अन्य डाकू जो अधरमहिं से मिले थे एक एक करके नवाब साहब के सामने बुलाये गये। सब के एक एक हाथ काटे जाने पर वे शहर के जेलखाने में भेज दिये गये।

इन सब कार्रवाइयों के होते होते संध्या हो चली। नूरअली साहब भी दरबार में हाजिर थे। नवाब साहब ने उनसे कहा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं आप लोगों के कामों से बहुत खुश हूँ। अगले महीने से आपको तीन सौ के बदले साढ़े तीन सौ तनख्वाह मिला करेगी। बाबू सूचितसिंह की बहादुरी का बयान नहीं किया जा सकता। मैं उनके काम से बेहद खुश हूँ। मैंने अधरमसिंह की जमींदारी उन्हीं के नाम दर्ज करा दी है यह आपने देख ही लिया है। इसके अलावा इनकी तकख्वाह भी एक सौ से डेढ़ सौ कर दी जाती है।"

इतनी बातें करने के बाद नवाब साहब कुछ देर तक सोचते रहे। फिर उन्होंने अन्य सभासदों को घर जाने का आदेश दिया। सभाभंग होने पर उन्होंने कोतवाल साहब से कहा—'क्या कारण है कि बाबू सूचितसिंह अब तक नहीं आये। क्या वे उस डाकू के पंजे में पड़ गये ? आप अभी दस हथियारबन्द सिपाहियों को जंगल में भेजिये। आज कल रात अँधेरी है। सिपाहियों को साथ बत्ती ले जाने के लिये कहियेगा। इतनी बातें कह कर नवाब साहब दरबार से उठकर अपने अन्तःपुर में चले गये।

नवाब साहब के दरबार से जाते ही नूरअली साहब ने दस सिपाहियों को बाबू सूचितसिंह की तलाश में भेज दिया। इसके बाद वे अपने मकान पर गये। उनकी बीबी चिन्तितावस्था में उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। अपने प्रियतम को सकुशल घर आते देख कर उसके आनन्द का पारावार न रहा। पति की यथोचित सेवा और प्रेम प्रदर्शन के बाद उसने कहा, "प्यारे, तुम्हारे चले जाने के बाद मैं इतनी घबड़ा गयी कि मुझे रात को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नींद नहीं आयी। डाकुओं और बदमाशों की गिरफ्तारी में कितनी कठिनाइयों और विपत्तियों का सामना करना पड़ता है यह मैं अच्छी भाँति जानती हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसे कामों में कभी-कभी जान भी खतरे में पड़ जाती है। प्यारे, तुम्हारी यह नौकरी मुझे पसन्द नहीं। तुम बराबर बदमाशों को पकड़ने के फेर में पड़े रहते हो। जब जब तुम ऐसे कामों में बाहर जाते हो तब तब मेरा प्राण भय और शङ्का से उद्विग्न हो जाता है। उठना, बैठना, खाना-पीना कोई भी काम अच्छा नहीं लगता। इसलिए मैं अब चाहती हूँ कि तुम ऐसी नौकरी से नाता तोड़ कर कोई दूसरा काम करो।"

अपनी बीबी की ये बातें सुनकर नूरअली थोड़ी देर तक चुप रहे। पर पत्नी को ढाढस देना जरूरी समझ कर कहने लगे—"प्यारी, क्या समझती हो कि कोई दूसरी नौकरी चाहते ही मिल जायगी? कार-बार में लगाने के लिए मेरे पास रुपये कहाँ हैं? जो कुछ महीने में मिलता है सब खर्च हो जाता है। आज-कल मैं कुछ भी बचा न सका। प्यारी, धीरज रखो, अब जल्द ही मेरी तरक्की होनेवाली है। तरक्की होते ही आमदनी बढ़ जायगी। उस हालत में मुझे खुद कहीं जाने की जरूरत न पड़ेगी। मेरे मातहत में काम करनेवाले दौड़ धूप कर ये सब काम करते रहेंगे।"

पति की ये बातें सुनकर पत्नी को अपार आनन्द हुआ। उसने आनन्द विह्वल होकर पूछा—"क्या डाकुओं को सजा दे दी गयी? बाबू सूचितसिंह लौटकर आ गये?" कोतवाल साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने कहा—"हाँ, अधरमसिंह के साथ सभी डाकूओं को कड़ी सजाएँ दी गयी हैं। बाबू सूचितसिंह डाकुओं के सर्दार को पकड़ने के लिए जंगल में गये हुए हैं। उनके पीछे यहाँ से और दस आदमी भेजे गयें हैं। कल तक उनकी भी खबर मिल जायगी। उम्मीद है कि वे कल यहाँ लौट आवेंगे।"

विविध प्रकार के वार्तालाप से आधीरात बीत चली। रात्रि के भोजन के बाद कोतवाल साहब की पत्नी पति के साथ प्रेमरस पान करती हुई सुख की नींद से विभोर हो गयी। दोनों नींद में निमग्न हो गये। एक ही नोंद में मुर्गों की आवाज कान में पहुँचने पर नूरअली की नींद टूटी। खिड़कियों से विमल चाँदनी की स्वच्छ किरणों से कमरा प्रकाशित हो रहा था। आलोक की रेखाएँ पत्नी के मुखमण्डल पर पड़ रही थीं। कोमल गोल कपोलों की शोभा वर्णन से बाहर थीं। उन्नत पुष्ट उरोज पुष्ट सुगठित और मुग्धकर थे। दोनों ओठ बिम्बाफल को मात कर रहे थे। अंग-अंग पर सौन्दर्य राशि फैली हुई थी। नीचे दृष्टि गयी तो नीवी ग्रन्थि ढीली पड़ी हुई दीख पड़ी। दोनों भुजाएँ इधर-उधर लता की भाँति शिथिल पड़ी हुई थीं। श्वेत चाँदनी और नीली साड़ी के मिले रंग से मोहिनी आभा निकल रही थी। सौन्दर्य-प्रभा के अमृत-रस को पान करते-करते नूरअली साहब की आँखों में टकटकी लग गयी। प्रेयसी की आजानु-विस्तृत वेणी को हाथ में लेकर वे इधर-उधर हिलाने लगे। फिर उसके मस्तक को अपनी जाँघों के ऊपर रखकर सुकोमल कपोलों पर उँगलियों का सञ्चालन करने लगे। मुहुर्मुहु चुम्बन करने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोतवाल साहब की पत्नी की नींद टूटी। आखें खुलते ही उसने अपने को प्रियतम की गोद में पाया और फिर वह अपने भाग्य को सराहने लगी।

सूर्य की लालिमा खिड़कियों से प्रवेश करते ही कोतवाल साहब शय्या त्याग कर उठे और ज्योंही बाहर के बैठकखाने में गये कि भृत्य ने कहा कि बाहर दो बंगाली युवक आपकी इन्तजारी कर रहे हैं। कोतवाल साहब ने उनको तुरत बुलवाया। जब वे दोनों सामने आकर सलाम करके खड़े हुए तो कोतवाल साहब ने पूछा—"आप लोग कहाँ से आ रहे हैं, किस मतलब से आये हैं?" दोनों युवकों में से एक ने कहा—"हम बड़ी विपत्ति में पड़कर आपके पास आये हैं। पिछले आषाढ़ के महीने में शाहाबाद के इलाके में हमलोगों की नाव डाकुओं ने लूट ली और हमारा सर्वस्व लूट लिया। पीता जी और अन्य चार आरोही मारे गये और मेरी बहिन को लेकर डाकू कहाँ गये इसका कुछ पता नहीं चला। बाद को हम लोगों ने गाजीपुर के नवाब साहब के पास इसकी इत्तिला दी। फिर सुनने में आया कि गाजीपुर और मुँगेर के दोनों जगहों के नवाब मेरी बहिन का पता लगवा रहे हैं। हमलोग यह दरियाफ्त करने आये हैं कि इस काम में अब तक आप लोगों को क्या सफलता मिली है।"

कोतवाल साहब ने प्रसन्नता की मुस्कुराहट से कहा—"आप लोग घबड़ाइये नहीं, लड़की डाकुओं के पंजों से बचायी गयी है। वह भले आदमी के मकान पर आराम के साथ रखी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गयी है। आप लोग फिर दोपहर के लग-भग मुझ से मुलाकात कीजियेगा।" यह कह कर कोतवाल साहब प्रातःकृत्यों से निपटने के लिये वहाँ से उठे। निरंजन और सुखमय वहाँ से उठकर गंगा तट की ओर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीसवाँ परिच्छेद

बाबा राघवदास

गंगा नदी के किनारे पहुँचते ही निरञ्जन और सुखमय प्रातःकालीन शौचादि से निवृत्त होकर सन्ध्या वन्दनादि करने बैठे। सन्ध्या से निवृत्त होने पर जब वे वहाँ से चलने की तैयारी करने लगे तब वहाँ एक नाव आकर खड़ी हो गयी। उस नाव से एक साधु और एक युवक उतरे। निरञ्जन की दृष्टि युवक पर पड़ी तो उसका मुखमण्डल परिचित-सा जान पड़ा, पर वे अच्छी तरह पहचान न सके। युवक ने भी निरञ्जन की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर देखा और देखते ही गद्-गद् चित्त से उनके पैरों पर जा गिरा। उनकी आँखों से आँसूओं की धारा वह निकली। आगन्तुक युवक ने पूछा, "भाई, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो? मैं दुर्गाचरण हूँ। नदिया से आ रहा हूँ।" दुर्गाचरण को देखकर निरञ्जन की जो दशा हुई वह वर्णनातीत है। राम और भरत का मिलन का दृश्य भी उस मिलन के सामने तुच्छ था। सुखमय भी निरञ्जन को पहचान गये और दोनों ने एक दूसरे को आलिंगन किया। तव तक सुखमय ने साधु को गौर से देखा। आनन्द विह्वल होकर कहने लगा—"अरे, क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ? महात्मन्, आपको तो मैंने मुंशीजी के गाँव पर देखा था। आप यहाँ कैसे आ गये?" साधु ने कहा—"बच्चा, मैं तो बरावर देश-देशान्तरों में घूमा करता हूँ। मेरा यहाँ आना कोई आश्चर्य की वात नहीं।"

इस प्रकार सुखमय, निरंजन, दुर्गाचरण, साधु एकत्रित हुए। निरञ्जन ने सबको धैर्यधारण कराकर गंगा तट के विशाल पीपल के पेड़ के नीचे सवको बैठने के लिये कम्बल बिछा दिया। फिर सब में इस प्रकार का वार्तालाप होने लगा। दुर्गाचरण ने कहा—"भाई प्रिय निरञ्जन, मुकुन्ददास को मैंने तुम्हारे यहाँ भेजा, पर जव वहुत दिन बीतने पर भी वह लौटकर न गया तो मेरा धैर्य छूट गया। मेरा चित्त इतना खिन्न हो गया कि आत्म हत्या की तैयारी करने लगा। एक दिन आत्महत्या का दृढ़ निश्चय कर मैं श्मशान में अकेला पहुँचा। रात घोर अँधियारी थी। मैं उस घोर अँधेरी रात में विष की पुड़िया निगलना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहता था कि इन्हीं साधु महाराज ने मेरा हाथ पकड़ लिया। उस समय उस जनशून्य स्थान में एका-एक इस प्रकार अपने पास जटाधारी मनुष्य को देखकर मुझे आश्चर्य तो अवश्य हुआ पर भय का लेश भी न मालूम हुआ।" इतना कहकर दुर्गा-चरण कुछ अन्यमनस्क-सा होकर चुप हो गये।

सभी श्रोता मंत्र मुग्ध की तरह टक-टकी लगाये दुर्गाचरण की बातें सुन रहे थे और ज्यों-ज्यों सुनते जाते थे त्यों-त्यों उनकी उत्सुकता और भी बढ़ती जाती थी। दुर्गाचरण को चुप होते देख कर निरञ्जन ने कहा—"कहो दोस्त, तुम्हारी बातों से मेरा आश्चर्य और भी बढ़ता जा रहा है। फिर क्या हुआ, वह साधु कौन थे, कैसे उन्होंने तुमको देखा और श्मशान में उतनी रात को वे किस काम से गये थे?" दुर्गाचरण ने फिर कहना शुरू किया—"प्रिय मित्र, मैं संक्षेप में सारा इतिहास सुनाता हूँ। साधु का नाम बाबा राघवदास है, और वे तुम्हारे सामने विराजमान हैं। इनसे मेरी जान पहचान पहले की थी। जब मैं सुखमय आदि के समाचार के बिना बहुत ज्यादा घबड़ा गया था तभी ये मेरे दरवाजे पर गये थे। इनके और फिर मुकुन्ददास को भी लौटने में देर होने लगी तो मैं बहुत घबड़ाया और आत्महत्या का निश्चय करके श्मशान तक पहुँच गया। फिर वहाँ भी इन्हीं बाबा राघवदास ने मुझे महापाप से बचा लिया। मैं आजीवन इन महात्मा के उपकारों को भूल नहीं सकता।"

दुर्गाचरण की बातें सुन चुकने के बाद सुखमय की आँखें विगत विपत्तियों की स्मृति से अश्रुपूर्ण हो गयीं और वे किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह अपने को सम्हाल कर कहने लगे—"प्रिय दुर्गाचरण, नाव की दुर्घटना का हाल तुम सब सुन चुके होगे इसलिए अब उन बातों को दुहराने की मैं कोई जरूरत नहीं समझता, पर—"

बीच ही में रोक कर दुर्गाचरण ने कहा—"सुन चुका हूँ अवश्य, मुझे इन्हीं महात्मा से ये बातें मालूम हुई हैं। इन्होंने मुझसे यह भी बतलाया था कि तुम शाहाबाद के जिले में मुंशी शिवनारायणलाल नामक एक सज्जन के यहाँ ठहरे थे और वहाँ से स्वस्थ होने के बाद काशी के लिए रवाना हुए। इन्होंने यह भी कहा कि मुँगेर और गाजीपुर दोनों जगहों के नवाबों की ओर से अनुसन्धान की कार्रवाई जोरों से हो रही है। पर अभी केतकी का पता नहीं चला है। भाई, अब यह जानने के लिए मेरा चित्त अत्यन्त उत्सुक है कि केतकी अबतक मिली या नहीं।"

सुखमय, कुछ बोलना ही चाहते थे कि निरञ्जन बोल उठे—"भाई, जगदीश्वर की कृपा से केतकी को घोर सङ्कटों से छुटकारा मिल गया है, परन्तु अभी हमलोगों से उसकी मुलाकात नहीं हुई है। कल हमलोग सभी उससे मिलेंगे और फिर उसके विवाह का इन्तजाम किया जायगा।"

विवाह का नाम सुनते ही दुर्गाचरण के हृदय में धड़कन उत्पन्न हो गयी। उन्होंने दिल में सोचा, मैं वर्षों से जिसके प्रेम का भिखारी रहा हूँ, जिसके समर्पण का स्वर्गीय पण्डितजी ने वादा भी किया था, वह क्या मेरे इस मरुभूमि सदृश सूखे जीवन को सरस न बनावेगी? क्या सुखमय को अपने पिता के वचन का खयाल नहीं है? क्या मेरा परममित्र होते हुए भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरञ्जन ने अब तक सुखमय को इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है।

दुर्गाचरण के इस विमर्ष भाव को समझ कर निरञ्जन ने कहा—"क्यों मित्र, तुम उदास क्यों हो गये ? तुम्हारा मुख-मण्डल इतना फीका क्यों पड़ गया ? इस तरह चिन्ताकुल होने से क्या लाभ ? भाई सुखमय उठो, अब हम सब किसी एक स्थान पर चलें और भोजन का बन्दोबस्त किया जाय। चलो जल्दी इस स्थान से चलें।"

इतनी बातचीत होने के बाद बाबा राघवदास, दुर्गाचरण, सुखमय और निरञ्जन गंगातट पर आम के बगीचे का रास्ता पकड़ कर अस्थायी रूप से ठहरने का स्थान ठीक करने के लिए शहर की तरफ चले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक्कीसवाँ परिच्छेद

प्राण-रक्षा

अमानत के बेहोश होकर जमीन पर गिरते ही जैलाल दौड़ कर बीस कदम की दूरी पर उस पेड़ के नीचे गया जहाँ बाबू सूचितसिंह मूर्च्छितावस्था में पड़े थे। जंगल में रहते-रहते उसे बहुत सी जड़ी-बूटियों का ज्ञान था। वह तुरत कहीं से कुछ हरी छोटी-छोटी पत्तियाँ लाया और उनका रस निचोड़ कर बाबू सूचितसिंह के कन्धे पर रगड़ने लगा। उसके औषधीय प्रयोग और स्वास्थ्यदायक शीतल वायु के प्रवाह से धीरे-धीरे सूचितसिंह सचेत हो उठे। चैतन्य होते ही उनकी आँखें खुलीं और वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चकित होकर एकटक जैलाल की तरफ देखने लगे। बाबू साहब को विस्मितावस्था में देखकर जैलाल ने सान्त्वता देते हुए कहा— "बाबू साहब, आप घबड़ाइये नहीं, जिस डाकू ने आपको यह घातक आक्रमण किया था, उसको मैंने मार कर जमीन पर गिरा दिया है।"

सूचितसिंह—गिरा दिया है ? क्या उसे ज्यादा चोट आयी है ? मैं तो उसको गिरफ्तार करने के लिए आया था, जान से मारने के लिए नहीं। मृत्यु तो क्षणिक दुःख है। ऐसे नराधमों को ऐसी सजाएँ मिलनी चाहियें जिनसे ये वर्षों तक घुलघुल कर मरें। इन लोगों की आकस्मिक मृत्यु ठीक नहीं है।

हरदेव—बाबू साहब, आपकी बात मेरी समझ नहीं में आयी। आकस्मिक मृत्यु का मतलब मैं न समझ सका।

सूचित—आकस्मिक का मतलब अचानक है। जो लोग अचानक थोड़ी देर में मर जाते हैं उनकी मृत्यु को आकस्मिक कह सकते हैं।

जैलाल—जी हाँ, मैं समझ गया, बहुत दिनों तक कष्ट सहते-सहते मरना ही ऐसे पापियों के पाप का परिणाम होना चाहिये।

सूचित—अच्छा जैलाल, अमानत को कैसी चोट आयी है।

जैलाल—उसका एक पैर कट गया है। बहुत ज्यादा खर्च करने से सम्भवतः वह ठीक हो सकता है।

सूचित—मैं चाहता हूँ कि उसका पैर अच्छा हो जाय और उसको वर्षों तक सजाएँ भुगतनी पड़ें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैलाल—हाँ, बाबू साहब, ऐसा ही होना चाहिये।

सूचित—मैं तो धीरे-धीरे चल सकता हूँ, क्योंकि मेरे कन्धे में ही कुछ-कुछ पीड़ा है, पर अमानत को ले चलने का क्या उपाय होगा?

जैलाल—कुछ उपाय तो करना ही पड़ेगा, फिर भी बहुत जल्द यह उपाय हो जाना चाहिये, क्योंकि बादल मँड़राते चले आ रहे हैं और पश्चिम की तरफ धुँधला-सा दिखलाई पड़ रहा है, कहीं आँधी न आ जाय।

सूचित—हाँ, हरदेव इस समय मेरी बुद्धि शिथिल पड़ गयी है, तुम अमानत को भी यहीं उठा लाओ तो अच्छा हो।

यह सुनते ही हरदेव तुरत उठा और अमानत के पास पहुँचा। अमानत की बेहोशी तब तक दूर हो गयी थी और एक-एक कर के वह सब घटनाओं को याद कर रहा था। अपने सामने जैलाल को देखकर उसने रोषभरी दृष्टि से कहा—"धोखेबाज, तूने मेरे साथ जैसी दगाबाजी की उसकी सजा तुझे खुदा जरूर देगा। पैर टूटने से इस समय मैं असहाय हो गया हूँ, नहीं तो मैं तुझे अभी दिखलाता कि मेरी भुजाओं में अब भी कितना बल है। बतला, अब तू यहाँ मेरे सामने किस मतलब से आया है। क्या तू अब मुझे इस हालत में देखकर जान से मारने आया है?

जैलाल—नहीं नहीं, भाई साहब, मैं तुमको जान से मारने नहीं आया हूँ और न तो पहले ही आपको इस हालत में पहुँचाने का मेरा इरादा था। पर, बाबू सूचितसिंह को मैं पहचान गया। कई पुश्त से हम लोग उनके अन्न से जीते आये हैं। अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हीं बतलाओ मैं उनकी जान खतरे में देखकर और क्या कर सकता था ? फिर भी, जहाँ तक हो सका, मैंने तुम्हारे प्राण बचाने की कोशिश की और ईश्वरेच्छा से तुम बच भी गये, टांग टूटी है तो मुझे आशा है अच्छी तरह से इलाज होने से ठीक हो जायगी। भाई, अब चलो, बाकी जिन्दगी ईश्वर भजन में बितावें। हम लोगों ने पिछले सात वर्षों में कितनी हत्याएँ कीं, कितने बच्चों को अनाथ बनाये, कितनी सौभाग्यवती औरतों को बिधवाएँ बनायीं, इसका ठिकाना नहीं है। चलो मैं अभी तुमको बाबू सूचितसिंह के यहाँ ले चलता हूँ।

अमानत—अच्छा भाई, ले चलो। खुदा की जो मर्जी थी वही हुआ। अभी और भी न जाने क्या-क्या होनेवाला है।

इतनी बातचीत होने के बाद जैलाल ने अमानत को धीरे से कन्धे पर उठा लिया और उस पेड़ के नीचे पहुँचा, जहाँ बाबू सूचितसिंह चिन्तामग्न अवस्था में बैठे थे।

बाबू साहब ने कहा—"देखो जैलाल, मैं किसी तरह पैदल चल भी सकता हूँ, पर अमानत की हालत खतरनाक है। इसके लिए एक सवारी का बन्दोवस्त होना जरूरी है। तब तक हम लोग यहीं बैठे हैं। तुम अकेले मेरी तरफ से जाओ और कोतवाल नूरअली साहब से सब हाल कहकर दो सवारियों का बन्दोबस्त कराओ। क्योंकि पैदल चलने की ताकत हम दोनों में नहीं है।

बाबू साहब के आज्ञानुसार जैलाल मुँगेर की तरफ रवाना हुआ। उसे रास्ते में कुछ दूर जाने पर मुँगेर से आनेवाले सशस्त्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिपाहियों से मुलाकात हुई। उन लोगों से उसने सब समाचार आद्यन्त कह सुनाया। सिपाहियों को बाबू सूचितसिंह की सफलता पर प्रसन्नता और उनके घायल होने पर शोक हुआ। उन लोगों ने जैलाल से कहा—तुम जाओ सवारियों का बन्दोबस्त करके कहारों के साथ आओ। जब हम लोग इतनी दूर आ पहुँचे तो बीच से लौटना ठीक नहीं मालूम होता। डाकुओं के अड्डे तक जाकर हम लोग बाबू सूचितसिंह के साथ लौटेंगे।

जैलाल के चले जाने के बाद सिपाहियों का गरोह आपस में बात-चीत करते-करते धीरे-धीरे डाकुओं के अड्डे तक पहुँचा। वहाँ उन लोगों ने बाबू सूचितसिंह और अमानत को घने पेड़ के नीचे लेटे हुए देखा।

सूचितसिंह सब सिपाहियों को पहचानते थे और वे भी उनको पहचानते थे। आपस के कुशल समाचार पूछने के बाद सभी आस-पास बैठ कर बाबू सूचितसिंह से डाकुओं को पकड़ने में होनेवाली दिक्कतों का हाल सुनाने लगे।

बात की बात में एक प्रहर से ज्यादा रात बीत गयी। तब तक जैलाल दो सवारियों और १२ कहारों के साथ वहाँ आ पहुँचा। जैलाल को इतना शीघ्र आते देखकर सबको आश्चर्य हुआ। अन्त में बाबू सूचितसिंह और अमानत को सवारियों पर सवार करा कर दसों सिपाही मुँगेर नगर की तरफ लौट पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपसंहार

राघवदास, सुखमय, निरंजन और दुर्गाचरण ने सम्मिलत रूप से नवाब साहब के पास केतकी के सम्बन्ध में दरख्वास्त पेश की। नवाब साहब अपनी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने प्रार्थियों को दरबार में बुलाया और सब दरबारियों के सामने उनका यथोचित आदर सत्कार किया। आपने उस समय यह भी कहा कि हम हिन्दुस्तान के रहनेवाले हिन्दू और मुसलमान आपस में मेल से रहें। कोई किसी पर अत्याचार न करे। दुष्ट और बदमाश हर हालत में दण्डनीय हैं। अनन्तर आपने कोतवाल साहब से प्रार्थियों के कार्य का जिक्र किया। कोतवाल साहब पहले से ही तैयार थे और तुरत पं० शिव-नारायण तिवारी के घर उन आगन्तुक प्रार्थियों को भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राघवदास अपने साथियों के साथ तिवारीजी के मकान पर गये। वहाँ केतकी अपने भाई के पैरों पर गिर पड़ी और राघवदास की चरण-रेणु को भी अपने मस्तक पर लगाया। निरंजन और दुर्गाचरण को भी उसने प्रणाम किया। स्नान भोजनादि के उपरान्त जब सभी निश्चिन्त हुए तो राघवदासजी ने तिवारीजी को एकान्त अलग कमरे में बुलाकर केतकी के विवाह के सम्बन्ध में लग्न स्थिर करने का अनुरोध किया। तिवारीजी ने उत्तम लग्न शोधकर बतलाया और राघवदास ने अपनी सञ्चित सम्पत्ति खर्च करके यथासमय दुर्गाचरण के साथ केतकी का विवाह कर दिया। दुर्गाचरण ने काफी योग्यता प्राप्त की थी। राघवदास के कहने से बा० यदुनन्दनसिंह की संस्कृत पाठशाला में उन्हें अध्यापक का काम मिला। दम्पती सुख से गार्हस्थ्य जीवन यापन करने लगे।

इसके बाद राघवदास अपने स्थान को अयोध्या चले गये और सुखमय निरञ्जन के साथ काशी लौट गये।

जब बाबू सूचितसिंह और अमानत नगर में लाये गये तो सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। लोगों की बड़ी भीड़ दर्शन के लिए एकत्रित हो गयी और अमानत का मामला पेश हुआ। अमानत ने सबके सामने अपना अपराध स्वीकार किया और कहने लगा—मैंने आखिरी जिन्दगी भले आदमी की तरह बिताने का इरादा कर लिया है। और मैं चाहता हूँ कि मेरे सभी साथी जेल से छोड़ दिये जायँ।

अमानत की इस बात पर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और नवाब साहब ने कहा कि मैं कड़ी-से-कड़ी सजा देता हूँ पर भलमनसाहत का विश्वास होने पर लोगों को सजा से म्याद के अन्दर भी छोड़ देता हूँ। तुम बतलाओ आगे किस तरह जिन्दगी बसर करना चाहते हो। अमानत ने कहा—पहले मैं डाके, लूट से धन कमाता था, अब मजदूरी करके मिहनत के काम से धन कमाऊँगा। पहले मैं लोगों की जान की परवा न करता था। पर अब दुखियों, गरीबों और अनाथों की सेवा करूँगा।

नवाब साहब ने तुरन्त एक आदमी को अयोध्या भेजा और राघवदास को बुलाया। एक हफ्ते के बाद राघवदास आये। राघव दास के आते ही नवाब साहब ने कहा—मैं एक ऐसा आश्रम बनवाना चाहता हूँ जिसमें सज्जनों और परोपकारियों की देख-रेख में अनाथ, दुखी, विधवाएँ आदि आराम से रह सकें। आपको मैं इस आश्रम का, प्रबन्धक या सञ्चालक बनाना चाहता हूँ, और हाल की सजा पाने वालों को भी छोड़ देता हूँ। इन लोगों ने सदाचार से अन्तिम जीवन बिताने का मुझे विश्वास दिलाया है। इनको आप अपने आश्रम में कार्यकर्ता नियुक्त कीजिये।

राघवदास को नवाब साहब के इस विचार पर बड़ी खुशी हुई। तदनन्तर एक बड़े मैदान में शहर से एक मील की दूरी पर आश्रम निर्माण का कार्य्य आरम्भ हुआ। तब तक बाबू सूचित-सिंह स्वस्थ हो गये और पदोन्नति का सुख उपभोग करने लगे। आप के ही उद्योग से दूर-दूर के चतुर कारीगर बुलाये गये। कुछ महीनों के बाद बहुत ही सुन्दर आश्रम-भवन तैयार हो गया। आश्रम में दो विभाग मुख्य रखे गये। पहले भाग में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरुषों के रहने का प्रबन्ध था और दूसरे में स्त्रियों के लिए इन्तजाम था। पुरुष और स्त्री विभाग दोनों के सञ्चालक राघव-दास हुए। महिला विभाग का सर्वोपरि भार मुरली पर रखा गया। मुरली आदर्श भारतीय सती रमणी की तरह जीवन बिताने लगी।

आश्रम के चारो तरफ ऊँची चहारदीवारी थी। चहार-दीवारी के उक्त भवन के चारो तरफ विविध फूलों और तरह तरह के फलों का बगीचा था। उत्तर तरफ की चहारदीवारी में बहुत ऊँचा फाटक था—फाटक पर मोटे-मोटे अक्षरों में यह लिखा हुआ था—

"अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा सश्वच्छान्तिं निगच्छति
कौन्तेय प्रतिजानीहि नमे भक्तः प्रणश्यति ॥"

—गी० अ० ९–३०–३१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिन्दी जगत में हलचल उपस्थित करनेवाली हमारी पुस्तकें

क्रांतियुग की चिनगारियाँ

क्रान्ति के इस युग में प्रत्येक भारतवासी को यह जानना जरूरी है कि देश के भीतर तथा बाहर क्या हो रहा है तथा भविष्य के लिये हमारा क्या कर्तव्य है ? भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्यान्य बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों के उद्‌गारों को इस पुस्तक में देखकर पाठकगण जान सकेंगे कि भारत के सामने कैसा भयंकर समय उपस्थित है और इस जीवन मरण की समस्या के काल में किस मार्ग पर चलने से उनकी रक्षा हो हो सकती है। जहाँ यह पुस्तक आपको यह बतलाएगी कि आप कैसे रोचांचकारी संकट में फँसे हैं, वहाँ उसका सुगम रास्ता भी बतलावेगी। देश के भीतर तथा बाहर चारो ओर भयंकर आग लगी हुई है, इस मुसीबत में प्राण बचाने का रास्ता जान लेना नितान्त आवश्यक है। उस रास्ते का ज्ञान पाठकों को यही पुस्तक करावेगी। पुस्तक बिलकुल सामयिक और उपयोगी है। इसमें देशी राज्यों का मसला, राजकोट आदि की भी उलझन और देश की विकट समस्याओं आदि यानी अंधकार में प्रकाश उपस्थित करने वाली यह अनूठी पुस्तक है। मूल्य १।।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कन्या-शिक्षा-दर्पण

लेखिका—पार्वतीदेवी

अविवाहिता कन्याओं के लिये योग्य पुस्तकों का हिन्दी में एक प्रकार से अभाव-सा है। इसी से यह पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गयी है कि कुमारी कन्याएं इसे खूब दिलचस्पी के साथ पढ़कर शिक्षा प्राप्त करें। इसमें तन्दुरुस्ती की शिक्षा है, रोगों से बचने का उपाय है। गाँव घरवालों के साथ बर्ताव करने की रीति है, कुमारी, देवियों की अलौकिक जीवनियाँ हैं, चिट्ठी-पत्री लिखने की रीति है, देश और धर्मका ज्ञान है, गुणवती बनने की विधि है, नैतिक-सुधार का उपदेश है, और हैं व्यायाम, शिक्षाएं तथा जीवन के बहुत से उपयोगी विषय। यदि आप अपनी कन्या का जीवन यशस्वी बनाना चाहें तो यह पुस्तक अवश्य उन्हें पढ़ने को दें। मूल्य ॥)

आजकल का प्रेम

प्रेम का रहस्य क्या है ? प्रेमी-प्रेमिकाओं की मनोवृत्ति कैसी होती है ? आजकल प्रेम का आदर्श किस तरह गिरता जा रहा है। समय के परिवर्तन से इन दिनों प्रेम के उपयोग में कैसी त्रुटियाँ दिखलाई पड़ रही हैं ? किस तरह आजकल 'प्रेम' का स्थान 'काम' ले रहा है ? प्रेम-संसार का चक्र किस भाँति घूम रहा है ? ये सब बातें इस पुस्तक में उचित रीति से दिखला दी गई हैं। वर्तमान काल के प्रेम-रहस्य की जानकारी प्राप्त करके लाभ उठाना प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का कर्तव्य है। मूल्य १॥), सजिल्द २) डाक खर्च अलग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलन मन्दिर

स्त्रियोपयोगी यह सचित्र सामाजिक उपन्यास है। इस में यह दिखलाया गया है कि भारत की देवियाँ संकटावस्था में किस प्रकार नीचों के चंगुल से छुटकर अपने सतीत्व की रक्षा करती हैं, पारस्परिक डाह के कारण कैसे गृहस्थी चौपट हो जाती है और मेल से जीवन सुखमय होता है, गरीबी अमीरी का किस प्रकार का फेरा लगा करता है तथा जिस सन्तान पर लोग इतनी ममता करते हैं—जिसके लिये घरवालों के साथ अन्याय करते हैं, वह सन्तान क्षणभर में नाता तोड़कर चल देती है। गृहस्थी के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। मूल्य केवल २॥)

दहेज

भूमिका लेखक—श्री श्रीप्रकाश जी

लेखक—देवनारायण द्विवेदी

दहेज—दहेज-प्रथा से सन्तप्त एक बिगड़े हुए रईस के परिवार का हृदय द्रावक सजीव चित्र है।

दहेज—दर्दनाक कहानी का भंडार है।

दहेज—शोकातुर पिता का करुण-कन्दन है—और है सन्तप्त हृदय की प्रलयकारी विकराल ज्वाला।

दहेज—रोमांचकारी फांसी की आश्चर्यजनक घटना का चित्रपट है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दहेज—स्त्री-पुरुषों के फूट-फूट कर रुलाने तथा क्रोध उत्पन्न करने का विलक्षण साधन है।

दहेज—यह दहेज प्रथा बाल-विवाह से भी ज्यादा कठोर और दयनीय है। इसके कारण भारत की अनेक ललनाएँ नित्य प्रति काल के गाल में समाती जा रही हैं। अनेक चित्रों के सहित इसे पढ़िये। इसमें विमाता की कठोरता का ताण्डव नृत्य पढ़ते ही रोमांच हो जाता है। सामाजिक कुरीतियों का बड़ा ही भयानक कारुणिक चित्र खींचा गया है। सचित्र ११ रंग बिरंगे चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २), सजिल्द २।)

पुस्तक मिलने का पता—

शंकरसिंह, हिंदी पुस्तकालय,

सोराकुआँ, बनारस।

Sri Pratap Singh

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारी अन्य पुस्तकें।

१ अरविन्द-मन्दिर में	।।।)
२ धर्म और जतीयता	१)
३ गीता की भूमिका	।।।)
४ हमारी स्वतन्त्रता कैसी हो ?	१)
५ योग साधन	।।।)
६ क्या भारत सभ्य है	।।)
७ नारी-धर्म-शिक्षा	१।)
८ ब्रह्मचर्य की महिमा	१)
९ कुत्सित जीवन	।।।)
१० कांग्रेस का इतिहास (सचित्र)	१)
११ साम्यवाद का बिगुल	१)
१२ फासिज्म	१)
१३ टुवर्ड्स फ्रीडम	१)
१४ लव लेटर्स	३)
सजिल्द	३।।)
१५ स्त्री-संगीत गायन	।=)
१६ आश्रम गीतांजलि	।=)
१७ उर्दू के कवि और उनका काव्य	१।।)
१८ हिन्दी के वर्तमान कवि और उनका काव्य	१।।)
१९ कांग्रेस के गायन	)।।
२० ईश वन्दना	)।
२१ बच्चों के गीत	-)
२२ दिल के तराने	-)
२३ किसान सुख साधन	१)
२४ कोक-शास्त्र [सचित्र]	२)

पुस्तक मिलने का पता—

शंकरसिंह, हिंदी पुस्तकालय,
सोराकुआँ, बनारस।

Sri Pratap Singh Library Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

H83
K11S

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

H83 KUS 12242

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

This book was taken from the library on the date last stamped. A fine of one anna will be charged for each day the book is kept overdue

20-9-55	21-9-55
21-X-55	22-X-55
27. 7. 56	30. 7. 56
22. 5. 57	31. 5. 57
15-3-60	26-3-60
4-9-60	20-8-61
9. XII. 61	10. 12. 61
27.9.69	22.X.69
9/8/81	

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

A book borrowed must be returned within one month of its issue. It may be reissued for fifteen days, if not requisitioned by another member. Members residing outside Srinagar may return books within forty days of their issue.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE